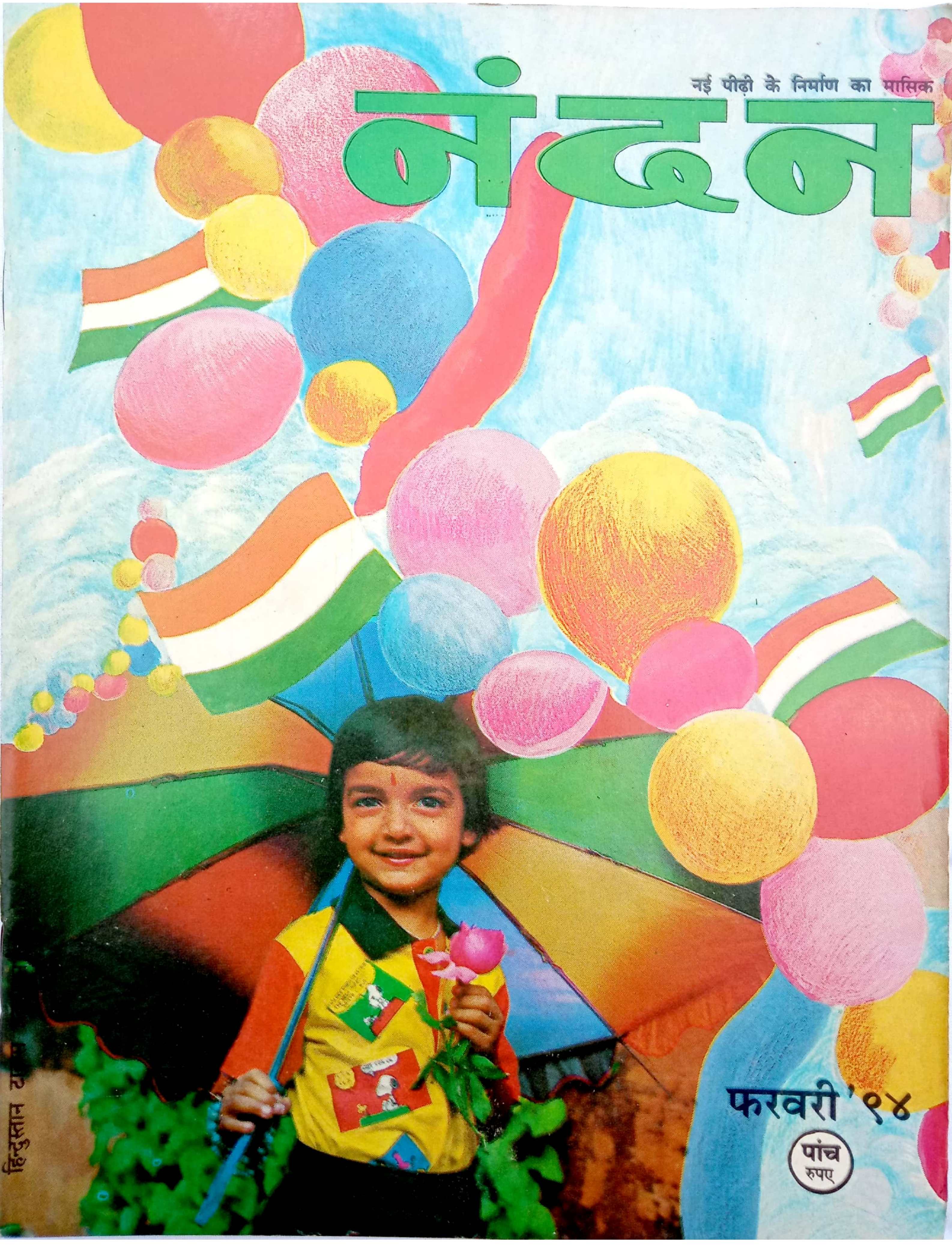

नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
फरवरी '९४
पांच रुपए


डायमण्ड कॉमिक्स
प्रस्तुत करते हैं
पिंकी, उसके दादाजी, पड़ोसी झपटजी का अपना अनूठा संसार है। आपको गुदगुदा देने वाली पिंकी का नया हंगामा
कार्टूनिस्ट प्राण का
पिंकी और तितली
प्राण
पिंकी और तितली
प्राण
श्रीमतीजी पार्टी ड्रैस
प्राण
रमन और साड़ी
प्राण
दाबू और नंदिनी
सर्कस
फौलादी सिंह और ब्लूनिया
लम्बू मोटू और चेहरे पर चेहरा
चाचा भतीजा और नाग का बदला
छोटू लम्बू और गर्गन जोल
डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
मैण्ड्रेक-16
महाबली शाका और शैतानी इलाका
ताऊजी और तांत्रिक लम्बूरा
अग्निपुत्र अभय और शैतान तिकड़ी
जाबाज अग्निपुत्र और अभय की जालिम शैतान तिकड़ी से टक्कर का सनसनीखेज नया कॉमिक
अग्निपुत्र अभय और शैतान तिकड़ी
फ्री! रिवोल्विंग इंडिया
डायमण्ड कामिक्स प्रा.लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002



अंकुर बाल बुक क्लब

सदस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा :–

1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क दस रुपये मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें। सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 4/- रुपये की विशेष छट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम चार पांच पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसन्द न हों तो डायमंड कामिक्स व डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में से चार पांच पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम चार से पांच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।
4. आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा। यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें से 4 या 5 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
5. इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।

सदस्यता कूपन

मुझे अंकुर बाल बुक क्लब का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क दस रुपये मनी आर्डर/डाक टिकट के साथ भेजा जा रहा है। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता हूं/करती हूं।

नाम ....

पिता का नाम ....

पता ....

डाकखाना ....

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी।

विशेष उपहार

31 जनवरी 1994, तक सदस्य बनने पर
'माइकल जैक्सन' का पोस्टर और
एक 1994 की रंगीन डायरी

जल्दी करें स्टाक सीमित है।

डायमण्ड कॉमिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Scanned with CamScanner

आओ बात करें

वेनिस संसार के सुंदर नगरों में गिना जाता है । वहां दो भाई रहते थे—निकोलोपोलो और माफियोपोलो । वे हीरे-जवाहरात का व्यापार करते थे । उन दिनों वेनिस व्यापार में बढ़ा-चढ़ा था । निकोलो और माफियो ने सोचा कि दूर-दूर के देशों में धंधा किया जाए ताकि खूब आमदनी हो ।

चलते-चलाते, रुकते-ठहरते ये दोनों व्यापारी बुखारा नगर तक जा पहुंचे । इतनी दूरी और इतने देश नापने में बरसों लग गए । उन दिनों चीन में तातार सरदार कुबले खां का दबदबा था । राजा-महाराजा वही था । उसके दूत इन भाइयों को पेकिंग ले गए । कुबले खां ने निकोलो और माफियो की अच्छी आवभगत की ।

दोनों भाई दस बरस बाद वेनिस लौटे । वहां के लोग तो मान बैठे थे कि ये राह में ही खत्म हो गए होंगे । निकोलो का बेटा मार्कोपोलो तो जवान हो गया था । उसने पिता और चाचा से यात्रा की कहानियां चाव से सुनीं—घंटों सुनता रहता । उसने तय कर लिया कि वह भी लम्बी यात्रा करेगा । समय बीता—निकोलो और माफियो दुबारा यात्रा पर निकले । इस बार मार्कोपोलो भी उनके साथ था ।

ये लोग आर्मीनिया पहुंचे, फिर ईरान । पर मार्कोपोलो वहां बीमार पड़ गया । ठीक होने में पूरा एक साल लगा । आगे बढ़े, तो राह और भी कठिन थी । घाटियां, नदियां और रेगिस्तान को पार करते हुए साढ़े तीन साल में पेकिंग पहुंचे । मार्कोपोलो तेज था । वहां रहते हुए उसने तातारी सीख ली ।

सत्रह बरस ये पोलो यात्री वहां रहे । कुबले खां उनको बहुत पसंद करता था । वह इन्हें छोड़ने को तैयार न था । लेकिन इन्हें घर की याद सताने लगी । तभी एक घटना घटी । ईरान का बादशाह कुबले खां का भतीजा ही था । उसकी बेगम चल बसी । बेगम ने मरते हुए कहा कि नई शादी मेरे खानदान की राजकुमारी से ही करना । बादशाह के दूत कई देशों में भेजे गए । वे चीन भी आए । उन्होंने कुबले खां की लड़की को पसंद कर लिया ।

अब उलझन यह हुई कि राजकुमारी को ईरान कैसे भेजा जाए ? उसने निकोलो, माफियो और मार्कोपोलो पर यह जिम्मेदारी सौंप दी ।

पंद्रह जहाजों का बेड़ा चला । मार्कोपोलो की देखरेख में वे रवाना हुए । वे लंका पहुंच गए । मौसम खराब हो गया । तेज हवाएं राह रोकने लगीं । पांच महीने इन्हें रुकना पड़ा । लेकिन किसी तरह दो बरस बाद ये ईरान के बंदरगाह पर जा लगे । चांद जैसी राजकुमारी को लेकर ये ईरान के बादशाह के दरबार में पहुंचे । लेकिन वह बादशाह तो मर चुका था । भला अब राजकुमारी का क्या हो ! बादशाह का बेटा अब ईरान की गद्दी पर बैठ चुका था । सलाह हुई कि उसी के साथ राजकुमारी का विवाह कर दिया जाए ।... और ऐसा ही किया गया ।

मार्कोपोलो और निकोलो-माफियो ने काला सागर से जहाज लिया । चौबीस बरस बाद अपने नगर वेनिस में पहुंचे । पर वहां बहुत कुछ बदल गया था । लोगों ने समझा कि ये ठग हैं । झूठ बोल रहे हैं । एक बड़ी दावत की गई । दावत का ठाट-बाट अनोखा था । मार्कोपोलो तथा साथियों ने फटे-पुराने वे ही कपड़े पहन रखे थे जो जहाज से उतरते हुए उनके शरीर पर थे । मेहमानों के सामने उन्होंने कपड़ों की सिलाई उधेड़नी शुरू की । वहां तो हीरे-जवाहरात का ढेर लग गया । फिर उन्होंने अपनी यात्रा के अनुभव भी सुनाए । तब कहीं लोगों को उन पर विश्वास हुआ ।

बाद में मार्कोपोलो ने एक पुस्तक लिखी । दो सौ वर्ष बाद कोलम्बस ने उसे पढ़ा । वह नई दुनिया की खोज में निकला । यूरोप के प्रथम यात्री के रूप में आज भी मार्कोपोलो का नाम अमर है ।

साहस और बेजोड़ जीवट वाले उस मानव को प्रणाम ।

—तुम्हारे भइया

नंदन

फरवरी '९४
वर्ष : ३० अंक : ४

सम्पादक
जयप्रकाश भारती



कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

आवरण : विद्याव्रत एलबम : कुलदीप शर्मा

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील
वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक :
डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार

झोंपड़ी बनी महल

—मालती सहाय



एक गांव में एक परिवार था। उस परिवार में पिता अपने तीन लड़कों के साथ रहता था। एक दिन पिता बीमार पड़ा। उसने तीनों लड़कों को अपने पास बुलाया। बोला—''मेरे प्रिय पुत्रो, मेरे चलने का समय आ गया। मुझे जो विरासत में अपने पिता से मिला, वह मैं तुम लोगों को दे रहा हूं। बस, एक आम का बगीचा है, जिसके सहारे मैं घर चलाता रहा हूं। तुम लोग भी अगर मेहनत और निष्ठा के साथ बगीचे की देखभाल करोगे, तो तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा।''

और सचमुच दूसरी सुबह ही उस परिवार का बूढ़ा पिता चल बसा। उसकी पत्नी बहुत पहले गुजर चुकी थी। तीनों भाई अब उस आम के बगीचे की देखभाल में लग गए।

मौसम आ गया, जब पेड़ों पर आम लटक आए। उनकी मेहनत ऐसी थी कि एक-एक पेड़ में आम इतने लद गए कि तीनों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

इन्हीं दिनों जब रात गहरी हो उठी, तब एक भिखारी बगीचे में पहुंचा। उस रात बगीचे की रखवाली बड़ा भाई कर रहा था। भिखारी ने कहा—''भाई, मुझे बहुत भूख लगी है। तुम मेरी सहायता करोगे?''

बड़े भाई ने बड़े उत्साह के साथ कहा—''क्यों नहीं, आम किसके लिए हैं?'' और उस भिखारी को आदर के साथ बैठाकर उसने खूब आम खिलाए।

दूसरी रात जब मंझला भाई रखवाली कर रहा था, तब पुनः वह भिखारी आ पहुंचा। बोला—''भाई, भूख के कारण पेट में दर्द हो रहा है। तुम मेरी मदद करोगे?''

मंझले ने कहा—''जरूर, आप बैठ जाइए। मैं आपको आम तोड़-तोड़कर देता हूं।'' और उसने भिखारी को बड़े सम्मान के साथ भरपेट आम खिलाए।

तीसरी रात भी ऐसा ही हुआ। छोटा भाई रखवाली कर रहा था। भिखारी उसी तरह आ धमका। उसने कहा—''भाई, भूख से मेरी जान जा रही है। तुम मुझे बचा लोगे?''

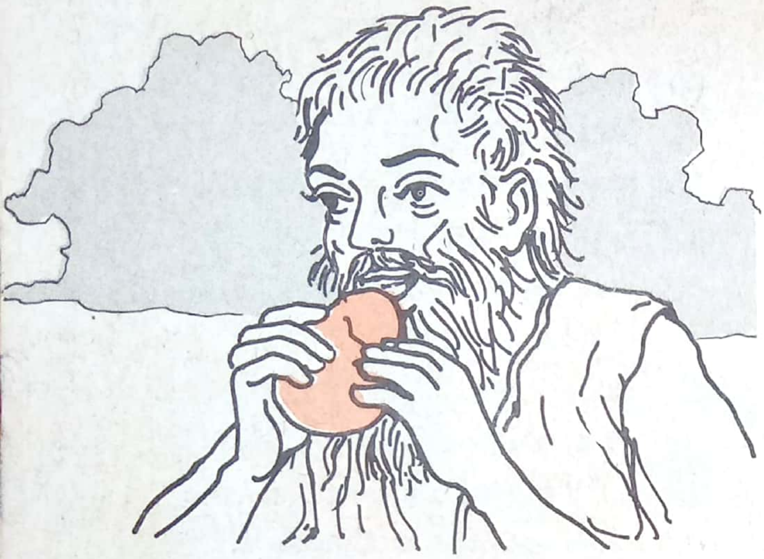
छोटे भाई ने कहा—''इन पेड़ों पर जितना अधिकार मेरा है, उतना ही आपका।'' और उसने भी खूब प्रेम से आम तोड़-तोड़कर उस भिखारी को खिलाए। भिखारी संतुष्ट और तृप्त होकर चला गया।

अगले दिन अभी सूरज निकला ही था कि वह भिखारी उन तीनों के घर आ पहुंचा। भिखारी बोला—''तुम लोग मेरे साथ चलो। तुम तीनों एक-एक कर अपनी इच्छा बतलाना। तुम्हारी इच्छाएं पूरी होंगी।''

तीनों भाइयों को भिखारी की बात पर भरोसा नहीं हुआ। तब भिखारी बोला—''मैं प्रकृति का दूत हूं। जैसा मैं कहता हूं, वैसा तुम लोग करो। तुम्हारी इच्छाएं पूरी होंगी।'' इतना कहते-कहते भिखारी चल पड़ा।

तीनों भाई उसके पीछे-पीछे चले। चलते गए। बहुत दूर रास्ते में एक नदी मिली। भिखारी वहीं रुक गया। उसने बड़े भाई से कहा—''तुम बड़े हो। सबसे पहले तुम बोलो, तुम क्या चाहते हो?''

बड़े भाई ने कुछ सोचा तो था नहीं। उसके मुंह से अनायास निकल पड़ा—''मेरी इच्छा यह है कि मैं इलाके का सबसे बड़ा व्यापारी बन जाऊं।''



नदी तट पर खड़े पेड़ से भिखारी ने एक डाल तोड़ी। उस डाल से नदी के पानी को छूता हुआ बोला—"ऐसा ही हो।"

पल भर में वहां ढेरों रत्न, हीरे-जवाहरात और कीमती चीजें आ गईं। तट पर बड़े-बड़े जहाज लग गए। व्यापारियों का तांता लग गया और बड़ा भाई अपने व्यापार में अत्यंत व्यस्त हो उठा।

भिखारी तब दोनों भाइयों से बोला—"तुम दोनों अब मेरे साथ चलो।"

अभी वे कुछ ही दूर चले थे कि रास्ते में एक बहुत बड़ा मैदान मिला। मैदान में तरह-तरह के पक्षी थे, एक से एक खूबसूरत । पक्षियों की संख्या भी बहुत थी। एक झुंड यहां, दूसरा झुंड वहां, तो तीसरा, चौथा, पांचवां झुंड इधर-उधर। भिखारी ने मंझले भाई से पूछा—"क्यों भाई, तुम्हें क्या चाहिए?"

मंझले ने कहा—"इस मैदान में जितने पक्षी हैं, उतनी ही गायें मिल जाएं मुझे। मैं उन गायों का मालिक बनना चाहता हूं। और दूध का व्यापार करना चाहता हूं।"

भिखारी ने अपने दाहिने हाथ को आकाश की ओर उठाया। बोला—"ऐसा ही हो।"

फिर तो पलक झपकते दृश्य ही बदल गया। जितने पक्षी थे, उतनी गायें वहां आ गईं। उन गायों के साथ सेवक, और बहुत बड़ी गोशाला। मंझला भाई अपने दूध के व्यापार में लग गया।

भिखारी उसके बाद तुरंत छोटे भाई की पीठ पर हाथ रखते हुए बोला—"बारी अब तुम्हारी है, साथ आओ।"

भिखारी आगे-आगे, पीछे-पीछे छोटा भाई। चलते-चलते सामने एक राजमहल आ पहुंचा। भिखारी ने उससे पूछा—"भाई, तुम अपनी इच्छा बताओ?"

छोटा भाई बोला—"मैं इस राजमहल की राजकुमारी से विवाह करना चाहता हूं।"

भिखारी बोला—"ठीक है। चलो, भीतर राजमहल में।"

भीतर दरबार लगा था। सिंहासन पर राजा बैठा था। साथ में बैठी थी रानी और उससे आगे बैठी थी राजकुमारी। राजकुमारी अत्यंत सुंदर थी। लग रहा था, उस राजकुमारी के चेहरे से निकलता प्रकाश पूरे दरबार को जगमगा रहा है।

भिखारी बेहिचक राजा के पास पहुंचा। बोला—"महाराज! यह नवयुवक आपकी बेटी से विवाह करने आया है।"

राजा इतना सुनते ही आगबबूला हो उठा—"क्या? मेरी बेटी इसके साथ विवाह करेगी। पता है तुमको कि दो-दो राज्यों के राजकुमारों ने मेरी इस सुंदर बेटी से विवाह के लिए प्रस्ताव भेजा है।"

भिखारी मुसकराते हुए बोला—"लेकिन होगा कुछ और।" रुककर वह फिर बोला—"आप राजकुमारी के विवाह की एक शर्त रखें।"

"कैसी शर्त?"—राजा ने पूछा।

—"शर्त यह कि जो भी राजकुमारी से विवाह के लिए इच्छुक हो, वह आम का पेड़ लगाए। जिसके द्वारा रोपे गए आम के पेड़ में दूसरी सुबह फल लटक जाएं, आप उसी के साथ राजकुमारी का विवाह कर दें।"

राजा ने मंत्री से परामर्श किया। कुछ सोचकर राजा ने कहा—"ठीक, मंजूर।"

दूर-दूर तक ऐलान कर दिया गया कि

राजकुमारी से जो विवाह करना चाहता है, उसे आम का एक पेड़ लगाना होगा। दूसरी सुबह उस पेड़ में फल लगने चाहिएं, तभी उसका विवाह राजकुमारी के साथ होगा।"

दूर-दूर से लोग आए। पेड़ लगाने का दिन निश्चित हो गया। सबने अपने हाथों से आम के पेड़ लगाए।

आश्चर्य ! किसी के पेड़ में आम नहीं आए, लेकिन उस छोटे भाई द्वारा रोपे गए पेड़ में आम इतने लटके कि गिनती करना भी कठिन हो गया।

राजा वचन हार चुका था। उसको उस छोटे भाई के साथ अपनी बेटी का विवाह करना पड़ा। वह भीतर से इतना गुस्से में था कि विवाह के सम्पन्न होते ही उसने उसको राजकुमारी सहित अपने राज्य से निकाल दिया।

भिखारी उस छोटे भाई और राजकुमारी के साथ जंगल तक गया और अचानक वहां से गायब हो गया।

पूरे एक साल बाद, भिखारी बड़े भाई के पास पहुंचा। बोला—"क्यों भाई, मुझे एक मोती मिल सकता है ?"

बड़ा भाई बोला—"पैसे निकालो।"



भिखारी ने कहा—"पैसे तो नहीं हैं मेरे पास।"

बड़े भाई ने दुत्कारते हुए कहा—"रास्ता नापो। भीख मांगने वालों के लिए यहां कोई जगह नहीं।"

भिखारी चुपचाप वहां से आगे बढ़ गया। वह अभी कुछ ही दूर निकला था कि न वहां व्यापारी थे, न कोई जहाज था। नदी का पानी पहले की तरह शांत भाव से बह रहा था। रत्न, हीरे-जवाहरात और कीमती सामान गायब हो चुका था।

भिखारी अब पहुंचा मंझले भाई के पास। गोशाला के दरवाजे पर खड़ा हो, हाथ जोड़ते हुए बोला—"भाई, मुझे थोड़ा-सा दूध दो।"

"पैसा निकालो।" —मंझले भाई ने कहा।

सिर नीचा कर भिखारी चला गया। वहां से उसका हटना था कि न गायें थीं वहां, न सेवक थे और न गोशाला। केवल मैदान था और वहां ढेर सारे पक्षी कलरव कर रहे थे।

अंत में, भिखारी पहुंचा उस जंगल में जहां छोटा भाई राजकुमारी के साथ किसी तरह कंद-मूल खाकर झोंपड़ी में रह रहा था। झोंपड़ी के द्वार पर भिखारी ने कहा—"क्यों भाई, आज रात मुझे यहां पनाह मिल सकेगी ?"

छोटा भाई बोला—"क्यों नहीं ? झोंपड़ी केवल मेरी ही नहीं, तुम्हारी भी है।" और वह अपने अतिथि को बड़े आदर के साथ झोंपड़ी में ले गया। राजकुमारी ने अतिथि के सामने कंद-मूल रखते हुए कहा—"मुझे बड़ा दुःख है, आपको हम अच्छा भोजन नहीं दे पाएंगे।"

भिखारी मुसकराया। तुरंत उसी समय कंद-मूल की जगह नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन थाली में भर गए। यहां तक कि देखते-देखते झोंपड़ी राजमहल में बदल गई। चारों ओर नौकर-चाकर। छोटा भाई राजसिंहासन पर था, राजकुमारी भी साथ में थी।

भिखारी बोला—"न भूलना भाई, ईश्वर सदा न्याय करता है।" और वह सहसा गायब हो गया। छोटा भाई और राजकुमारी बहुत दिनों तक सुखपूर्वक जीवन जीते रहे। ●



नेताजी सुभाषचंद्र बोस



साहसी राजकुमारी

—हरिवल्लभ बोहरा 'हरि'

उस समय दिल्ली पर अलाउद्दीन खिलजी का शासन था। वह एक-एक कर हिन्दू राज्यों को अपने अधिकार में करता चला जा रहा था। फिर भला जैसलमेर का साम्राज्य उसकी नजर से कैसे बचता ?

जैसलमेर का सोने से रंग वाले पीले पत्थरों से बना 'गवरहर' दुर्ग दो सौ पचास फीट की ऊंची पहाड़ी पर बसा है। निनानवे अर्द्ध वृत्ताकार बुर्जों वाला यह दुर्ग 'सोनार किला' के नाम से प्रसिद्ध है। एक दिन अलाउद्दीन के सेनापति मलिक काफूर ने जैसलमेर पर आक्रमण कर दिया।

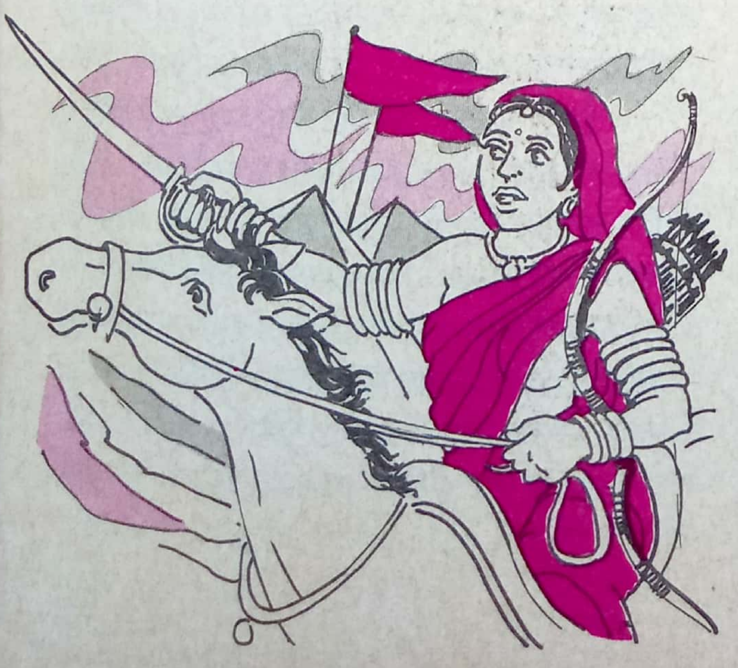
महारावल रत्नसिंह ने कुछ दिन डटकर मुगल सेना से लोहा लिया। परंतु मुट्ठी भर भाटी सैनिक विशाल मुगल सैनिकों से भला कब तक लड़ते ? फिर महारावल और मंत्री ने शत्रु सेना को मार भगाने के उद्देश्य से दुर्ग से बाहर निकलकर मुकाबला करने की सोची। क्योंकि महीनों घेरा डाले पड़े रहने से मुगल सेना हताश हो चुकी थी। वहां की गर्मी और पानी की किल्लत उन्हें रास नहीं आ रही थी।

मगर समस्या यह थी कि यदि सारे योद्धा बाहर आ गए, तो दुर्ग की रखवाली कौन करेगा ?

जल्दी ही इस समस्या का हल हो गया। राजकुमारी रत्ना दे ने जैसलमेर दुर्ग की रक्षा के लिए अपने पिता महारावल को वचन दे दिया। राजा को भी अपनी पुत्री की वीरता पर पूरा भरोसा था। वह दुर्ग की रक्षा का भार रत्ना दे को सौंपकर युद्ध के लिए दुर्ग से बाहर निकल आए। अब रत्ना दे का रूप ही बदल गया। कमर में तलवार बांधे, धनुष-बाण लिए घोड़े पर सवार हर समय दुर्ग में घूमती रहती। मुगल सेना बार-बार दुर्ग पर आक्रमण करती, किंतु राजकुमारी उसे मुंहतोड़ जवाब देती।

एक दिन राजकुमारी ने कुछ मुगल सैनिकों को दुर्ग की पहाड़ी पर चढ़ते देखा। दुर्ग का रक्षक दल, शत्रु सैनिकों को रोकना चाहता था। मगर रत्ना दे ने रक्षक दल को खामोश बैठे रहने को कहा। शत्रु सैनिकों को ऊपर चढ़ता देख, रत्ना दे मुसकरा रही थी। शत्रु सैनिक काफी ऊंचाई पर चढ़ गए। राजकुमारी ने प्राचीर रक्षकों को उन पर पत्थर लुढ़काने के लिए कह दिया। फिर क्या था! इधर भारी भरकम पत्थर मुगल सैनिकों पर पड़े और उधर वे दुर्ग की खाई में लुढ़कने लगे।

फिर भी उनमें से कुछ सैनिक पत्थरों की मार से बच गए। वे दुर्ग के परकोटे पर चढ़ने लगे। यह देख रत्ना दे की त्यौरियां चढ़ गईं। उसने अपने सैनिकों को इशारा किया। उन्होंने इशारा पाते ही परकोटे की नालियों में से गरम-गरम उबलता तेल उंड़ेलना शुरू कर दिया। तेल की मार से मुगल सैनिक भाग खड़े हुए। बचते-बचाते अधजले सैनिक सेनापति के पास पहुंचे। बोले—"सेनापति जी! राजकुमारी रत्ना दे के रहते सोनार किले को फतह करना मुश्किल है।" सैनिकों की हार को देखकर मलिक काफूर पागलों की भांति अपने बाल नोचने लग गया।



किले के सबसे ऊंचे बुर्ज पर खड़ी राजकुमारी रत्ना दे अपने सैनिकों का हौसला बढ़ा रही थी। फिर गरज कर बोली— "मुगल सैनिको, सोनार किले पर अधिकार करना सरल नहीं। जब तक रत्ना की सांस में सांस है, सोनार किला भाटियों के हाथ से नहीं निकल सकता।"

मुगल सैनिकों का मनोबल टूटता जा रहा था। रसद भी समाप्त होने को थी। रत्ना दे दुर्ग की प्राचीर पर से पत्थर, तेल, आग, बारूद, गरम पानी और दहकते अंगारे डालकर मुगल सेना को नष्ट कर रही थी। महारावल रत्नसिंह भी मैदानी युद्ध में मुगल सेना पर भारी पड़ रहे थे।

अंत में मलिक काफूर ने किले के कुछ रक्षकों को लालच देकर अपनी तरफ कर लिया। एक दिन वह कुछ सैनिकों के साथ रात के अंधेरे में किले में प्रवेश कर गया। मगर रत्ना दे की चाक-चौबन्द निगाहों से मलिक काफूर बच नहीं सका। वह किले की भूल-भुलैया में फंस गया। राजकुमारी ने उसे बंदी बनाकर तहखाने में डाल दिया।

अलाउद्दीन ने यह समाचार सुन, महारावल रत्नसिंह को संधि का प्रस्ताव भेजा।

संधि की बात सुनकर मुगल सेना की जान में जान आई। रत्ना दे ने देखा—मुगल सेना अपने डेरे तम्बू उखाड़ रही है। युद्धभूमि में सफेद ध्वज लहरा रहा है। महारावल और सैनिक सोनार किले की ओर बढ़े चले आ रहे हैं।

मातृभूमि की विजय को देख, रत्ना दे की आंखों से खुशी के आंसू छलक पड़े। उसका शरीर पीला पड़ चुका था, मगर विजय की खुशी से उसके चेहरे की रौनक लौट आई थी। ●



इतनी सी सजा

—रमाकांत 'कांत'

मध्य भारत की एक रियासत थी जिसका नाम था रायसलाबाद। वहां के शासक का नाम था, प्रद्युम्नसेन। होने को तो वह वीर और एक बड़े साम्राज्य का स्वामी था, किंतु स्वभाव से अव्वल दर्जे का जिद्दी एवं अहंकारी व्यक्ति था।

एक बार की बात है, प्रद्युम्नसेन शिकार के लिए निकला। जंगल-जंगल शिकार करते हुए वह कहीं का कहीं निकल गया। साथ में आई अंगरक्षकों की टोली बिछुड़ गई। बस, सेनापति एवं एक-दो सैनिक ही साथ रह गए थे। वे राह भटक गए थे और उन्हें लौटने का मार्ग नहीं मिल रहा था।

संयोग ही कहिए कि जब प्रद्युम्नसेन और उसके साथी राह ढूंढ़ रहे थे, तभी अकस्मात उनकी भेंट पड़ोसी राज्य पिथौरागढ़ के राजा श्रुतकीर्ति से हो गई। प्रद्युम्नसेन को देखकर श्रुतकीर्ति ने बांहें फैलाकर कहा—''पिथौरागढ़ की सीमाओं में आपका स्वागत है, रायसलाबाद नरेश! अहोभाग्य, जो आप यहां पधारे।''

''क्या यह पिथौरागढ़ की सीमा है?''—आश्चर्यपूर्वक प्रद्युम्नसेन ने अपने सेनापति से पूछा।

सेनापति स्वयं इस बात से अनजान था। अतः वह जवाब नहीं दे पाया। श्रुतकीर्ति ने कहा—''आप पिथौरागढ़ के उत्तरी-पूर्वी सीमा प्रदेश में करीब अढाई कोस अंदर आ चुके हैं। इस तरह यह हमारे राज्य का क्षेत्र है। खैर, अब आप हमारे मेहमान हैं तथा आतिथ्य हमारा धर्म। आप आदेश दें कि हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं?''

श्रुतकीर्ति की किसी भी बात का जवाब देने की बजाए प्रद्युम्नसेन ने अपने सेनापति से कहा—''सेनापति, इनसे कहो कि चींटी के पर निकल आने से वह परिंदा नहीं बन जाती। जिस स्थान पर प्रद्युम्नसेन के पांव पड़ जाते हैं, वह स्थान उसकी सीमा में आ जाता है। इनसे कह दो कि आज से यह स्थान हमारा है।''

इतना सुनते ही श्रुतकीर्ति के योद्धाओं की भुजाएं फड़कने लगीं। उनके हाथ बरबस ही तलवारों की मूठ तक जा पहुंचे।

फिर प्रद्युम्नसेन की ओर मुड़कर श्रुतकीर्ति ने कहा—''कोई बात नहीं राजन, सीमाओं का फैसला तो युद्धभूमि में होता रहेगा। फिलहाल आप हमारा आतिथ्य ग्रहण कीजिए। कोई भी योद्धा युद्ध के मैदान में बिना वीरता दिखाए, न किसी की भूमि पर अधिकार करता है और न ही छोड़ता है। अतः यह फैसला तो आप भविष्य के लिए छोड़ दें।''

''बंद करो यह बकवास। सचमुच वीर हो तो युद्धभूमि में प्रद्युम्नसेन का सत्कार करना।''—कहकर प्रद्युम्नसेन ने अपने घोड़े को एड़ लगाई।

लगाम थामकर घोड़े को रोकते हुए श्रुतकीर्ति ने कहा—''राजन, आपने हमारे आतिथ्य और भलमनसाहत की खिल्ली उड़ाई है। मैं चाहूं तो आपको इसी समय अपने राज्य की सीमा लांघने के अपराध के कारण बंदी बना सकता हूं। पर आतिथ्य हमारा धर्म है। इसलिए मैं आपको छोड़ रहा हूं। अब हमारी अगली मुलाकात युद्धभूमि में होगी। मेरी सीमाओं तक मेरे सैनिक आपको सकुशल छोड़कर आएंगे।''

इसके बाद प्रद्युम्नसेन आगबबूला हो, वहां से लौट आया।

आते ही प्रद्युम्नसेन ने मंत्रिमंडल की बैठक बुलवाई और युद्ध की तैयारी करने का आदेश दिया। मंत्रियों तथा सेनापति ने राजा को ऐसा न करने का परामर्श दिया। पर उसने उनकी एक नहीं सुनी। युद्ध का छिड़ना अनिवार्य हो गया। सेना और प्रजा में यह बात फैल गई कि राजा ने श्रुतकीर्ति के शालीन व्यवहार को ठेस पहुंचाकर अपमानित किया है। अब युद्ध लड़कर वह और भी अन्यायपूर्ण कार्य कर रहे हैं। इस तरह रायसलाबाद की सेना आधे मन एवं पस्त हौसले के साथ युद्ध में उतरी।

उधर जब से यह घटना घटी थी, पिथौरागढ़ की प्रजा क्रोधित थी। लोग प्रद्युम्नसेन से अपमान का बदला लेने के लिए बेचैन थे। श्रुतकीर्ति स्वयं युद्ध की पहल नहीं करना चाहता था। आखिरकार जिद्दी राजा प्रद्युम्नसेन ने विशाल सैन्य बल के साथ पिथौरागढ़ पर आक्रमण कर दिया। पिथौरागढ़ के सैनिकों ने डटकर मुकाबला किया। रायसलाबाद की सेना को मुंह की खानी पड़ी।

परास्त राजा को बंदी बना लिया गया। दूसरे दिन पिथौरागढ़ के खचाखच भरे दरबार में प्रद्युम्नसेन, सेनापति और दूसरे बंदी लोगों को पेश किया गया। श्रुतकीर्ति ने महाराज प्रद्युम्नसेन के अलावा सभी को तत्काल सम्मान सहित मुक्त कर देने का आदेश दिया। उनका कहना था कि इनका कोई दोष नहीं है। इन्होंने तो केवल अपने राजा के आदेशों का पालन ही किया है।

इस तरह अन्य सभी को छोड़ दिया गया। बस, बाकी बचा रह गया केवल प्रद्युम्नसेन। श्रुतकीर्ति ने अपने सैनिकों से कहा—"तुम लोगों ने महाराज प्रद्युम्नसेन को इस तरह बंदी बनाकर दरबार में पेश किया है, जैसे इन्होंने कोई भीषण अपराध किया हो। राज्य की सीमाओं का विस्तार करने की हर राजा की स्वाभाविक इच्छा होती है और इन्होंने भी ऐसा ही किया। संयोगवश यह हार गए। फिर भी यह राजा



हैं, चाहे पिथौरागढ़ के बंदी ही सही। इनके साथ वही व्यवहार होना चाहिए, जो एक राजा के साथ किया जाता है।"

सेनापति ने कहा—"महाराज, यह सच है कि प्रद्युम्नसेन एक राजा हैं, पर हैं युद्ध-अपराधी। इन्होंने अकारण ही हमारे राज्य पर आक्रमण करने का अपराध किया है जिसके लिए यह पिथौरागढ़ की जनता के अपराधी हैं।"

श्रुतकीर्ति ने कहा—"सच है, पिथौरागढ़ की जनता के लिए यह एक अपराधी हैं। इन्हें अपराध के लिए दंड अवश्य दिया जाएगा, मगर वह दंड प्रद्युम्नसेन को नहीं, बल्कि रायसलाबाद नरेश को दिया जाएगा। अतः इनके सम्मान का ध्यान रखा जाए।"

प्रत्येक सभासद हैरान था। दंड और वह भी सम्मान सहित, भला यह कैसे सम्भव है ? पर महाराज का आदेश तो माना ही जाना था। उन्हें बंधनमुक्त कर सम्मानपूर्वक अतिथिशाला में ठहरा दिया गया, जहां उनका शाही आतिथ्य किया जाने लगा। श्रुतकीर्ति के इस व्यवहार को देखकर स्वयं प्रद्युम्नसेन आश्चर्य चकित था।

प्रद्युम्नसेन के भाग्य का फ़ैसला करने के लिए विशेष दरबार लगाया गया। दरबार में न केवल पिथौरागढ़ के दरबारीगण थे, बल्कि आसपास के

सभी राजाओं को भी आमंत्रित किया गया था। समस्त उपस्थित राजाओं को न्याय करना था, जिनमें स्वयं श्रुतकीर्ति भी था।

दरबार प्रारम्भ होते ही प्रद्युम्नसेन को लाया गया। वह भी अन्य राजाओं की तरह शाही वेशभूषा में था। उसके सिर पर रायसलाबाद राज्य का शाही राजमुकुट लगा हुआ था। उसे भी सम्मानपूर्ण आसन दिया गया। बस, अंतर यह था कि उसका आसन उन सब राजाओं की कतार के सामने लगा हुआ था।

दरबार में श्रुतकीर्ति ने उस दिन की आखेट वाली सम्पूर्ण घटना का वर्णन किया। युद्ध का तो सबको पता ही था। फिर प्रद्युम्नसेन को अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए कहा गया।

प्रद्युम्नसेन के पास कहने को कुछ भी नहीं था। वह अपने व्यवहार के प्रति लज्जित था। उसने उसके लिए खेद प्रकट किया और कहा—"आप लोग जो भी दंड देंगे, मैं उसे स्वीकार करूंगा।"

राजाओं ने सारी स्थिति पर विचार करते हुए यह निर्णय दिया कि प्रद्युम्नसेन पिथौरागढ़ का अपराधी है। ऐसे अपराधियों के लिए मृत्यु दंड दिया जाना उचित है।

उसी समय श्रुतकीर्ति उठ खड़ा हुआ। उसने प्रद्युम्नसेन के अहंकार और जिद्दी स्वभाव की चर्चा करते हुए कहा—"मैं केवल यह चाहता हूं कि प्रद्युम्नसेन का अहंकार खत्म हो जाए। मेरा सुझाव है कि यदि प्रद्युम्नसेन के राजमुकुट को एक वर्ष के लिए पिथौरागढ़ में बंदी बना लिया जाए, तो उचित रहेगा। इस एक वर्ष की अवधि में प्रद्युम्नसेन राजमुकुट धारण नहीं करेंगे और एक सच्चे सेवक की भांति रायसलाबाद का शासन चलाएंगे। हम इनका उचित सम्मान करेंगे। मुझे उम्मीद है कि इस तरह यह अहंकार से मुक्त हो जाएंगे।"

इस फैसले से सभी सहमत थे। पर प्रद्युम्नसेन तो फफक-फफककर रो पड़े। अपना मुकुट उन्होंने श्रुतकीर्ति के चरणों में रख दिया। श्रुतकीर्ति ने उन्हें गले से लगा लिया। ●



सच का फल

— जाकिर अली 'रजनीश'

एक बार नवलगढ़ राज्य में एक साधु आया। उसकी जटाएं और दाढ़ी सफेद थी। उसके माथे पर तेज चमकता था। 'सदा सत्य बोलो। सत्य सबसे बड़ा धर्म है। सत्य सबसे बड़ी पूजा है।'-वह ये उपदेश लोगों को देता था।

यह खबर सारे राज्य में फैल गई। लोग उसे देखने के लिए आने लगे। उसकी बढ़ती हुई लोकप्रियता से कुछ पंडितों को उससे ईर्ष्या होने लगी, क्योंकि कोई भी अब उनके पास फटकता तक न था। उन्होंने राजा से उसकी शिकायत कर दी।

राजा ने साधु को लाने के लिए दूत भेजा। किंतु साधु ने महल में जाने से मना कर दिया। राजा इस पर बहुत क्रोधित हुआ। उसने सेनापति को हुक्म दिया कि वह उस साधु को राजमहल में हाजिर करे। राजा की आज्ञा का पालन हुआ। साधु गिरफ़्तार करके राजमहल में लाया गया।

राजा की इस मूर्खता पर साधु परेशान था। वह बोला— "राजन, मेरा अपराध क्या है?"

"तुम ने लोगों को धर्म के खिलाफ भड़काया है।"— राजा बोला।

"मैंने तो ऐसा कोई काम नहीं किया।"— साधु ने कहा।



—"क्या तुमने यह नहीं कहा कि सत्य सबसे बड़ा धर्म है। बाकी सब दिखावा है ?''

— ''हां ! यदि जीवन में कर्मों का सच्चाई पूर्वक निर्वाह न हो, तो पूजा-पाठ दिखावा ही हुआ।''

—"सत्य बोलने वाला कभी अपराधी नहीं होता ?''

— ''राजन, वैसे सत्य बोलने वाला आदमी अपराध कम ही करता है।''

— ''और यदि तुम्हारी बात गलत निकली तो...''

— ''आप जो चाहे, दंड दे सकते हैं। मुझे सहर्ष स्वीकार होगा।''

''ठीक है। जब तक इसका फैसला नहीं हो जाता, तब तक तुम्हें कारागार में रहना होगा।''— कहता हुआ राजा सिंहासन से उठकर चला गया।

साधु को कारागार में डाल दिया गया।

राजा सोचने लगा कि कैसे सत्य की परीक्षा ली जाए। अंत में उसने एक उपाय निकाल लिया। उसने रानी से कहा— ''मैं किसी काम से बाहर जा रहा हूं।'' फिर वह अपना घोड़ा लेकर अकेला ही पिछले दरवाजे से महल से निकल गया।

महल से निकलने के बाद राजा ने एक स्थान पर अपनी वेश-भूषा बदल ली। नकली दाढ़ी-मूंछें लगाकर एक सामान्य नागरिक का वेश बनाया। इसके बाद वह राजमहल की ओर चल पड़ा।

राजा जब राजमहल के मुख्य द्वार पर पहुंचा, तो द्वारपाल ने पूछा— ''क्या करने जा रहे हो ?''

''चोरी करने जा रहा हूं।''— राजा ने जवाब दिया। दरबान ने समझा कि यह मेरी बात का बुरा मान गया है। इसलिए उसने राजा को जाने दिया।

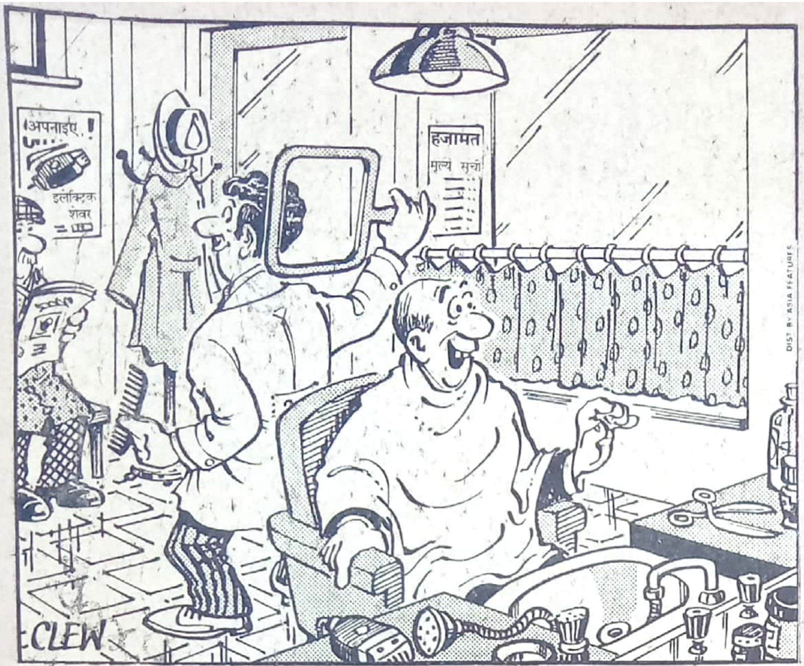
महल में पहुंचकर राजा ने सोने की वे मूर्तियां झोली में रख लीं, जिनकी रानी रोज पूजा करती थी। इस बार राजा दूसरे द्वार से बाहर निकला। दरबान ने पूछा, तो राजा ने कहा— ''सोने की मूर्तियां हैं, चुराकर ले जा रहा हूं।'' दरबान ने उसे जाने दिया।

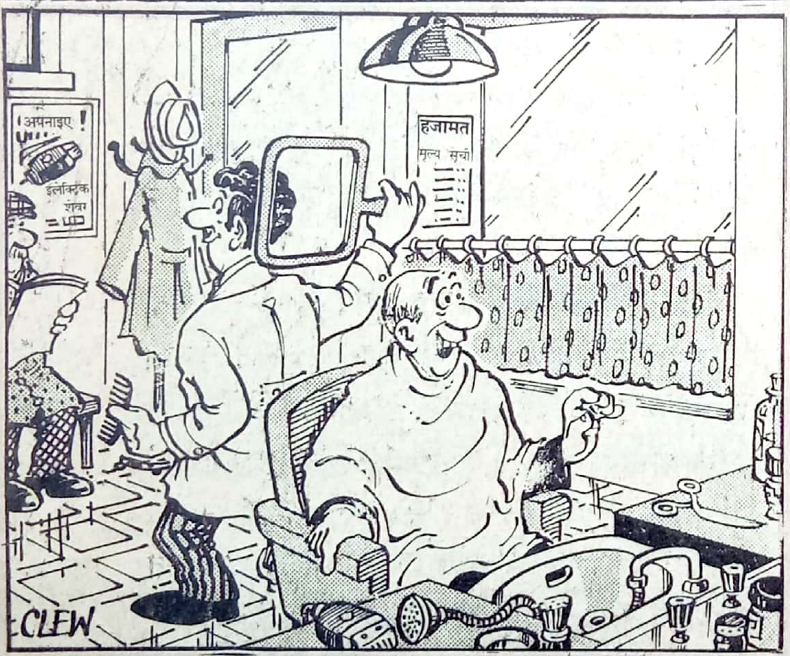
राजा मूर्तियां लेकर कोतवाली पहुंचा। उसने कोतवाल को बताया। कोतवाल आश्चर्य चकित रह गया। वह राजा को लेकर न्यायालय में पहुंचा। कोतवाल ने न्यायाधीश को सारी बातें बताईं। न्यायाधीश ने सारे तथ्यों की छानबीन की। सारी बातें सही थीं। न्यायाधीश यह भी नहीं समझ सका कि यह कैसा व्यक्ति है, जिसने चोरी करने के बाद स्वयं को ही पकड़वा दिया।

अंत में न्यायाधीश ने फैसला देते हुए कहा— ''चोरी की इस घटना में राजमहल की सुरक्षा व्यवस्था का दोष है। साथ में महाराजा का भी दोष है। यदि वह सबको रोजगार देते, तो यह युवक चोरी क्यों करता ? इस युवक का भी दोष है। इसे चोरी न करके मेहनत से रोजी-रोटी चलानी चाहिए थी। फिर भी मैं इसे बा-इज्जत बरी करता हूं क्योंकि इसने सच बोला है।''

फैसला सुनते ही राजा ने अपनी नकली दाढ़ी-मूंछें उतार दीं। राजा को देख, सब हैरान थे। राजा ने अपना हार उतारा और न्यायाधीश के गले में डाल दिया। बोला— ''न्यायाधीश जी, आपका फैसला सही है। राज्य में असावधानी एवं बेरोजगारी दूर करना मेरा कर्तव्य है। मैं इसे पूरा करूंगा।'' ऐसा कहता हुआ वह राजमहल की ओर चल पड़ा।

राजा महल में पहुंचा। फिर कुछ देर बाद वह साधु के पास पहुंचा। हाथ जोड़कर बोला— ''महाराज, मुझसे गलती हो गई। मैं आपसे क्षमा मांगता हूं।'' साधु बोला— ''राजन ! मुझे खुशी है कि आपको सचाई का पता चल गया। अब मैं चलता हूं।'' फिर साधु अपनी राह चला गया। ●





आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—**१५ मिनट**।

चित्र पहेली : १२३

बारात आई : इस विषय पर चटख रंगों से एक चित्र बनाइए। चित्र के पीछे अपना **नाम, आयु** और पता साफ-साफ लिखिए। चित्र **१५ फरवरी '९४** तक नंदन **कार्यालय** में भेज दीजिए। चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : मई '९४ अंक

कहानी लिखो : १२३

सामने छपे चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे **१५ फरवरी** तक **कहानी लिखो-१२३, नंदन, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी गई कहानी प्रकाशित की जाएगी। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : अप्रैल अंक





नागमणि

—रीता झा

अंगदेश के राजा थे महिपाल। वह प्रजा के हित का हमेशा ध्यान रखते थे। प्रजा उनके राज्य में हर तरह से खुश थी।

राजा को शिकार का बहुत शौक था। वह सप्ताह में एक दिन शिकार पर जरूर जाते थे।

एक दिन राजा अपने कुछ साथियों के साथ शिकार के लिए जंगल में बहुत दूर तक निकल गए। अचानक एक जोरदार धमाका हुआ और राजा का घोड़ा बिगड़ गया। वह राजा के नियंत्रण से बाहर हो गया। इसी भाग-दौड़ में घोड़ा एक खाई में गिर गया। खाई से निकल रहे जहरीले धुएं के प्रभाव से राजा की आंखों की रोशनी जाती रही।

घोड़ा तो दम तोड़ चुका था। राजा की चीख-पुकार सुनकर सैनिक खाई के पास पहुंच गए। किसी तरह राजा को रस्सी के सहारे खाई से बाहर निकाला गया। सैनिक जल्दी से राजा को राजमहल में ले आए।

राजा के अंधे होने की खबर पूरे राज्य में फैल गई। प्रजा अपने प्रिय राजा की आंखों की निरोगता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगी। राजवैद्य ने बहुत कोशिश की, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। दूर-दूर के देशों से भी हकीम-वैद्यों को बुलाया गया। लेकिन कोई भी राजा की आंखों की रोशनी वापस न ला सका।

एक दिन एक साधु उस राज्य में आए। उन्हें सम्मान के साथ राज दरबार में लाया गया। राजा ने साधु को प्रणाम किया।

साधु ने राजा की आंखों का मुआयना करके कहा—"यदि आंखों पर नागमणि का स्पर्श कराया जाए, तो इनकी रोशनी लौट सकती है।"

महामंत्री ने पूछा—"नागमणि कहां मिलेगी?"

साधु बोले—"नागमणि मिलना बहुत कठिन है। हजारों विषधर नाग नागलोक में मणि की रक्षा करते हैं। कोई साहसी व्यक्ति ही यह कार्य कर सकता है।"

राजा की एक ही पुत्री थी मनोरमा। वह बहुत सुंदर थी। उसके सौंदर्य की चर्चा दूर-दूर के देशों तक फैली हुई थी। बहुत से राजकुमार उससे शादी करने को लालायित रहते थे। उसने पूरे राज्य में ढिंढोरा पिटवा दिया—"जो कोई नागमणि ले आएगा, उसी से मेरा विवाह होगा।"

यह खबर बिजली की तरह सभी देशों में फैल गई। पर कोई भी राजकुमार नागमणि लाने के लिए हिम्मत नहीं जुटा सका। जब प्रतापगढ़ के राजकुमार प्रतापसिंह ने यह घोषणा सुनी, तो वह तुरंत तलवार लेकर नागमणि की खोज में निकल पड़ा।

एक रात वह जंगल में सो रहा था। अचानक उसने फुफकारने की आवाजें सुनीं। वह हड़बड़ा कर

उठा। उसने देखा कि एक नाग और नेवला लड़ रहे थे। नेवले ने नाग को बुरी तरह से घायल कर दिया था। प्रताप को यह देखकर नाग पर दया आई।

उसने अपनी तलवार से नेवले को हटा देना चाहा। लेकिन तभी एक विचित्र घटना हुई। नेवला एक विशालकाय, भयानक राक्षस बन गया और प्रताप पर झपट पड़ा। प्रताप ने अपना साहस नहीं खोया। वह राक्षस से डटकर मुकाबला करने लगा। दोनों में भीषण युद्ध हुआ। अंत में प्रताप ने राक्षस को मार डाला।

प्रताप घायल हो गया, थक भी चुका था। वह तलवार को बगल में रख, जमीन पर बैठ गया। तभी पीछे से एक स्त्री की आवाज सुनाई दी—"मैं आपकी आभारी हूं। आपने उस राक्षस को मार कर मेरी जान बचाई।"

प्रताप पीछे मुड़ा, तो उसे बहुत अचरज हुआ। उसने एक विचित्र प्राणी देखा। जिसका धड़ नाग का और सिर स्त्री का था। प्रताप ने पूछा—"आप कौन हैं ?"

उस स्त्री ने जवाब दिया—"मैं नागलोक की कन्या हूं। वह दुष्ट राक्षस मुझे जबरदस्ती उठाकर ले जाना चाहता था। उसे मारकर आपने मेरी रक्षा की। यदि मैं आपके काम आ सकूं, तो मुझे खुशी होगी।"



प्रताप ने उससे पूछा—"मैं नागमणि की तलाश में इधर-उधर भटक रहा हूं। अगर आप उसका पता बता सकें, तो आपकी कृपा होगी।"

नागकन्या उदास हो गई। बोली—"यह तो बहुत मुश्किल काम है। नागमणि केवल नागलोक की रानी के पास होती है। जिस पर नागरानी प्रसन्न होती हैं, वही इसे प्राप्त कर सकता है।"

यह सुनकर प्रताप निराश हो गया। उसे लगा कि वह अपने कार्य को पूरा नहीं कर सकेगा। तभी नागकन्या बोली—"एक उपाय है। कल नागपंचमी है। इस दिन नागरानी को सेवा से प्रसन्न करके मनचाही वस्तु प्राप्त की जा सकती है।"

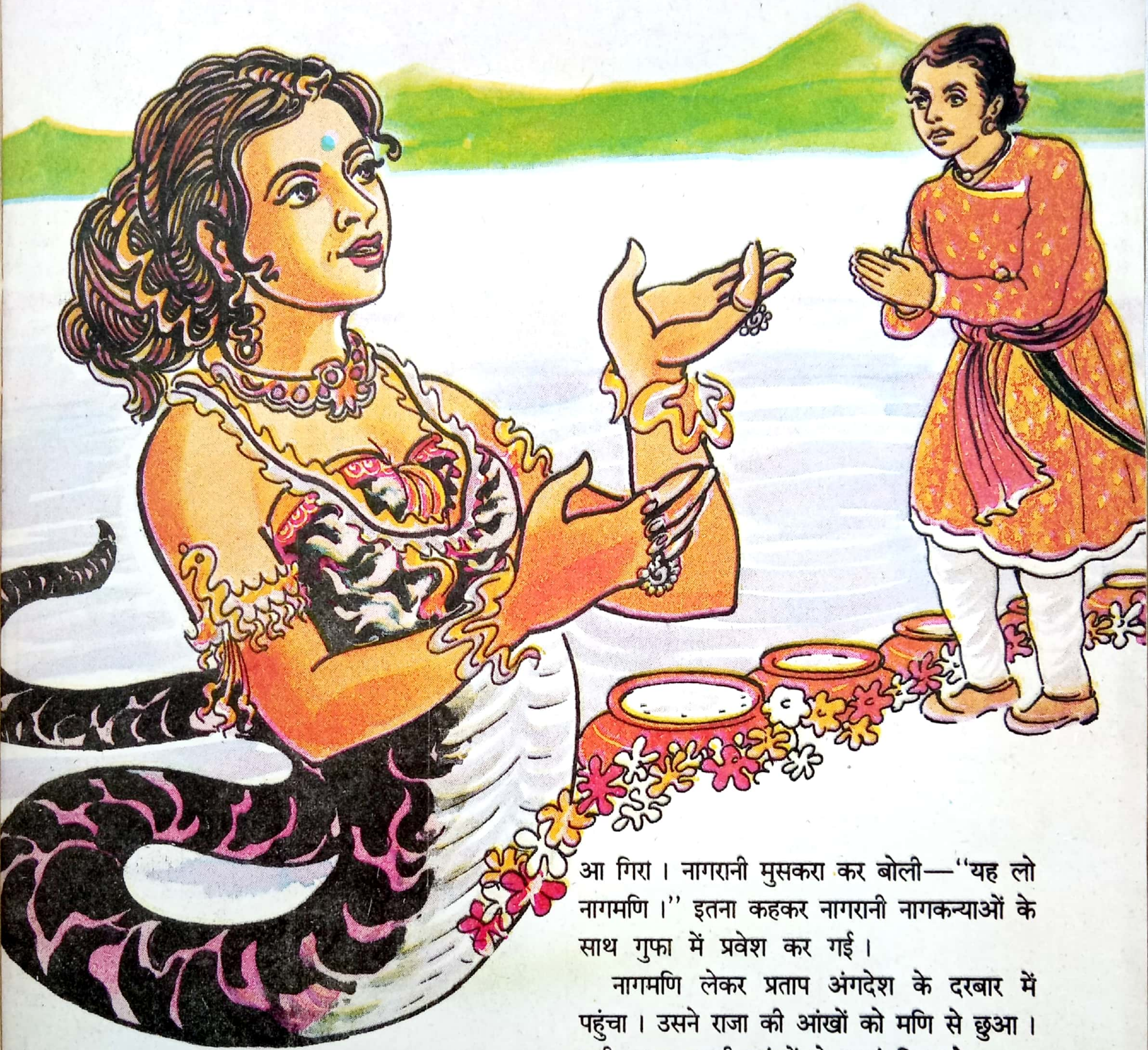
नागकन्या ने आगे कहा—"नागलोक की रानी और नागकन्याएं कल सामने की चट्टान वाली गुफा से नदी स्नान करने के लिए आएंगी। नागरानी को दूध-लावा और फूलों की सुगंध बहुत ही अच्छी लगती है। इसलिए तुम इन चीजों को गुफा से लेकर नदी तक बिछा दो।" इतना कहकर नागकन्या अदृश्य हो गई।

प्रताप जल्दी-जल्दी उन चीजों के इंतजाम में लग गया। उसने पूरे रास्ते की अच्छी तरह सफाई की। तरह-तरह के सुगंधित फूलों को पूरे रास्ते पर बिछा दिया। दूध और लावा से भरे बर्तनों को जगह-जगह रास्ते पर रख दिया।

शाम होने पर प्रताप वहीं झाड़ी के पीछे छिप गया। चांदनी रात थी। उसने देखा, नागरानी नागकन्याओं के साथ गुफा से बाहर निकल रही है। सुगंधित फूलों की खुशबू से नागरानी खुश हो गई। वह नागकन्याओं से बोली—"क्या ही मधुर सुगंध है। अरे, यहां तो दूध और लावा भी है।" वे दूध पीते और लावा खाते हुए झूमते हुए, नदी किनारे पहुंच गईं।

नदी स्नान के बाद वे सब लौट पड़ीं। रास्ते में नागरानी नागकन्याओं से बोली—"जिसने भी हम लोगों के लिए यह सब किया है, वह यदि मुझसे कुछ भी मांगे, तो मैं देने को तैयार हूं।"

इसी क्षण की तो प्रताप प्रतीक्षा कर रहा था। वह



आ गिरा। नागरानी मुसकरा कर बोली—"यह लो नागमणि।" इतना कहकर नागरानी नागकन्याओं के साथ गुफा में प्रवेश कर गई।

नागमणि लेकर प्रताप अंगदेश के दरबार में पहुंचा। उसने राजा की आंखों को मणि से छुआ। उसी समय उनकी आंखों से धुआं निकलने लगा। कुछ देर बाद राजा खुश होकर बोले—"मुझे अब दिखाई देने लगा है।"

झाड़ी से बाहर निकला और सब को प्रणाम करके बोला—"आप सबके स्वागत के लिए ही मैंने यह किया है।"

नागरानी ने पूछा—"बोलो, तुम्हें क्या चाहिए?"

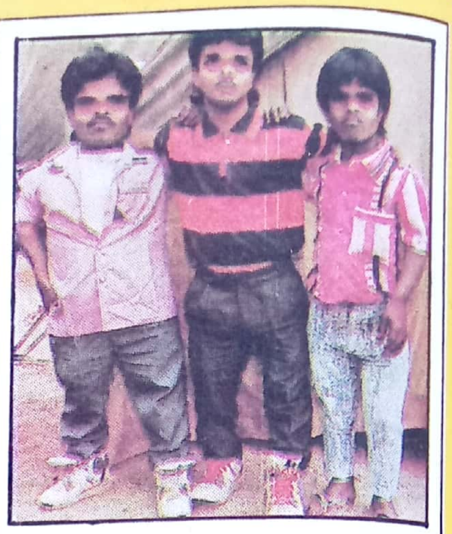
प्रताप बोला—"अगर आप मुझसे खुश हैं, तो मुझे नागमणि देकर कृतार्थ करें।" कुछ देर के लिए नागरानी मौन हो गई। फिर बोली—"जब हमने वचन दिया है, तो नागमणि देनी ही होगी।"

यह कहकर नागरानी ने आकाश की ओर मुंह कर फुफकार मारी। तुरंत एक चमकती हुई वस्तु जमीन पर

मनोरमा बोली—"पिता जी, जिसके कारण आपके नेत्रों की ज्योति वापस आई है, वह साहसी युवक प्रताप है।"

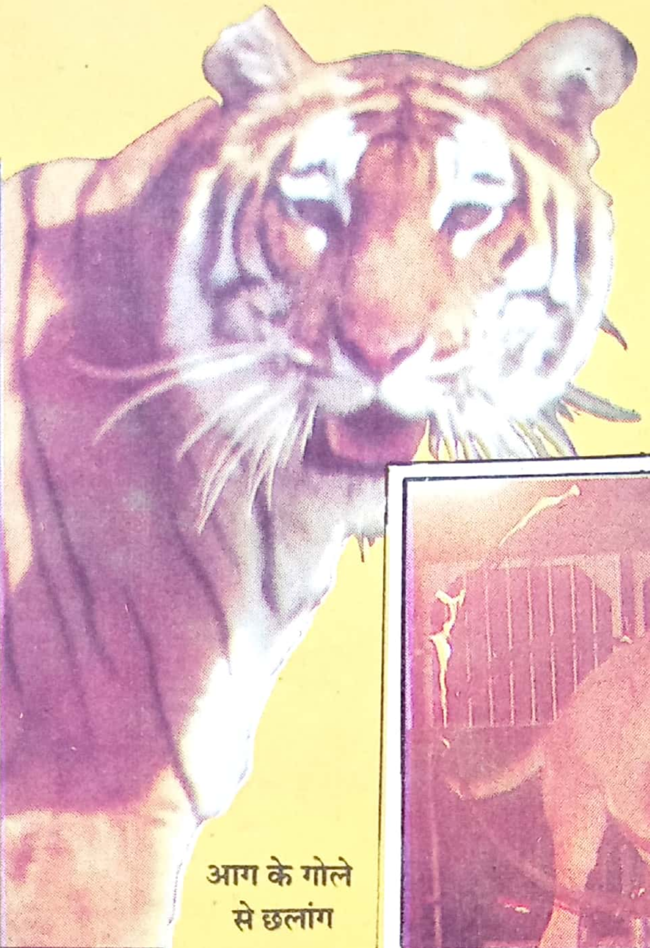
राजा ने प्रताप को गले से लगा लिया। उसी समय मनोरमा और प्रताप की शादी की घोषणा कर दी। दोनों की शादी धूमधाम से हुई। प्रताप को अंगदेश का राजा बना दिया गया। ●

तीन बौने जोकर →



शेर का बच्चा नाच दिखाए





आग के गोले से छलांग →



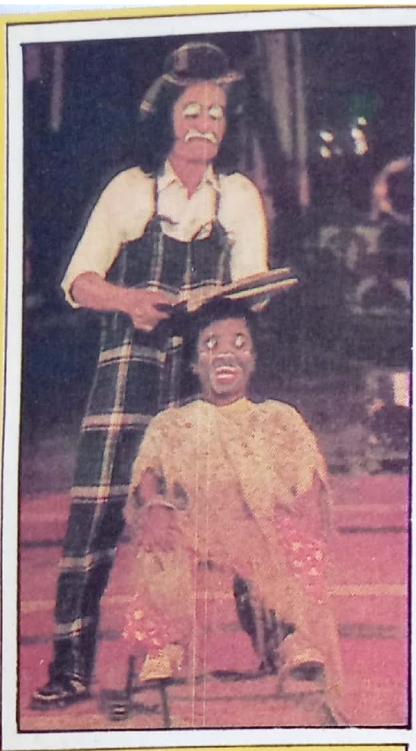
हाथी चलाए साईकिल



क्या खाएगा दरियाई घोड़ा ↓



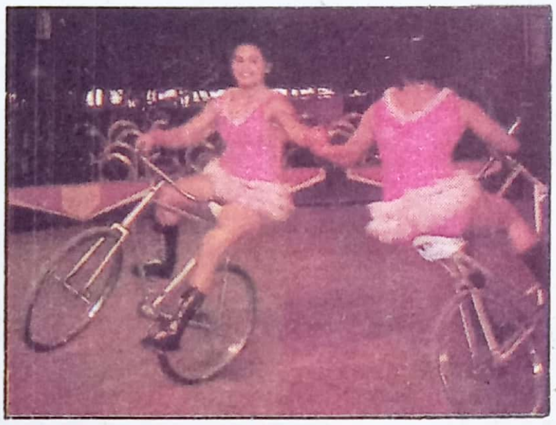
सौजन्य : रेमन सर्कस

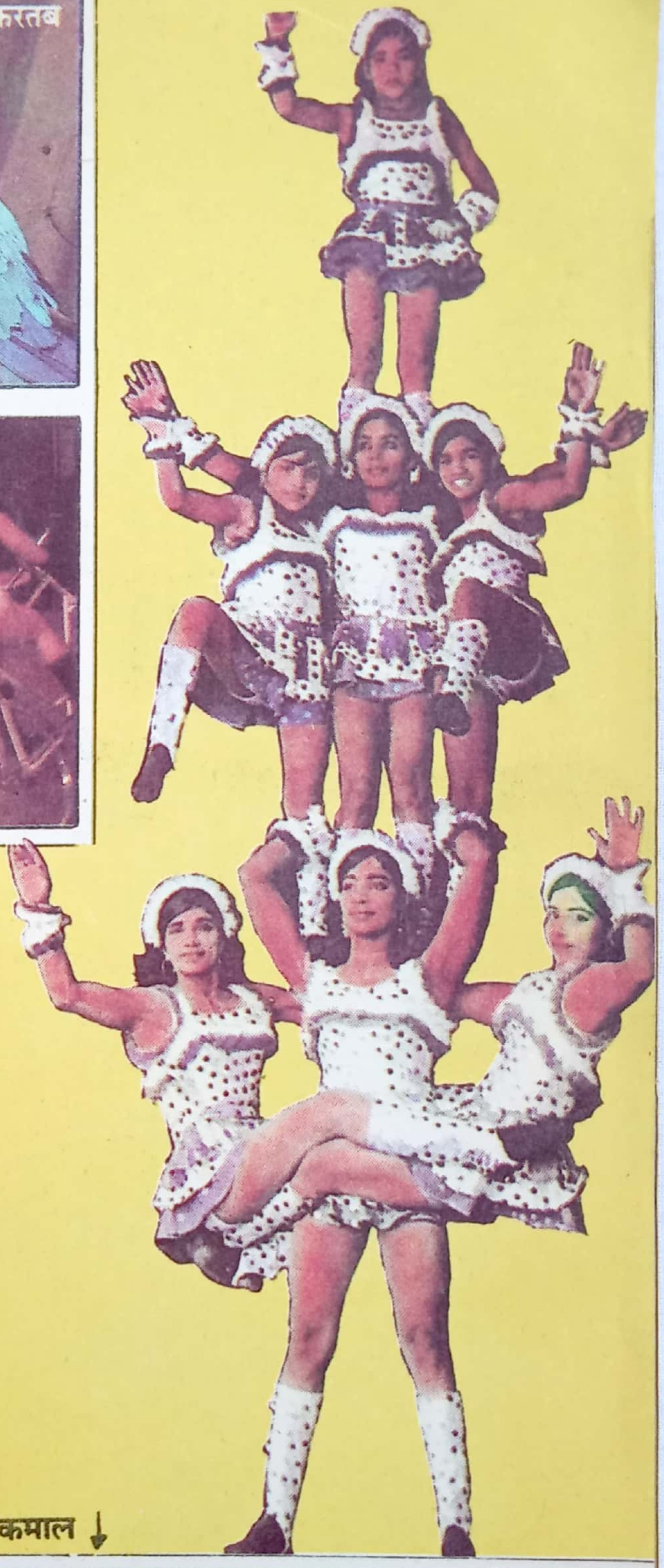


हंसने की बारी



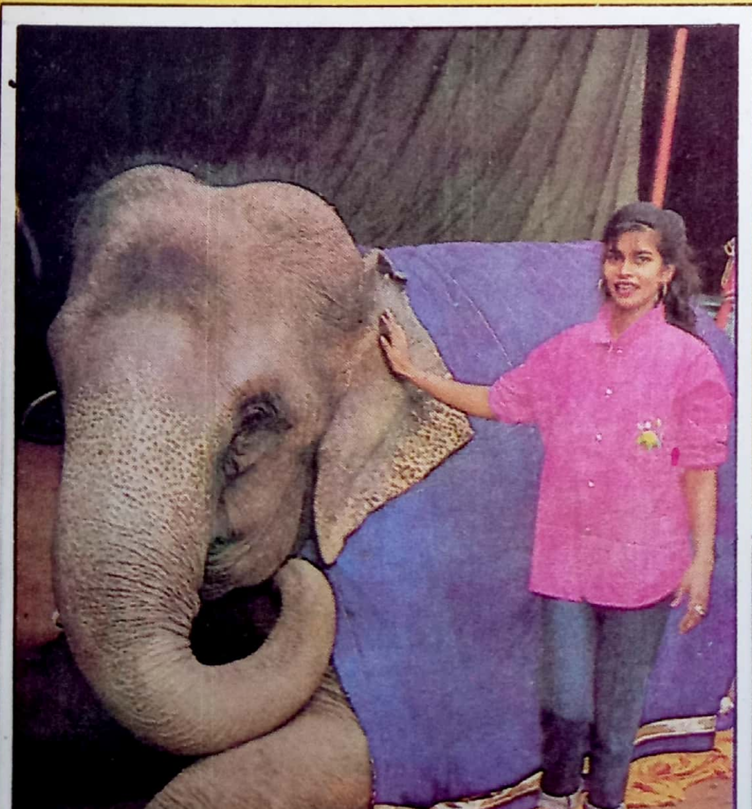
तोता दिखाएगा करतब





सर्कस में जो देखा

चित्र : एम. एस. अग्रवाल, योगेश आनंद



निशाने का कमाल ↓





दुनिया मेरी

— जूले वर्न

उस पहाड़ के अंदर क्या हो रहा था—कोई नहीं जानता था। एक दिन उसके शिखर से धुएं का बादल उठा, फिर गड़गड़ाहट सुनाई दी। आसपास के गांवों में रहने वाले समझे, शायद कोई ज्वालामुखी फटने वाला है। लोग घर छोड़-छोड़कर भागने लगे।

कई दिन ऐसे ही बीत गए, कोई दुर्घटना न हुई। भागते लोग थम गए। अपने-अपने घर लौटने लगे। किसी समझदार ने कहा—'अरे मूरखो, यहां ज्वालामुखी है कहां, जिसके डर से भागे जा रहे हो!'

बात तो उसकी ठीक थी। लेकिन तब धुएं के बादल और गड़गड़ाहट का क्या मतलब था? इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं था।

यह सौ साल पहले की घटना है। अमरीका के पश्चिमी क्षेत्र में एक पर्वत है—बहुत ऊंचा, पूरा क्षेत्र

ऊबड़खाबड़ और भयानक। आज तक कोई भी उसके शिखर पर नहीं पहुंच पाया था। उसके ढलानों पर, तलहटी में छोटे-छोटे गांव थे। वहां के निवासी आराम से रहते आ रहे थे। मेहनत से मिलने वाला रूखा-सूखा खाकर संतोष से जी रहे थे, लेकिन इधर पर्वत के अंदर जैसे किसी भूत-प्रेत का वास हो गया था। तभी तो ऐसी विचित्र घटना हुई थी।

सवाल यह था कि पर्वत शिखर पर पहुंचकर वहां की स्थिति का पता कौन लगाए? आज तक कोई पर्वतारोही ऊपर नहीं पहुंचा था। और अब तो लोग वैसे ही घबराए हुए थे। उन्हीं दिनों वाकर नामक व्यक्ति उस क्षेत्र में आया। वह विशाल गुब्बारे के सहारे कई बार उड़ाने भर चुका था। इस काम में उससे सहायता मांगी गई। वह मान गया। उसने कहा—"मैं शिखर के ऊपर दूरबीन की मदद से देखकर पता लगाऊंगा।"

वह गुब्बारे के साथ बंधे झूले में बैठकर उड़ा। नीचे खड़ी भीड़ उसे देखती रही, लेकिन विपरीत हवा के कारण वाकर का गुब्बारा शिखर के ऊपर न जा सका।

वाकर कुछ पता न लगा सका। सब निराश हो गए। कुछ दिन बाद पर्वत के अंदर फिर गड़गड़ाहट सुनाई दी। शिखर के ऊपर आग की लपटें नजर आईं। कोई समझ नहीं पा रहा था कि पर्वत के अंदर कौन भूत-प्रेत जा बैठा है?

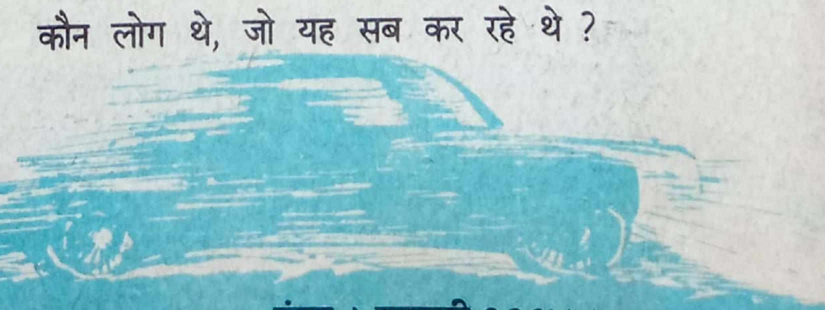
अमरीकी पुलिस सेवा का प्रमुख था वार्ड। सरकार ने उसे यह रहस्य सुलझाने का काम सौंपा। वार्ड के अधीन एक पुलिस अधिकारी था जान स्ट्रोक। उसे कर्मठ और होशियार माना जाता था। वार्ड ने स्ट्रोक को बुलाकर कहा — "तुम उस पर्वत शिखर पर जाकर पता लगाओ की मामला क्या है। यह स्थिति ठीक नहीं है। इससे जनता में तरह-तरह की अफवाहें फैलेंगी और सरकार की बदनामी होगी।"

स्ट्रोक को खतरों से जूझने में जैसे आनंद आता था। अपने दो विश्वासी साथियों को लेकर स्ट्रोक शिखर की ओर चल दिया। जैसे-जैसे वे चढ़ते गए, रास्ता कठिन और भयावना होता गया। वे बार-बार फिसलकर गिर पड़ते। आखिर स्ट्रोक के दोनों साथियों ने चढ़ने से इंकार कर दिया। स्ट्रोक भी बुरी तरह थक गया था, पर उसने हिम्मत नहीं हारी थी। सांझ होने वाली थी। इसलिए विवश होकर उन्हें नीचे लौटना पड़ा। स्ट्रोक समझ गया था कि पर्वत शिखर पर जाने का कोई उपाय नहीं था। लौटते समय स्ट्रोक सोच रहा था — 'क्या पर्वत का रहस्य अनसुलझा ही रह जाएगा?'

कुछ दिन बाद एक दूसरी घटना हुई। अखबारों में समाचार प्रकाशित हुए — रात के समय एक रहस्यमय मोटर कार बहुत तेजी से सूनी सड़कों पर दौड़ती है, फिर गायब हो जाती है। मोटर कार का पीछा करने की हर कोशिश असफल हुई थी। उस रहस्यमय कार को कई नगरों में देखा गया था।

विस्कांसिन में एक दिन मोटर कार रेस हुई। सड़क के दोनों ओर भारी भीड़ थी। एकाएक तेज आवाज हुई, फिर धूल उड़ाती हुई एक काली कार आई और सनसनाती हुई सबसे आगे निकल गई। सड़क एक झील के तट पर समाप्त होती थी। बहुत देर हो गई, पर काली कार का कुछ पता न चला। लोगों ने सोचा — 'शायद वह रहस्यमय कार झील में गिरकर डूब गई।'

पहले पर्वत शिखर के अंदर से निकलती आग और विचित्र आवाजें और अब यह काली कार जो जैसे हवा में उड़ती थी। एक के बाद दूसरा रहस्य। और फिर एक नई खबर मिली — समुद्र में एक विचित्र आकृति वाली नौका देखी गई। जब नौसेना के जहाजों ने उसका पीछा किया, तो वह पानी में समा गई। लोग घबराए हुए थे। सब मांग कर रहे थे कि सरकार पता लगाए कि मामला क्या है? आखिर वे कौन लोग थे, जो यह सब कर रहे थे?



विश्व की महान कृतियां : फ्रेंच

जूले वर्न (१८२८-१९०५) — प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक। विज्ञान कथाएं बहुत मशहूर हुईं। उनकी पुस्तक 'फाइव वीक्स इन ए बैलून' फ्रांस भर में सराही गई। यह १८६३ में छपी थी। उन्होंने ऐतिहासिक कथाएं भी लिखी थीं। यहां वर्न की पुस्तक 'मास्टर आफ द वर्ल्ड' की संक्षिप्त कथा दे रहे हैं। — सं०

वार्ड ने फिर स्ट्रोक को बुलाया। कहा — "हमें जल्दी ही इस रहस्य पर पड़ा परदा हटाना होगा। यह पूरे देश की प्रतिष्ठा का मामला है।"

"मैं अपनी ओर से पूरा प्रयास करूंगा।" — स्ट्रोक ने कहा और चला आया।

एक सुबह स्ट्रोक को एक पत्र मिला। वह इस प्रकार था —

महोदय,

आप पर्वत शिखर पर चढ़कर देखना चाहते थे कि वहां क्या है, लेकिन असफल रहे। मैं आपको सावधान करता हूं। इस तरह के प्रयास न करें। परिणाम बुरा होगा।

संसार का स्वामी

पत्र पढ़कर स्ट्रोक चौंक पड़ा। 'संसार का स्वामी कौन है भला? वह मुझे धमकियां क्यों दे रहा है?' वह जितना सोचता, उलझता जाता।

स्ट्रोक पत्र लेकर वार्ड के पास पहुंचा। पत्र देखकर वह भी परेशान हो उठा। उसके होंठों से निकला — 'हमें पता लगाना ही होगा कि अपने को 'संसार का स्वामी' कहने वाला रहस्यमय व्यक्ति है कौन?'

अमरीकी सरकार की ओर से अखबारों में एक सूचना प्रकाशित की गई। लिखा था — 'हम उस रहस्यमय आविष्कारक से बात करना चाहते हैं, जिसने यह विचित्र यान बनाया है। वह बताए कि उसे क्या चाहिए? वह अपना उत्तर पुलिस मुख्यालय के नाम भेज सकता है।' दो दिन बाद, पुलिस मुख्यालय के लैटर बाक्स में एक पत्र मिला, जो इस प्रकार था —

'ओ दुनिया वालो,

मुझे किसी से कुछ नहीं चाहिए। मैंने जो मशीन बनाई है, वैसी दूसरी किसी के पास नहीं है। मैं चेतावनी देता हूं, कोई मुझे पकड़ने का प्रयास न करे। नतीजा पूरी दुनिया के लिए घातक होगा।

संसार का स्वामी

इस पत्र से स्पष्ट हो गया कि इन रहस्यमय घटनाओं के पीछे कोई व्यक्ति है — ऐसा आदमी जो दुनिया में किसी से नहीं डरता। अब तो उसे पकड़ना अनिवार्य हो गया था। लेकिन कैसे?

अभी स्ट्रोक योजना बना ही रहा था कि नई खबर मिली। एक झील में एक रहस्यमय नौका देखी गई थी। वार्ड ने स्ट्रोक से कहा — हमें तुरंत वहां जाकर घेराबंदी कर लेनी चाहिए। शायद हम इस रहस्यमय व्यक्ति को पकड़ सकें।"

झील के आस-पास घना जंगल था। स्ट्रोक दो लोगों के साथ वहां जा पहुंचा। उनमें से एक था वैल्स। उसी ने एक रात झील में वह रहस्यमय नौका देखी थी और तब से वह लगातार निगरानी रखे हुए था।

रात में वेझील के तट पर पहुंचे। घोड़ों को तट से दूर बांधा और छिपकर बैठ गए। आधी रात के बाद आवाज आई। एक नौका झील के तट पर रुक गई। दो व्यक्ति उतरकर जंगल में चले गए। स्ट्रोक उन्हें पकड़ने की योजना बनाने में जुट गया। नौका को एक जंजीर द्वारा तट से बांध दिया गया था।

कुछ देर बाद लौटने वालों की पदचाप सुनाई दी। फिर घोड़ों के दौड़ने की आवाज आई। शायद वे खुल गए थे और अंधेरे में इधर-उधर भाग रहे थे। इससे नाव वालों को पता चल गया कि कुछ गड़बड़ है। वे नाव की तरफ दौड़े। जंजीर को खोल लिया। तभी स्ट्रोक ने उछलकर उनमें से एक को पकड़ लिया, पर थामे न रह सका। नौका की जंजीर का हुक उसकी कमर पेटी में अटक गया। वह जंजीर के साथ खिंचता हुआ पानी में जा गिरा। फिर उसे होश न रहा।

स्ट्रोक को होश आया, तो दिन निकल आया था। उसने अपने को एक जहाज में पाया। वह लकड़ी के केबिन में लेटा था। कानों में लहरों का स्वर आ रहा

था। शायद यह वही रहस्यमय यान था, जिसे वैल्स ने झील में देखा था।

'मैं कहां जा रहा हूं ?' — स्ट्रोक बार-बार अपने से पूछता। केबिन के कोने में लोहे की एक सीढ़ी थी। उससे चढ़कर स्ट्रोक ऊपर जा पहुंचा। सचमुच वह एक विशाल नौका के डेक पर खड़ा था। दूर-दूर तक पानी नजर आ रहा था। नौका बहुत तेज गति से जा रही थी।

स्ट्रोक कुछ देर डेक पर टहलता रहा। उसे किसी ने नहीं रोका। फिर उसे दो व्यक्ति दिखाई दिए। वे नौका का संचालन कर रहे थे। उसने दोनों से जो कुछ पूछा, उसका उत्तर नहीं मिला।

तभी उसने देखा — नौका उस दिशा में जा रही है, जहां से झील का पानी सैकड़ों फीट नीचे प्रपात के रूप में गिर रहा है। भयानक आवाज हो रही थी। और फिर उसे विस्फोट की आवाज सुनाई दी। कहीं से तोप चलाई गई थी। शायद वैल्स ने लौटकर खबर दी थी। और अब उनका पीछा किया जा रहा था।

प्रति पल प्रपात निकट आता जा रहा था। मृत्यु भय से स्ट्रोक कांप उठा। उसे लग रहा था, वह नौका सहित सैकड़ों फीट नीचे जा गिरेगा। लेकिन ऐसा कुछ न हुआ। देखते-देखते नौका के दोनों ओर विशाल



पंख बाहर निकल आए और वह आकाश में उड़ गई किसी विशाल पक्षी की तरह।

स्ट्रोक को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। विशाल पक्षी की तरह उड़ान भरती हुई विचित्र नौका एक पर्वत शिखर पर जा उतरी। यह वही पर्वत था, जहां से धुआं और आग की लपटें लोगों ने देखी थीं और भूकम्प के डर से भाग खड़े हुए थे।

स्ट्रोक समझ गया। वह स्थान उस विचित्र मशीन का आश्रय स्थल था। वह ऐसा दुर्गम स्थान था, जहां कोई भी नहीं पहुंच सकता था। वहीं स्ट्रोक उस विचित्र मशीन के कप्तान से मिला, जो अपने को दुनिया का मालिक़ कहता था। उसे देखते ही स्ट्रोक पहचान गया। वह राबुर था।

राबुर एक वैज्ञानिक था। उसने तेज गति से उड़ने वाला वायुयान बनाने का दावा किया था, लेकिन उसका दावा किसी ने नहीं माना था। तब वह दो वैज्ञानिकों का अपहरण करके ले गया था और उन्हें अपने विचित्र विमान में सैर कराई थी।

बाद में दोनों वैज्ञानिक किसी तरह बच निकले थे। उन्होंने राबुर का वायुयान नष्ट कर दिया था। तब यह समझा गया था कि राबुर मर गया। लेकिन अब स्पष्ट था, वह जीवित था और उसने एक नया यान भी बना लिया था — ऐसा यान जो मछली की तरह पानी के ऊपर तथा अंदर तैरता था और पक्षी की तरह उड़ भी सकता था।

दो दिन तक राबुर के साथी यान की मरम्मत में लगे रहे। फिर वह उड़ चला, न जाने किस यात्रा पर।

स्ट्रोक बेबस था। तभी भयानक तूफान ने राबुर के रहस्यमय यान को घेर लिया। फिर देखते-देखते वह टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया। स्ट्रोक को नौसेना के जहाज ने बचा लिया, पर राबुर और उसके साथी तूफान की भेंट चढ़ गए।

बाद में स्ट्रोक के अनुभव अखबारों में प्रकाशित हुए। पढ़ने वाले हैरान रह गए। सब एक ही बात कह रहे थे — 'अगर राबुर जीवित रहता, तो शायद दुनिया नष्ट हो जाती।'

प्रस्तुत : देवेंद्र कुमार

कागज कोरे

—हरफूल सुईवाल

नटवर करणपुर गांव का रहने वाला था। गांव के अच्छे और बड़े किसानों में उसकी गिनती होती थी। वह बहुत चालाक था।

एक दिन उसके पास गांव का ही एक आदमी धरमा आकर बोला—"नटवर भैया, मैं अपनी बीवी-बच्चों को लाने ससुराल जा रहा हूं। मैं गाय और बछड़े को दो दिन के लिए आपके घर छोड़कर जाना चाहता हूं।"

धरमा की बात सुनकर, नटवर हंसकर बोला—"अरे भाई! यह भी कोई पूछने की बात हुई। दो दिन क्या चार दिन के लिए भी छोड़कर जा सकते हो। जितने दिन यहां चारा खाएगी, उतने दिन वह दूध भी तो देगी! इसलिए मुझ पर बोझ तो होगा नहीं?"

—"हां, बात सही है।"

—"फिर पूछने की क्या बात है भाई? गाय को यहां बांध दो और अपनी ससुराल चले जाओ।"

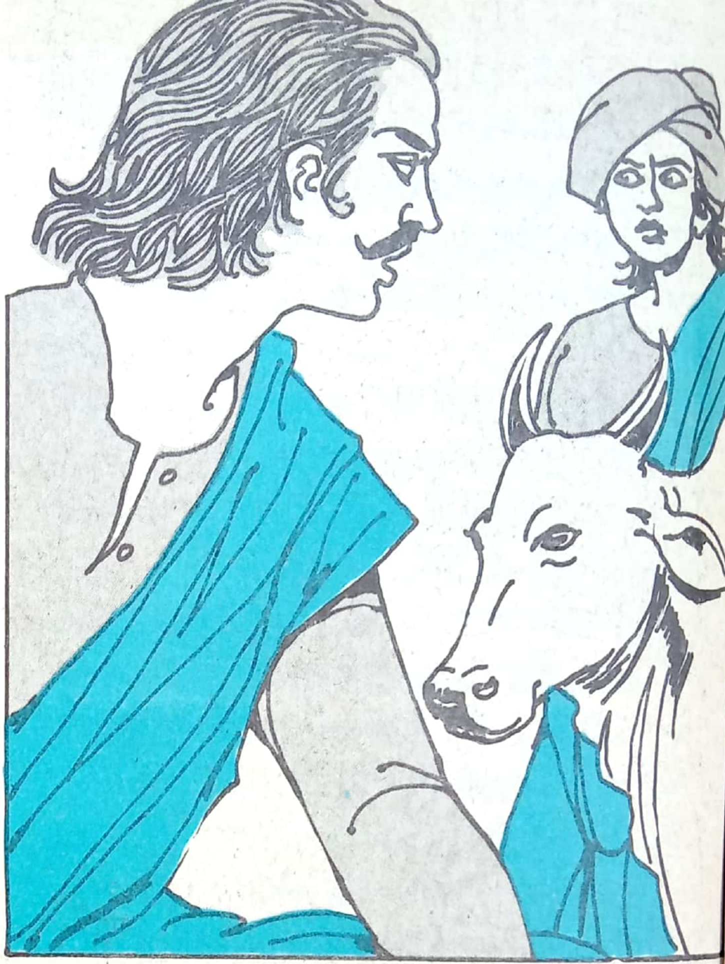
धरमा ने गाय और बछड़े को नटवर के घर बांध दिया। फिर वह अपनी ससुराल चला गया।

शाम को नटवर ने धरमा की गाय का दूध निकाला। दूध से भरी बालटी देखी। अब उसका मन गाय को हड़पने के लिए ललचा उठा। उसने सोचा—'ऐसी भली गाय तो मेरे घर होनी चाहिए। धरमा जब गाय लेने वापस आएगा, तब मैं झूठ बोल दूंगा कि गाय मैंने तुमसे खरीदी थी। अब यह गाय मेरी है। भला धरमा क्या बिगाड़ लेगा मेरा।'

कुछ दिन बाद धरमा ससुराल से लौटा। वह नटवर के पास पहुंचा। वह नटवर से बोला—"माफ करना नटवर भाई। गाय के कारण आपको परेशानी तो बहुत हुई होगी?"

—"गाय परेशान क्यों करेगी? जब गाय ली थी, तो खूब सोच-समझकर ही ली थी।"

यह सुन, धरमा चौंक उठा—"तुम्हारी बात का



मतलब मैं कुछ समझा नहीं।"

—"मेरा मतलब यह है कि जब गाय खरीदी है, तो परेशानी भी उठानी ही पड़ेगी।"

धरमा घबराते हुए बोला—"मुझे देर हो रही है भाई। अब मैं अपनी गाय ले जा रहा हूं।"

नटवर ताव में बोला—"अजीब आदमी हो तुम! गाय बेचकर मुझसे रुपए ले गए और अब गाय भी ले जाना चाहते हो। गाय तुम नहीं ले जा सकते। चाहो, तो पंचायत बैठाकर फैसला करवा लो।"

अब तो धरमा के पांव तले से जमीन खिसक गई। वह समझ गया कि नटवर गाय हथियाना चाहता है।

धरमा ने मुखिया को अपनी सारी कहानी सुनाई।

अगले दिन गांव की पंचायत बैठी। नटवर ने कहा—"मैंने कीमत चुकाकर धरमा से गाय खरीदी थी।" इस पर धरमा बोला—"मैं ससुराल गया, तो दो दिन के लिए गाय और बछड़े को नटवर के घर

छोड़कर गया था। अब यह मेरी गाय पाने के लिए झूठ बोल रहा है।''

आखिर फैसला यह हुआ कि भला कोई अपनी गाय किसी के घर यूं ही कैसे बांधकर जा सकता है ? फिर नटवर जैसा आदमी एक गाय के लिए झूठ नहीं बोल सकता। इस तरह गाय नटवर को मिल गई। धरमा मुखिया और पंचों का मुंह ताकता ही रह गया।

अपनी चालाकी की कामयाबी पर नटवर खूब प्रसन्न था। उसने सोचा— 'मैं आसानी से किसी को भी झांसा दे सकता हूं। यदि मैं इसी तरह लोगों को ठगता रहा,तो एक दिन गांव का सबसे धनी आदमी भी बन सकता हूं।'

कुछ दिन बाद नटवर ने अपनी लड़की की शादी की। शादी में खर्चा काफी हुआ। उस पर लोगों का कर्ज भी चढ़ गया। उसे कर्जा चुकाने की चिंता सताने लगी।

एक दिन सुबह-सुबह वह गिरधर के घर पहुंचा। गिरधर रोज सुबह शहर जाता और शाम को



लौटता था। नटवर ने कहा—''गिरधर भाई, आज तो मेरा भी एक काम कर देना।''

—''कर दूंगा। कहो, क्या काम है ?''

—''इस थैली में दो हजार रुपए हैं। तुम ये रुपए हरिहर सेठ तक पहुंचा देना। मैं अपनी लड़की की शादी में उससे सामान लाया था।''

''ठीक है भैया, पहुंचा दूंगा।''—थैली लेते हुए गिरधर ने कहा।

ज्यों ही नटवर वापस लौटने लगा, तो गिरधर ने कहा—''ठहरो भैया। तुम्हारे सामने ही रुपए गिन लेता हूं। कहीं कम-ज्यादा हुए,तो बाद में परेशानी होगी।''

नटवर बोला—''तुम भी कैसी बात करते हो गिरधर ? थैली में मैंने अभी-अभी दो हजार रुपए गिनकर रखे हैं। बस, तुम इन्हें हरिहर तक पहुंचा देना।''

पर गिरधर ने थैली खोल ही ली। उसने देखा उसमें ऊपर कुछ नोट थे और बाकी कोरे कागज। गिरधर गुस्से से बोला—''तुम मुझे ठगना चाहते थे ?''

—''नहीं गिरधर,ऐसी बात नहीं।''

—''मैं समझ गया। तुमने धरमा को भी इसी तरह चालाकी से ठगा है।'' दोनों में तू-तकरार हुई। मामला मुखिया तक पहुंचा।

शाम को पंचायत बैठी। नटवर गर्दन लटकाए चुपचाप बैठा था। मुखिया ने कई बातें पूछीं, पर वह कुछ न बोला।

अंत में पंचों से सलाह-मशविरा कर मुखिया बोला—''नटवर चालाकी से गिरधर से दो हजार रुपए ठगना चाहता था। पर सफल नहीं हुआ। कुछ दिन पहले इसने झूठ-फरेब के बल पर धरमा की गाय हड़प ली थी। अब इसे गाय धरमा को लौटानी होगी। दो हजार रुपए जुर्माना भी देना होगा।''

नटवर ने पंचायत का फैसला मान लिया। पर अब उसने किसी को न ठगने का पक्का इरादा भी कर लिया था। ●

नानी, सच बतलाना

वह जो बुढ़िया दादी, चंदा
के घर चरखा काता करती,
लुढ़क किसी दिन गिर जाएगी—
छत पर, क्या वह कभी न डरती।
कब उसको छुट्टी मिलती है,
कब वह खाती होगी खाना।

और जरा यह भी तो सोचो
जब चंदा छोटा हो जाता,
बुढ़िया तो क्या, उसके अंदर
चरखा तक भी नहीं समाता।
लटकी-लटकी करती होगी,
कैसे सोना और नहाना।

उसके भी तो कोई बेटे—
बेटी, नाती, पोते होंगे
उसे खोजते फिरते होंगे

चुपके-चुपके रोते होंगे।
उनको कौन सुनाता होगा
परियों वाला सुंदर गाना।

इतनी दूर गई क्यों आखिर
ऐसी भी थी क्या मजबूरी,
नानी, उसको यहां बुला लो
हम ही दे देंगे मजदूरी।
बहुत थकी होगी बेचारी,
थोड़े दिन आराम कराना।

—योगेन्द्रकुमार लल्ला

महको-महकाओ

एक फूल बोला, मुसकाया—
महको-महकाओ।

मैं हूं फूल कि कांटों में भी
खिलता-मुसकाता,
हो मौसम विपरीत भले पर
कभी न घबराता।
एक लहर बोली, मुसकाई—
लहरो-लहराओ।

मेरा नाम लहर, मैं नित ही
आगे बढ़ती हूं,
कभी भूल से भी आपस में
सुनो, न लड़ती हूं।

एक किरन बोली, मुसकाई—
चमको-चमकाओ।

बाग-बगीचों नदियों-झीलों
चमक रही चम-चम,
फूलों-लहरों को दुलरा के
नाच रही छम-छम!
फूल-लहर-किरन का जीवन
समझो-समझाओ।

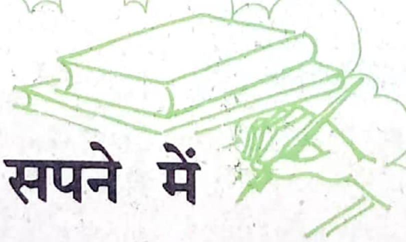
— रामसेवक शर्मा



मच्छर मामा

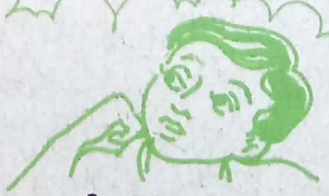
मच्छर मामा, समझ गया हूं
खूब तुम्हारी मैं चतुराई,
मुझे समझकर छोटा बच्चा
तुमने जो तरकीब लगाई।
पहले मेरे सिरहाने
मीठा संगीत सुनाते हो,
शायद कोई लोरी गाकर
मीठी नींद सुलाते हो।
मेरे सोते ही तुम अपना
असली रूप दिखाते हो,
मेरा ताजा खून कीमती
चुपके से पी जाते हो।
लेकिन अब संगीत तुम्हारा
नहीं करेगा कोई असर,
बड़े मजे से सोऊंगा मैं
मच्छरदानी के अंदर।

— लक्ष्मीशंकर वाजपेयी



सपने में

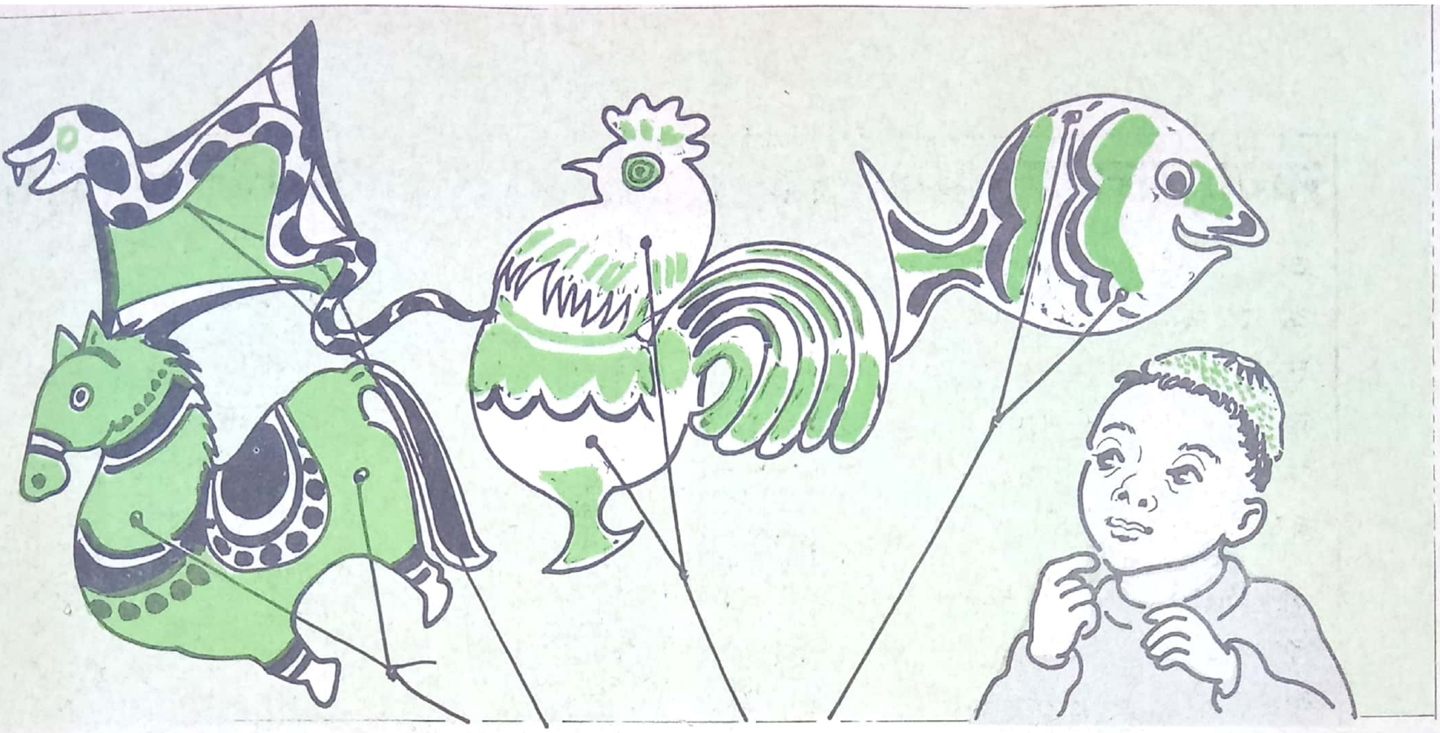
आज हो गया था मैं लेखक
एक सुहाने सपने में।
मेरे साथ घटीं सपने में
सबकी सब रोचक घटनाएं,
पत्र-पत्रिकाओं में मेरी,
छपने लगीं खूब रचनाएं।
खूब मजा आया था मुझको
अपनी रचना छपने में।
पढ़-पढ़कर रचनाएं मेरी
दूर-दूर से चिट्ठी आई,
किसी-किसी ने लिखी प्रशंसा
और किसी ने लिखी बधाई।
पढ़कर चिट्ठी फूला नहीं
समाया था अपने में।



तभी आंख खुल गई अचानक
सारी खुशी हुई छूमंतर,
सच्चे सुख, सपनों के सुख में
केवल एक यही है अंतर।

सपनों की हर बात भली
लगती है कहने-सुनने में।

— रामानुज त्रिपाठी



आकाश की सैर

—डा. उषा सिंहल

दो हजार साल पुरानी बात है। चीन के एक गांव में एक बच्चा आंगन में बैठा था। उसके दिमाग में तरह-तरह की बातें आ रही थीं। सहसा उसका चेहरा खिल उठा। लड़का अपने पिता के पास गया। बोला—"पिता जी ! मैं भी काम सीखूंगा।" पिता को अपने बेटे के यह कहने पर बहुत खुशी हुई। पर लड़का अभी छोटा था। उसकी उम्र काम सीखने की नहीं, बल्कि खेलने-कूदने की थी। पिता ने उत्तर दिया—"हां- हां, तुझे भी काम सिखलाऊंगा, पर जरा तू बड़ा हो जा। अभी तेरी उम्र काम सीखने की नहीं है।" लेकिन लड़का नहीं माना। वह पिता के साथ काम पर जाने लगा।

लड़के के पिता बढ़ई थे। वह मेहनत से साफ-सुथरा काम करते। हमेशा समय पर काम पूरा करते। सब लोग उनकी इन विशेषताओं की तारीफ करते। लड़का जब अपने पिता की तारीफ सुनता, तब वह फूला न समाता। वह मन ही मन संकल्प करता कि मैं भी पिता जी जैसा बढ़ई बनूंगा। लोग मेरी भी तारीफ करेंगे। कभी सोचता कि कोई ऐसी चीज बनाऊंगा कि लोग हैरान हो जाएंगे।

वसंत का मौसम था। शाम के समय लोग आकाश में पतंग उड़ा रहे थे। कोई पतंग मछली जैसी थी, कोई मुर्गे जैसी, किसी का आकार सांप जैसा था, तो किसी का घोड़े जैसा।

पतंगें ज्यों-ज्यों ऊपर चढ़तीं, त्यों-त्यों बच्चों की खुशी बढ़ती जाती। लड़का सोच रहा था कि अगर इन पतंगों की तरह पिता जी भी आकाश की सैर कर सकते, तो कितना अच्छा रहता। इसके बाद से लड़के का मन इसी उधेड़बुन में रहने लगा।

लड़का तरह-तरह के प्रयोग करने लगा। एक दिन वह इस नतीजे पर पहुंचा कि लकड़ी की ऐसी पतंग जरूर बनाई जा सकती है, जिस पर बैठकर उसके पिता आकाश की सैर कर सकते हैं। वह पतंग बनाने में जुट गया।

एक दिन लड़के ने ऐसी पतंग बना ही डाली। फिर पिता के पास जाकर बोला—"पिता जी ! मैंने एक ऐसी पतंग बनाई है जिस पर बैठकर आप आकाश की सैर कर सकते हैं।" पिता को बच्चे की बात पर एकदम यकीन आ गया। इसका कारण यह था कि इससे पहले वह लकड़ी की ऐसी चिड़िया बना चुका था जो आकाश में फुर्र से उड़ गई थी। कुछ दिन पहले उसने आकाश में उड़ने वाला लकड़ी का कबूतर भी बनाया था। यों पिता की इच्छा आकाश में उड़ने की नहीं थी, किंतु लड़के के बार-बार जिद करने

और अपने बच्चे का मन रखने के लिए वह मान गए। लड़के ने अपन पिता को पतंग के सहारे आकाश की सैर के लिए भेज दिया।

पिता को आकाश में सैर करते-करते काफी देर हो चुकी थी। वह बहुत थक चुके थे। वह थोड़ी देर आराम करके घर वापस लौटना चाहते थे। इसलिए उन्होंने अपनी पतंग एक गांव में उतार ली।

कुछ लोगों ने एक आदमी को पतंग के सहारे नीचे उतरते देखा। वे डर के मारे चीख पड़े। चीख सुनकर आसपास से बहुत से लोग दौड़े चले आए। सबने यही सोचा कि शायद कोई राक्षस आकाश से पृथ्वी पर उतर आया है। बस फिर क्या था ,सब लोगों ने पत्थर मारने शुरू कर दिए। उस आदमी ने यह समझाने की बहुत कोशिश की कि वह राक्षस नहीं है, बल्कि उन्हीं की तरह एक गांव में रहता है। लेकिन उसकी बात किसी ने नहीं सुनी। वे तब तक पत्थर मारते रहे, जब तक वह मर नहीं गया।

पिता के मरने की खबर लड़के तक पहुंची। वह गुस्से से भर उठा। उसने बदला लेंने की ठान ली। लकड़ी का एक पुतला बनाया। पुतला क्या था, ऐसा लगता था मानो आकाश से कोई देवता ही पृथ्वी पर उतर आया हो। फिर उस पुतले की बांह का रुख उस गांव की ओर कर दिया,जहां के लोगों ने उसके पिता को मौत के घाट उतारा था।

लड़के की कोशिश बेकार नहीं गई। उस गांव में हर साल भयंकर अकाल पड़ने लगा। इस तरह तीन साल बीत गए। बच्चे भूख से बिलबिलाने लगे। बड़े-बूढ़ों में चलने-फिरने की शक्ति समाप्त हो गई।

एक दिन गांव में एक बड़े महात्मा आए। लोगों ने उनके पैर छुए। अकाल पड़ने का कारण पूछा। उन्होंने कहा—"आप सबने मिलकर एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या की थी। इससे ईश्वर नाराज हो गया है। उसने एक देवता को पृथ्वी पर भेज दिया है। वह बादलों को इधर आने और वर्षा करने से रोकता रहता है। इसीलिए आप लोगों के यहां अकाल पड़ रहा है। जब तक ईश्वर का कोप दूर नहीं होगा, तब तक अकाल पड़ता रहेगा।"



लोगों ने पूछा कि क्या इससे बचने का कोई उपाय नहीं है। महात्मा ने जवाब दिया—"हां, उपाय भी है। वह देवता एक पुतले के रूप में उस गांव में खड़ा है,जहां का रहने वाला वह आदमी था। वह पुतला उसके लड़के ने बनाया है। आप सब लोग एक साथ उस लड़के के पास जाकर सच्चे दिल से अपना अपराध स्वीकार करो। लड़के से दया करने की विनती करो। अपने बाल-बच्चों के प्राणों की भीख मांगो। यदि वह तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ले, तो अकाल समाप्त हो जाएगा।" यह कहने के साथ ही महात्मा ने उस गांव का पता भी बता दिया।

गांव के सभी लोग उस लड़के के पास गए। रोते हुए यह विनती की कि उनसे जो भारी अपराध हो गया है, उसे क्षमा किया जाए। उनके अपराध का दंड निर्दोष बच्चों को न दिया जाए। लड़के को दया आ गई। उसने पुतले के शरीर से इशारा करने वाले हाथ को काटकर अलग कर दिया। फिर लोगों से कहा—"आप लोग अब अपने-अपने घर जाइए।"

लोगों ने सिर झुकाकर लड़के को नमस्कार किया। एक बार फिर अपने बाल-बच्चों के प्राणों की भीख मांगी। इसके बाद वे अपने गांव की ओर चल दिए। गांव पहुंचने से पहले ही बारिश शुरू हो गई। लोग भीगते-भागते अपने गांव पहुंचे।

उस साल खूब बढ़िया फसल हुई। पिछले तीन सालों की कसर पूरी हो गई।

आगे चलकर यह बच्चा लू पान के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आज भी चीन के बढ़ई उसे अपना देवता मानते हैं। काम शुरू करने से पहले उसकी पूजा करते हैं।

(चीनी लोककथा)


हिडिंबा का बेटा
पांडव मां के साथ वन में थे। एक दिन
थक गए.... दो घड़ी विश्राम...
इस घनघोर जंगल में !!
चिंता नहीं। मैं जागकर सबकी रक्षा करूंगा।
सब वृक्ष के नीचे सो गए। वृक्ष पर रहता था हिडिंब राक्षस।
बहन हिडिंबा ! तुम मेरे लिए इनके प्राण हरो। भूख लगी है।
हिडिंब, तुम ऐसा काम सदा मुझ से क्यों कराते हो ?
हू...हुआ...हू...हुआ...
हिडिंबा पांडवों के प्राण लेने आई, किंतु भीम को देख....
कितने बलशाली। मेरे पति बनने योग्य। मान जाएं तो हिडिंब से पीछा छूटे....
सब कुछ भूल उसने भीम को हिडिंब के बारे में बताया तो...
तेरे दुष्ट स्वभाव से तेरी बहन भी दुखी है। ले संभल !
हिडिंब मर गया....



भीम ने मां की अनुमति ले हिडिंबा से विवाह कर लिया।
सुखी रहो!
हिडिंबा आकाश में उड़ सकती थी। भविष्य जान सकती थी। वह पांडव-परिवार को लेकर....
मैं आपको शालिहोत्र मुनि के आश्रम में ले जाती हूं। वहां व्यास आएंगे। आपके कष्ट दूर होंगे...
कुछ समय बीतने पर हिडिंबा मां बनी...
इसके सिर पर बाल नहीं हैं। अतः इसका नाम घटोत्कच....
कितना बलशाली! मेरा बेटा!
वन में इसका लालन-पालन कैसे होगा!
पांडवों ने हिडिंबा को ऐसी जगह जाने को कहा, जहां घटोत्कच का पालन-पोषण ठीक हो सके...
इच्छा तो नहीं, पर घटोत्कच के लिए...। जब भी आप याद करेंगे, हम आ जाएंगे।
इसे सारी विद्याएं सिखाना। उचित समय आने पर बुला लेंगे।


वर्षों बाद महाभारत का युद्ध शुरू हुआ। कौरव पांडवों पर भारी पड़ रहे थे। एक दिन....
अब पुत्र घटोत्कच को बुलाने का समय आ गया...
घटोत्कच !
पुत्र घटोत्कच !!
कुछ ही देर में घटोत्कच एक बालक के साथ वहां...
मेरा पुत्र ! इतना बलिष्ठ ! इतना विशाल !! तुम्हारी मां कहां है ? यह बालक कौन है !
मां का देहांत हो गया पिताश्री ! यह मेरा बेटा अंजनपर्वा है....
दादाश्री, हम कौरवों को समूल नष्ट कर देंगे....
हिडिंबा के बारे में जान भीम शोकातुर हो उठे। युधिष्ठिर ने उन्हें ढाढस बंधाया। घटोत्कच को सेनापति बनाकर रण-क्षेत्र में भेजा।
रुको कायरो ! हा...हा...हा...
ठहरो ! हा...हा...हा...हा.,,
युद्ध के चौदहवें दिन अश्वत्थामा ने अंजनपर्वा को मार गिराया। पुत्र शोक से व्याकुल घटोत्कच मायावी युद्ध करने लगा...
अपने बेटे की हत्या का बदला....सब नष्ट कर दूंगा...


उस दिन रात्रि में भी युद्ध चलता रहा...
कर्ण, इंद्र की दी हुई शक्ति घटोत्कच पर चला दो, वर्ना हम सब नष्ट हो जाएंगे....
नहीं, वह केवल अर्जुन का वध करने के लिए हैं। मैंने प्रण किया है....
श्रीकृष्ण जानते थे, उस शक्ति से अर्जुन जीवित नहीं बचेगा। अतः उन्होंने...
वीर घटोत्कच, कर्ण को मार डालो। उसी के संकेत पर तुम्हारे पुत्र का वध हुआ है....
मैं उसे मार डालूंगा....
घटोत्कच कर्ण पर टूट पड़ा। कर्ण का रथ चूर-चूर कर दिया। सारथि को मार डाला। और कोई चारा न देख कर्ण ने वह अमोघ शक्ति...
मैं विवश हूं। अर्जुन के लिए रखी शक्ति इस पर चलानी पड़ रही है....
हे मां! हे तात!!
घटोत्कच के वध का समाचार सुन...
हा, मेरा पुत्र! अब मैं राज्य लेकर क्या करूंगा!
जो हुआ, ठीक हुआ भीम! उससे अर्जुन का वध करना था कर्ण को। तुम्हारा पुत्र न होता, तो अनर्थ हो जाता.... वह मरा नहीं, उसने महान बलिदान दिया है....
बलिदानी घटोत्कच! तुम्हें मेरा नमन....

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष : ३० अंक :४ फरवरी '९४, नई दिल्ली, माघ-फाल्गुन, शक सं. १९१५

अनूठी बाल-विज्ञान कांग्रेस

अपने आसपास देखें और जानें

नई दिल्ली। क्या बच्चे भी वैज्ञानिकों की तरह खोज कर सकते हैं ? हाल ही में दिल्ली में हुई प्रथम राष्ट्रीय बाल-विज्ञान कांग्रेस ने सभी को चकित कर दिया। देश के तीन सौ से ज्यादा बाल वैज्ञानिकों ने इसमें अपने खोज-पत्र पढ़े। सम्मेलन का मुख्य विषय था—'अपने पर्यावरण को जानिए।'

तीन दिन की राष्ट्रीय बाल-विज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन टेक्नोलाजी राज्यमंत्री श्री भुवनेश चतुर्वेदी ने किया। प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. एस. जेड. कासिम, डा. वसंत गोवारीकर और डा. नरेंद्र सहगल ने भी बाल वैज्ञानिकों को वैज्ञानिक सोच के बारे में बताया।

बाल वैज्ञानिकों ने अपने आस-पास के पेड़-पौधों के बारे में खोज-पत्र पढ़े। विज्ञापनों का असर, समाचार-पत्रों और रेडियो टी. वी. में विज्ञापन की खबरें, अंधविश्वास का सर्वेक्षण, अपने आस-पास पक्षियों का अवलोकन और पेयजल आदि विषयों पर भी खोज-पत्र पढ़े गए।

राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में बाल वैज्ञानिकों ने मांग की कि इस तरह की गतिविधियां लगातार चलाने के लिए कोई संस्था जिम्मेदारी ले। बाल वैज्ञानिक ही विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता करें। उनके खोज पत्र छापने की व्यवस्था हो। उन्हें मन मरजी के विषयों पर खोज करने की छूट हो।

बाल-विज्ञान कांग्रेस का समापन वन और पर्यावरण राज्यमंत्री श्री कमलनाथ ने किया। उन्होंने बच्चों के खोज-पत्रों की तारीफ की। मंत्री जी ने सुझाव दिया कि बच्चे लौटकर 'पर्यावरण क्लब' बनाएं।

राष्ट्रीय बाल-विज्ञान कांग्रेस का आयोजन देश भर में विज्ञान के प्रचार-प्रसार से जुड़े ३९ स्वयंसेवी संगठनों की संस्था एन. सी. एस. टी. सी.-नेटवर्क ने किया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, पर्यावरण मंत्रालय विज्ञान और टेक्नोलाजी विभाग ने इसमें मदद दी।

अब राष्ट्रीय बाल-विज्ञान अकादमी बनाने पर भी विचार किया जा रहा है।

नया खेल परिसर

फरीदाबाद। यहां नया खेल परिसर बनकर तैयार हो गया है। इस पर पचीस लाख रुपए खर्च हुए हैं। इसे पूरे होने में तेरह वर्ष लगे।

समुद्र के नीचे

पेरिस। इंग्लिश चैनल समुद्र के नीचे सुरंग बनकर तैयार हो गई है। यह फ्रांस और इंग्लैंड को जोड़ेगी। इसमें रेल गाड़ियां चलेंगी।

एक भारतीय भाषा जरूर पढ़ें

मारीशस। यहां हिंदी सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में सैकड़ों हिंदी जानने वाले उपस्थित थे। बाईस देशों से आए विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए। सम्मेलन का उद्घाटन मारीशस के प्रधानमंत्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ ने किया। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि मारीशस सरकार चाहती है कि यहां के लोग एक भारतीय भाषा जरूर पढ़ें। इससे वे अपनी संस्कृति से हमेशा जुड़े रहेंगे।

आदिमानव की गुफाएं

भोपाल। मध्य प्रदेश के घने जंगलों में तेइस गुफाएं मिली हैं। इनमें आदि मानव रहा करते थे। इनकी दीवारों पर मनुष्य और जानवरों के चित्र बने हैं। चित्र चूने और गेरू से लाल और सफेद रंगों से बने हैं।

सबके लिए शिक्षा

नई दिल्ली। नौ देशों का शिक्षा सम्मेलन हुआ। इसमें भारत सहित चीन, इंडोनेशिया, मिस्र, नाइजीरिया, बांग्लादेश, पाकिस्तान, ब्राजील तथा मैक्सिको के नेताओं ने भाग लिया। सम्मेलन में संकल्प किया गया कि सारे बच्चों को बुनियादी शिक्षा उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही लड़कियों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाएगा। शिक्षा के लिए अधिक साधन जुटाए जाएंगे। शिक्षा संबंधी मसलों पर ये नौ देश आपस में सहयोग भी करेंगे।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

बच्चों का अखबार
नंदन बाल समाचार

सारे जीव-जंतु हमारे मित्र बनें। — अथर्ववेद

पुराने को आदर

इंडोनेशिया छोटा-सा देश है। वहां मुसलमान अधिक हैं। लेकिन वहां नगरों में हिन्दू देवताओं की मूर्तियां जगह-जगह देखने को मिलती हैं। सड़कों और जगहों के अनेक नाम भी संस्कृत में हैं। इतना ही क्यों, बहुत-से लोग अपने बच्चों के लिए भी हिन्दी या संस्कृत के सुंदर नाम चुनते हैं। रामायण और महाभारत को मंच पर खेलते हैं। ऐसा अनोखा प्रेम है उन्हें अपनी संस्कृति से।

भारत में ऐसा क्यों नहीं है? हमारे देश में राजनेताओं की मूर्तियां ही ज्यादा लगाई जाती हैं। देवी-देवता या अपनी संस्कृति के लिए कुछ हो तो अक्सर शोर मचने लगता है। हम विदेशी या यूरोप की चीजों को अपना कर आधुनिक बनना चाहते हैं। जो कुछ पुराना है, उसे आदर क्यों नहीं देते?

शाबास रामसिंह

नई दिल्ली। एक बूढ़ा यात्री गाड़ी से उतरा। अचानक एक लुटेरा आया। उसका थैला छीनकर भाग गया। यात्री परेशान हो उठा। उसी समय सिपाही रामसिंह ने उस लुटेरे को थैला लिए पटरियों पर भागते हुए देखा। उसने लुटेरे को पकड़कर थैला वापस ले लिया। थैला उसने पुलिस कंट्रोल रूम में रख लिया। बहुत देर बाद वही यात्री पुलिस कंट्रोलरूम में आया। उसने अपना थैला पहचान लिया। सिपाही ने थैला उस यात्री को वापस कर दिया। थैले में अन्य सामान के अलावा ढाई लाख रुपए भी थे।

गाय-बैलों के चित्र

पेइचिंग। चीनी चित्रकार हैं तिंग त्वो। वह खासतौर से बैलों के चित्र बनाते हैं। बैलों का अध्ययन करने के लिए वह दूर-दराज के गांवों तक गए हैं। भारत में गाय को सबसे पवित्र पशु माना जाता है। इसलिए वह भारत आकर गाय-बैलों के चित्र बनाना चाहते हैं।

तितलियां

पेनांग। मलेशिया का यह शहर द्वीपों और तटों के लिए प्रसिद्ध है। अब यहां तितलियों का अभयारण्य और विशेष किस्म की चिड़ियों के लिए पार्क बनाए गए हैं। एक साथ हजारों रंग-बिरंगी उड़ती तितलियां बहुत सुंदर लगती हैं। यहां करीब सौ प्रजातियों की तितलियां हैं।

साहसी अतिरिक्त जिलाधीश

देहरादून। अतिरिक्त जिलाधीश तनवीर जफर अली अपनी जिप्सी में जा रहे थे। तभी उन्होंने वायरलैस पर संदेश सुना कि कुछ लुटेरे बैंक से पौने दो लाख रुपए लूटकर भाग रहे हैं। गाड़ी का नम्बर भी सुना। उन्होंने सामने से उस गाड़ी को आते देखा। उन्होंने अपनी जिप्सी बीच सड़क में खड़ी कर, लुटेरों का रास्ता रोक दिया। कुछ देर में पुलिस आ पहुंची। तनवीर अली ने अपनी जान की भी परवाह नहीं की।



बच्चों के साहित्यकार शमशेर अ. खान को सोनिया स्मृति पुरस्कार।

प्राकृत भाषा कंप्यूटर में

बंगलूर। प्राकृत भाषा में ताड़ के पत्रों पर लिखे ग्रंथों को सुरक्षित रखने में कंप्यूटर की मदद ली जाएगी। इन पांडुलिपियों में जो कुछ लिखा है, उसे कंप्यूटर में भर दिया जाएगा। प्राकृत भारत की बहुत पुरानी भाषा है।

ह्वेलों के गाने

सिडनी। नौ सेना के इंजीनियर फ्रेंक वाटलिंगटन ने ह्वेलों को गाते सुना था। उसका कहना है कि ह्वेलें समूह में गाती हैं। उन्हें अपने गाने जस के तस याद रहते हैं। उसने इन गानों को १९६८ में ही रिकार्ड कर लिया था। मगर इनके बारे में किसी को बताया नहीं। उसे डर था कि ये गाने यदि शिकारियों के हाथ पड़ गए तो इन्हें बजाकर बड़ी संख्या में ह्वेलों को आकर्षित करेंगे। उन्हें मार डालेंगे।

तेरह बाल साहित्यकार सम्मानित

कानपुर। भारतीय बाल कल्याण संस्थान ने इस वर्ष तेरह बाल साहित्यकारों को सम्मानित किया है। ये हैं—कु. कमल मुसद्दी; सुरेखा पाणंदीकर; सावित्री परमार; डा. कृष्णा नागर; पद्मा चौगांवकर; अनंत पै; विश्वनाथ अय्यर; डा. सुरेंद्र विक्रम; जगदीशचंद्र शर्मा; राजेश उत्साही; विजयप्रकाश त्रिपाठी; श्री यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' और मंगल सक्सेना।

हाथियों का अनाथालय

कैंडी। श्रीलंका में हाथियों का अनाथालय है। यहां घायल और बीमार हाथियों को लाया जाता है। हर साल यहां करीब दस हाथी लाए जाते हैं। यहां इनका इलाज किया जाता है। हाथियों को पीने के लिए दूध भी दिया जाता है। यहां से हाथियों को देश-विदेश को उपहार स्वरूप भी दिया जाता है। हाथी मंदिरों में पूजा करने और उत्सवों में भाग लेने के लिए भी भेजे जाते हैं।

चिड़ियां कितनी

बम्बई। यहां की नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी ने चिड़ियों की गिनती का काम शुरू किया है। भारत की चिड़ियों की संख्या पता लगाने का यह पहला प्रयास है। स्वर्गीय सालिम अली ने पूरा जीवन भारतीय चिड़ियों के बारे में जानकारी एकत्र करने में लगा दिया। १९९६ में डा. अली की जन्मशती होगी। सोसायटी के अधिकारियों का कहना है कि तब तक वे चिड़ियों की गिनती पूरी करने की कोशिश करेंगे।

जूडो में पहली बार

नई दिल्ली। एशियाई जूडो चैंपियनशिप में पहली बार भारत को रजत पदक मिला है। मकाओ में हुई इस चैंपियनशिप में दिल्ली की पूनम चोपड़ा को यह पदक मिला।

भूखे चूहे

मास्को। जहां लाल बत्ती होने पर बड़ी-बड़ी गाड़ियां रुक जाती हैं, वहां भला चूहों को कौन रोक सकता है। ट्रैफिक पुलिस चूहों से परेशान है। चूहे भूखे हैं। जोर से भूख लगने पर वे हरी-लाल बत्तियों के तार खा जाते हैं। जब तक ट्रैफिक विभाग इन तारों को ठीक करता है, चूहे दोबारा इन्हें काट डालते हैं।

ऊंटनी रे ऊंटनी

मस्कट। बिट अल शहीन नाम की ऊंटनी ने पांच किलोमीटर का रास्ता आठ मिनट, सोलह सैकेंड में तय कर लिया। ऊंटनी के मालिक को एक कार इनाम में दी गई। एक आदमी ऊंट दौड़ देख रहा था। उसे यह ऊंटनी इतनी पसंद आई कि मालिक को मुंहमांगी कीमत देकर उसे खरीद लिया। कीमत थी—एक लाख, चौंतीस हजार डालर।

खाना मत दो

लंदन। हैम्फ्री नाम है उस बिल्ले का। वह मंत्रिपरिषद की बैठकों में उपस्थित रहता है। यह बिल्ला लावारिस पड़ा मिला था। इसका बीमा भी कराया गया है। कुछ दिन पहले यह बिल्ला बीमार पड़ गया। पता चला कि सब लोग उसे प्यार से कुछ न कुछ खिलाते रहते हैं। अधिक खाने से ही वह बीमार हुआ था। तब नोटिस बोर्ड पर लिखा गया कि कृपया बिल्ले को भोजन न दें।

सूरज के बारे में

नई दिल्ली। सूरज के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। सूरज पर एक किताब छपी है। पुस्तक अंग्रेजी में है। नाम है — 'द सन'। लेखक हैं — मदनजीत सिंह। सूरज के बारे में दुनियांभर के धर्मों और संस्कृति में अनेक कथाएं हैं। पुस्तक में कहानियों के साथ-साथ सूरज के वैज्ञानिक पक्षों के बारे में भी बताया गया है। मदनजीत सिंह युनेस्को में काम करते हैं।

हनुमान जी की प्रतिमा

राउरकेला। जय हनुमान ट्रस्ट ने हनुमान जी की विशाल मूर्ति बनवाई है। समझा जाता है कि यह देश में हनुमान जी की सबसे ऊंची प्रतिमा है। प्रतिमा की ऊंचाई ७४ फीट ९ इंच है।

नन्हे समाचार

□ थाईलैंड के लाम सई नगर में बंदरों का एक विद्यालय है। वहां उन्हें नारियल के ऊंचे पेड़ों से फल तोड़ने की ट्रेनिंग दी जाती है। प्रशिक्षण पाने वाले बंदरों को व्यापारी मुंहमांगा दाम देकर खरीदते हैं।

□ केशवन गुरुवयूर मंदिर का प्रसिद्ध हाथी था। कुछ वर्ष पहले उसकी मृत्यु हो गई। बाद में केशवन की प्रतिमा लगाई गई। उसकी निधन तिथि वाले दिन तीस हाथियों ने अपने साथी की प्रतिमा पर फूलमालाएं चढ़ाईं।

□ न्यूयार्क प्रदेश में रहती हैं डिलाने बहनें। एलिजाबेथ, उम्र १०२ और साराह, उम्र १०४ वर्ष। उन्होंने आत्मकथा लिखी है—डिलाने बहनों के पहले सौ साल। पुस्तक खूब बिक रही है।

□ बेलग्रेड के चिड़ियाघर में आने वाले दर्शकों से विचित्र फीस वसूली जाती है—ईंटें, सीमेंट और आलू तथा फल। ईंटें हैं पशुओं के नए बाड़े बनाने के लिए और खाद्य सामग्री उनकी भूख मिटाने के लिए।

□ एक हैं चित्रकार सुबीर सेन। लंदन में रहते हैं। उन्होंने वन्य जीवों के कुछ चित्र बनाए, फिर उनकी प्रदर्शनी लंदन के चिड़ियाघर में लगाई।

□ अमरीका में डेल मिलर ने लाटरी टिकट खरीदा। फिर उसे कूड़े में फेंक दिया। उस पर ३५ करोड़ रुपए का इनाम निकल आया। बेचारा डेल मिलर।

□ लंदन पुलिस के पास चोरों से बरामद बहुत-सी चीजें जमा हो गईं थीं। उन्होंने उनकी प्रदर्शनी लगाई। लोगों से कहा—वे आएं और अपना खोया सामान पहचान कर ले जाएं।

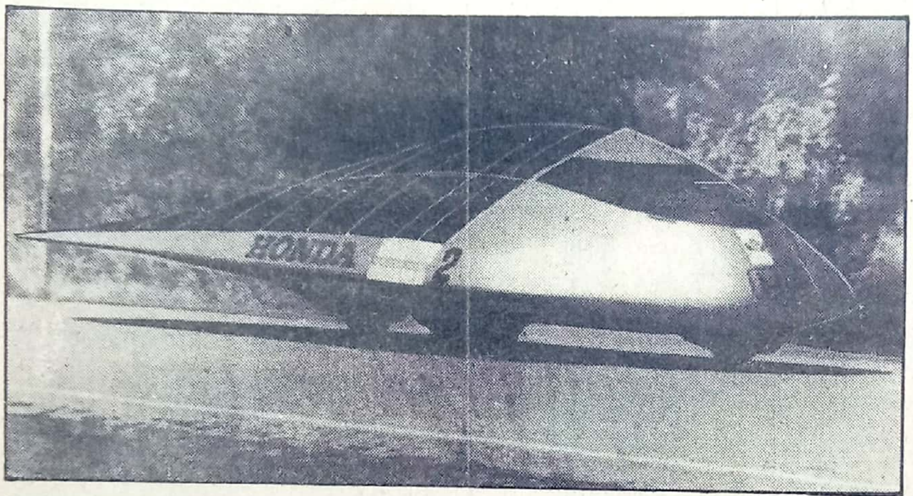
□ केरीना और जेम्स ग्रीनवुड पति-पत्नी हैं। वे घोड़ों पर दुनिया की परिक्रमा करने निकले हैं। वे भारत भी आए थे।

सचित्र समाचार





← के. के. बिड़ला फाउंडेशन की ओर से जाने-माने नाटककार विजय तेंदुलकर को सरस्वती सम्मान, कवि गिरिजाकुमार माथुर को व्यास सम्मान और लेखक डा. रघुवंश को शंकर पुरस्कार।



↑ सपन—यह नाम है सौर ऊर्जा से चलने वाली इस कार का। आस्ट्रेलिया में सौर ऊर्जा से चलने वाली कारों की दौड़ में यह प्रथम आई।



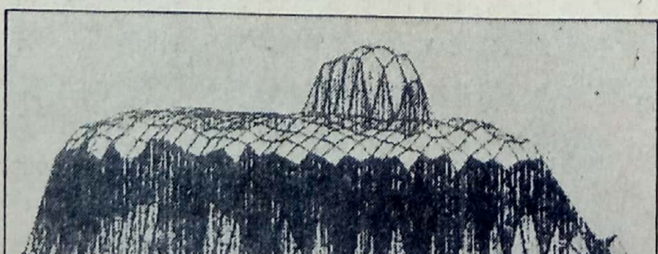
↑ सिल्वी फ्रेचेटी ! खुशी का क्या ठिकाना। १९९२ के बार्सिलोना ओलम्पिक में जो स्वर्ण पदक मिलना था, वह अब मिला। ओलम्पिक समिति ने अपनी गलती भी मानी।



इटली की अभिनेत्री गिना लोलो ब्रिगिडा युनिसैफ की तरफ से सरायेवो-बच्चों के लिए पैसा इकट्ठा करने के लिए सर्कस के एक घोड़े के साथ। ←

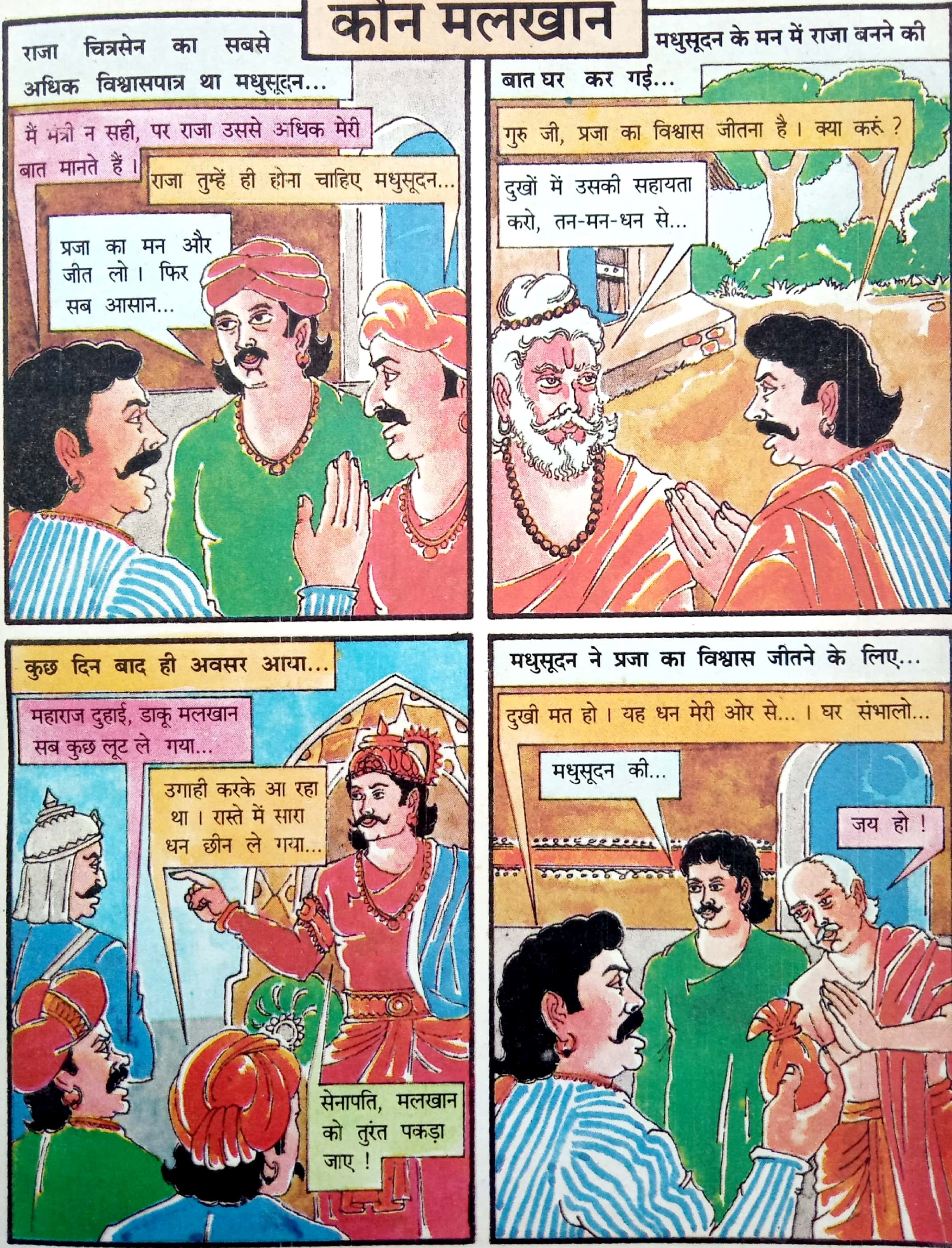
दक्षिण अफ्रीका के श्री नेल्सन मंडेला और एफ. डब्ल्यू. डी. क्लार्क को ओस्लो में १९९३ का नोबल शांति पुरस्कार दिया गया। ↓



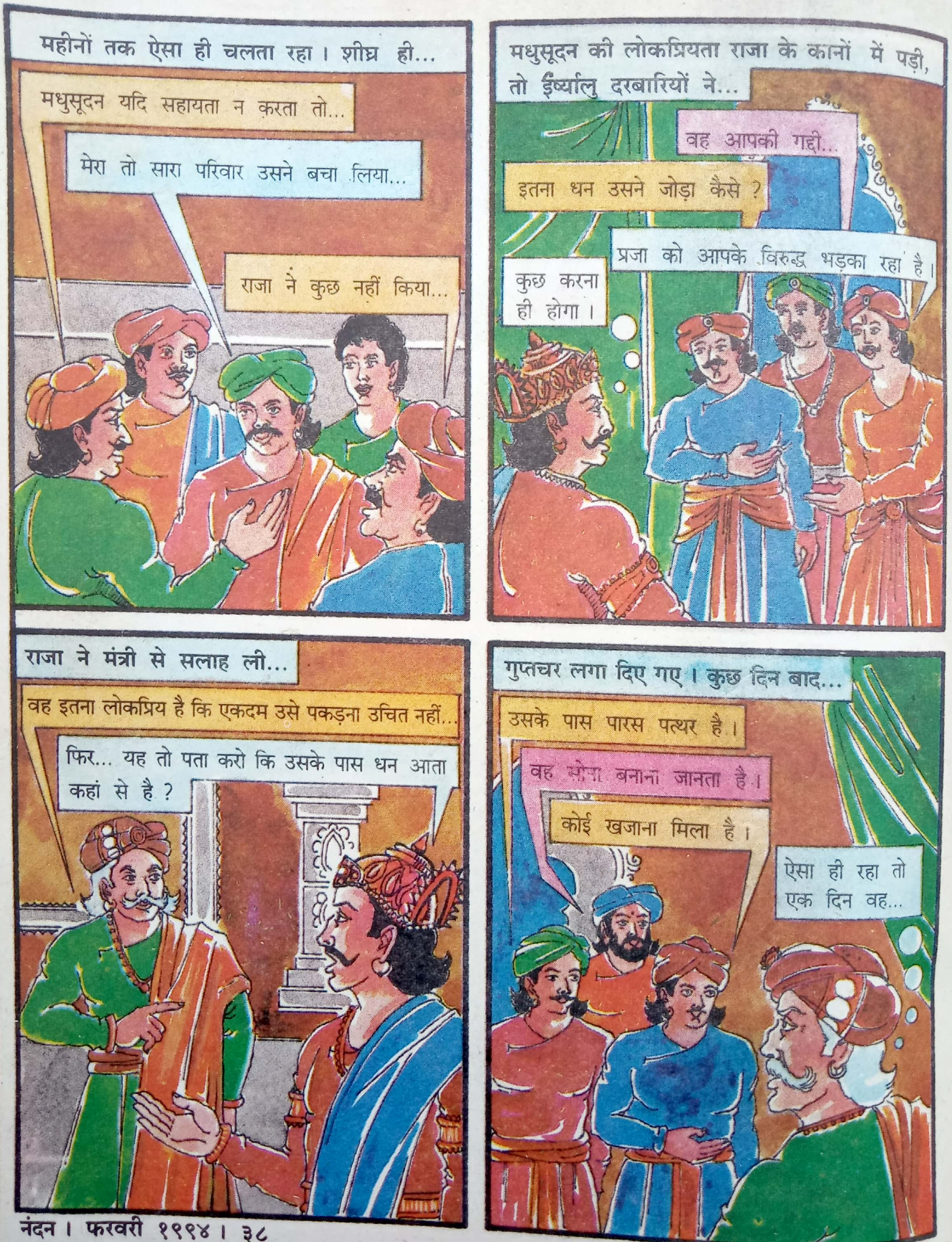


↑ गोवा के पास समुद्र में वैज्ञानिकों ने नई पर्वत श्रृंखला खोजी है। इसका नाम मशहूर वैज्ञानिक सी. वी. रमन के नाम पर रखा गया है।

कौन मलखान



राजा चित्रसेन का सबसे अधिक विश्वासपात्र था मधुसूदन...
मैं मंत्री न सही, पर राजा उससे अधिक मेरी बात मानते हैं।
राजा तुम्हें ही होना चाहिए मधुसूदन...
प्रजा का मन और जीत लो। फिर सब आसान...
मधुसूदन के मन में राजा बनने की बात घर कर गई...
गुरु जी, प्रजा का विश्वास जीतना है। क्या करूं?
दुखों में उसकी सहायता करो, तन-मन-धन से...
कुछ दिन बाद ही अवसर आया...
महाराज दुहाई, डाकू मलखान सब कुछ लूट ले गया...
उगाही करके आ रहा था। रास्ते में सारा धन छीन ले गया...
सेनापति, मलखान को तुरंत पकड़ा जाए!
मधुसूदन ने प्रजा का विश्वास जीतने के लिए...
दुखी मत हो। यह धन मेरी ओर से...। घर संभालो...
मधुसूदन की...
जय हो!


महीनों तक ऐसा ही चलता रहा। शीघ्र ही...
मधुसूदन यदि सहायता न करता तो...
मेरा तो सारा परिवार उसने बचा लिया...
राजा ने कुछ नहीं किया...
मधुसूदन की लोकप्रियता राजा के कानों में पड़ी, तो ईर्ष्यालु दरबारियों ने...
वह आपकी गद्दी...
इतना धन उसने जोड़ा कैसे ?
प्रजा को आपके विरुद्ध भड़का रहा है।
कुछ करना ही होगा।
राजा ने मंत्री से सलाह ली...
वह इतना लोकप्रिय है कि एकदम उसे पकड़ना उचित नहीं...
फिर... यह तो पता करो कि उसके पास धन आता कहां से है ?
गुप्तचर लगा दिए गए। कुछ दिन बाद...
उसके पास पारस पत्थर है।
वह सोना बनाना जानता है।
कोई खजाना मिला है।
ऐसा ही रहा तो एक दिन वह...


मंत्री ने राजा से मन की शंका कह डाली...
प्रजा की मदद से वह राजा... रोकने के लिए मलखान को पकड़ना जरूरी...
मगर मलखान ! मुझे स्वयं ही कोशिश करनी...
अगले दिन राजा ने धनी व्यापारी का वेश बनाया। नगर से बाहर जा...
सुनसान रास्ता... यहीं बैठूं... थैली सामने रख लूं... शायद मलखान...
कुछ ही देर में डाकुओं ने उसे घेर लिया। राजा उनसे लड़ा भी, किंतु...
इस बूढ़े से छीन लो सब कुछ... थैली और कीमती शाल भी। हा...हा...
उफ ! सैनिक साथ लाता तो शायद इसे—
किसी तरह महल में पहुंचा
ज्वर... यह औषधि...
किसने किया यह महाराज,... यह दुस्साहस !...
चुप रहो। यह खबर बाहर न जाए। ... मुझसे मिलने कोई न आए...



महीनों बीत गए। न मलखान पकड़ा गया, न मधुसूदन की सहायता रुकी। एक दिन...
कैसे हैं राजन् ? पहरेदारों ने मुझे भी अंदर नहीं आने दिया... वर्ना...
मेरा शाल ! इसके पास... यह तो मलखान ने छीना था...
हां, ठीक हूं। आज दरबार जा रहा हूं। यह शाल तो बहुत कीमती है। कहां से खरीदा?
मधुसूदन ने पड़ौसी राज्य के किसी व्यापारी का नाम बता दिया। राजा ने गुपचुप जांच कराई, तो...
इस नाम का वहां कोई व्यापारी नहीं...
ओह ! अब समझा...
उसी दिन मधुसूदन को गिरफ्तार कर लिया गया...
सच बताओ। मलखान द्वारा छीना गया शाल तुम्हारे पास कैसे ? तुमने मुझसे झूठ क्यों बोला... वर्ना...
टूट गया मधुसूदन। मलखान बनकर वह प्रजा को लूटता था। लोकप्रियता पाने के लिए उसी धन से वह मधुसूदन बनकर प्रजा की सहायता करता था।
मैं लोकप्रिय होने के चक्कर में धर्म-अधर्म को भूल गया। मुझे क्षमा कर दें राजन्।
लूटा तुमने प्रजा को। मुझसे क्षमा कैसी ? दंड तो भुगतना ही होगा !

समंदर का राजा

— हेमचन्द्र जोशी



बहुत पहले की बात है। एक गांव में एक बुढ़िया दादी अपने पोते के साथ रहती थी। दोनों दिन भर मेहनत करते थे, फिर भी भरपेट भोजन न जुटा पाते थे। तब एक दिन बुढ़िया के पोते ने गांव छोड़कर शहर जाने का निश्चय किया।

बुढ़िया दादी अपने पोते को शहर नहीं भेजना चाहती थी। पोते ने बहुत जिद की, पर बुढ़िया न मानी। अतः एक रात जब दादी गहरी नींद में थी, तब पोते ने चुपके से घर छोड़ दिया। रात का अंधेरा और सुनसान वातावरण को देखकर पोता बहुत घबराया। पर हिम्मत करके वह आगे बढ़ता ही गया।

जब वह शहर जाने वाली सड़क की ओर मुड़ा, तो उसने देखा कि सड़क के दोनों ओर ढेर-सी चट्टानें हैं। इन्हीं चट्टानों में से एक चट्टान की ओर से उसे कुछ प्रकाश आता दिखाई दिया। रात के अंधेरे में एक वीरान ज़गह में प्रकाश आता देखकर उसे आश्चर्य हुआ। उत्सुकतावश वह डरते-डरते चट्टान पर चढ़ने लगा। उसने पाया कि प्रकाश चट्टान में बनी एक गुफा से आ रहा है।

उसने गुफा के अंदर झांककर देखा, तो वह दंग रह गया। गुफा में चार चोर बैठे हुए थे। उनके चारों ओर ढेर सारे हीरे-जवाहरात, आभूषण व रुपए फैले हुए थे। वह आश्चर्य चकित रह गया। इससे पहले कि वह लौट पाता, चोरों ने उसको पकड़ लिया।

चोरों के सरदार ने अपने साथियों से कहा— "दोस्तो, इस लड़के का जिंदा रहना अब हम लोगों के लिए खतरे से खाली नहीं है। चलो, इसके शरीर पर पत्थर बांधकर इसे समुद्र में डुबो दें।"

तुरंत चोरों ने उसको एक बड़े-से पत्थर से बांधकर समुद्र में डुबो दिया। लड़का डूबकर सीधा समुद्र की तलहटी में जा टकराया। सौभाग्य से उसी वक्त वहां से समुद्र का राजा गुजर रहा था। लड़के को देखकर वह उसे अपने महल में ले आया। कुछ ही दिनों में लड़के ने अपनी मेहनत व लगन से राजा को प्रसन्न कर लिया। राजकुमारी भी उसे चाहने लगी। यह देखकर राजा ने अपनी बेटी की शादी उस लड़के से कर दी। कुछ दिनों बाद राजा ने ढेर सारी धन-दौलत के साथ अपनी बेटी को विदा किया।

लड़का जब राजकुमारी के साथ घर वापस लौट रहा था, तो चोरों के सरदार ने उसे पहचान लिया। अतः सरदार रात को अपने साथियों के साथ वहां जा पहुंचा, जहां लड़का टिका हुआ था। रात के अंधेरे में मकान की सांकल बजते सुनकर लड़का चौंक उठा। उसने धीरे-से झांका, तो देखा कि सरदार अपने साथियों के साथ आया हुआ है। उसने तुरंत राजकुमारी को सारी बातें बताईं।

राजकुमारी ने कहा— "आप चिंता न करें। मैं दरवाजे पर जाती हूं। आप आराम से लेटे रहिए।" यह कहकर राजकुमारी दरवाजा खोलने चली गई।

राजकुमारी ने दरवाजा खोलकर पूछा— "कहिए, आधी रात को क्या काम है?"

चोरों का सरदार राजकुमारी की सुंदरता देखकर चकरा गया। उसने प्रश्न किया— "आप कौन हैं?

इस टूटे-फूटे घर में आप क्या कर रही हैं ?''

राजकुमारी बोली— ''मैं समुद्र के राजा की बेटी हूं । यह मेरे पति का घर है । मैं अपने पिता के आदेश से अपनी चार छोटी बहनों के लिए पति ढूंढ़ने के लिए पृथ्वी पर आई हूं । क्या आप मेरी इस कार्य में कुछ सहायता कर सकते हैं ?''

चारों चोर बहुत प्रसन्न हुए । वे अपने आने का उद्देश्य भूलकर, राजकुमारी से आग्रह करने लगे— ''राजकुमारी जी, यदि आप हम लोगों को अपनी बहनों के योग्य समझें, तो हम सब आपके आभारी रहेंगे ।''

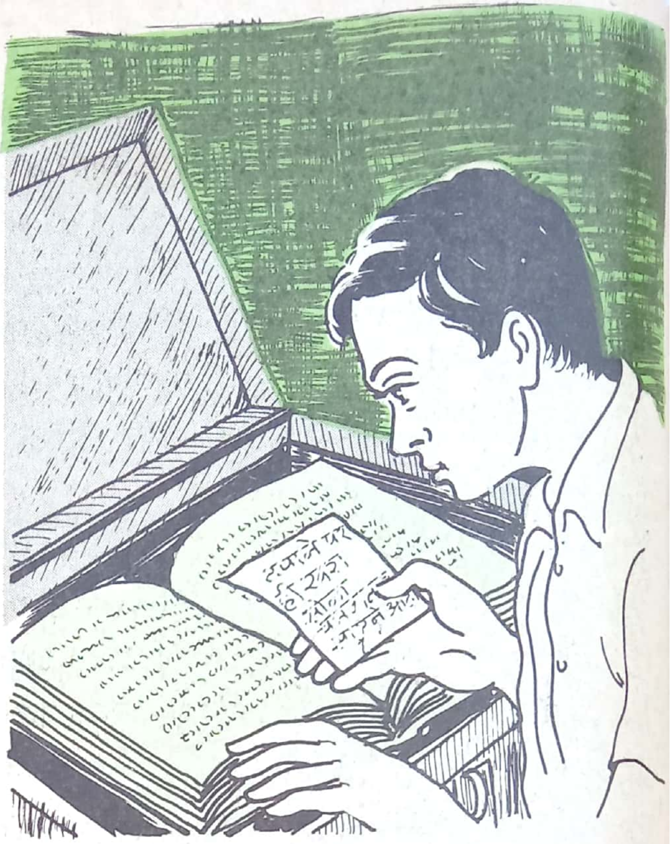
राजकुमारी तुरंत बोली— ''इस बात का फैसला तो मेरे पिता जी करेंगे । आप सब लोग पत्थर व रस्सी के साथ अमावस्या के दिन समुद्र के किनारे पर मिलें ।''

चोर प्रसन्न होकर चले गए । वे समझ गए कि उनके द्वारा डुबोया गया लड़का समुद्र के राजा का दामाद बन चुका है । अब उनके लिए भी एक मौका हाथ लग गया है ।

ठीक अमावस्या के दिन चारों चोर समुद्र के किनारे जा पहुंचे । राजकुमारी ने चारों चोरों को पत्थरों से बांध दिया । फिर बोली— ''अब आप चारों मेरे पीछे-पीछे समुद्र में कूदें । मैं आप चारों को अपने पिता के पास ले चलूंगी ।''

राजकुमारी के कूदते ही चारों अक्ल के अंधे चोर समुद्र में कूदकर डूब गए । चोरों के समुद्र में डूबते ही राजकुमारी वापस अपने पति के पास आ गई । इसके बाद राजकुमारी और लड़का चोरों द्वारा छिपाए सारे हीरे-जवाहरात, आभूषण व रुपए एक घोड़ागाड़ी में लादकर अपनी बूढ़ी दादी के पास चले आए ।

राजकुमारी की इच्छा के अनुसार लड़के ने समुद्र के किनारे एक बड़ा-सा महल बनवाया । उस महल में एक बहुत बड़ा तालाब बनवाया, जो सीधे समुद्र से जुड़ा हुआ था । राजकुमारी के पुराने मित्र, मछलियां आदि इसमें खूब खेला करती थीं । राजकुमारी को जब भी अपने पिता की याद आती, वह सीधे इस तालाब से होकर गहरे समुद्र में जा पहुंचती । ●



अनोखी भेंट

— गिरीश भंडारी

जनरल विलियम्स के बारे में मुझे इतना ही याद है कि जब हम क्रिसमस की पार्टी के दिन उनके घर में जमा होते थे, तो बढ़िया केक खाने को मिलता था। फिर क्रिसमस ट्री पर लटके खिलौनों में से अपनी-अपनी पसंद का एक-एक खिलौना हम सब को मिलता था।

वैसे वह बहुत सनकी थे। दोनों महायुद्धों में उन्होंने भाग लिया था। उनका खानदान मशहूर था। उनके पूर्वज एक ड्यूक थे। उन्होंने राजा चार्ल्स द्वितीय के पुनः राज्याभिषेक में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अतः उन्हें कई जागीरें भी मिली थीं। साथ में एक सोने का कप मिला था। कप में पुखराज जड़े थे। यह बहुमूल्य प्याला जनरल विलियम्स की पीढ़ी दर पीढ़ी नायाब तोहफे के रूप में चला आ रहा था। पर जनरल विलियम्स ने इसको कहां रखा था, इसके बारे में कुछ पता ही नहीं था। उनके पुत्र कर्नल मोनियर, जिन्हें हम प्यार से अंकल मोनियर कहते थे, को भी इस बारे में कुछ पता नहीं था।

Scanned with CamScanner

जनरल विलियम्स के मरने के बाद जब घर की हर चीज को उलट-पलटकर देखा गया, तब भी प्याले का कोई पता नहीं चला। लगता था कि प्याला सदा के लिए खो गया था।

जनरल का एक सहायक था— फकीरसिंह। उसने भी इस बारे में चुप्पी साध रखी थी। फिर एक दिन उसकी मृत्यु हो गई।

इस पहाड़ी शहर में जहां जनरल विलियम्स बस गए थे, वहीं पर अंकल मोनियर ने भी रहना तय कर लिया था। उनके दो बच्चे थे। मेरी और मेरे भाई की उन बच्चों से खूब पटती थी। खासकर क्रिसमस और नए वर्ष के समय तो उनके घर पर ऐसी धमाचौकड़ी होती कि पूछो नहीं।

३१ दिसम्बर का दिन था। हम लुका-छिपी खेल रहे थे। मैं छिपने के लिए एक पुरानी टांड़ पर चढ़ गया। वहां पुराना संदूक पड़ा था। संदूक को मैंने धीरे-से खोलकर देखा, उसमें एक बाइबिल थी। इसे जनरल विलियम्स रोज पढ़ा करते थे। मैं उसके पन्ने पलटने लगा। पुस्तक का अंतिम पन्ना अचानक खुल गया। दो पन्नों के बीच में कागज का एक छोटा टुकड़ा रखा था। उस पर कुछ लिखा था।

मैंने उस पर लिखी पंक्ति को पढ़ने की कोशिश की। टांड़ पर अंधेरा था। मैं ठीक से पढ़ नहीं पाया। तभी रोजी और मून ने मुझे पुकारा। मैं नीचे आ गया।

मेरे कपड़ों में धूल लगी थी। सामने से अंकल मोनियर आ रहे थे। मैंने उन्हें कागज का टुकड़ा दिखाया।

"अरे, यह तो मेरे पिता जी की लिखावट है। पर लिखा क्या है?"— कहते हुए उन्होंने चश्मा लगाया। कागज को पढ़ा। उस पर लिखा था— 'तपाने पर ही खरा सोना चमककर सामने आता है।' उन्होंने यह पंक्ति कई बार पढ़ी। पर उनके पल्ले कुछ नहीं पड़ा।

मैंने कहा— "क्या इसका सम्बन्ध उस प्याले से नहीं हो सकता?"

"सम्भव है, पर इसका मतलब क्या है?"— अंकल ने पूछा।

सहसा मेरे दिमाग में एक विचार कौंधा। मैंने कहा— "अंकल, कागज के टुकड़े को आग की आंच दिखाई जाए, तो शायद और जानकारी मिल जाए।"

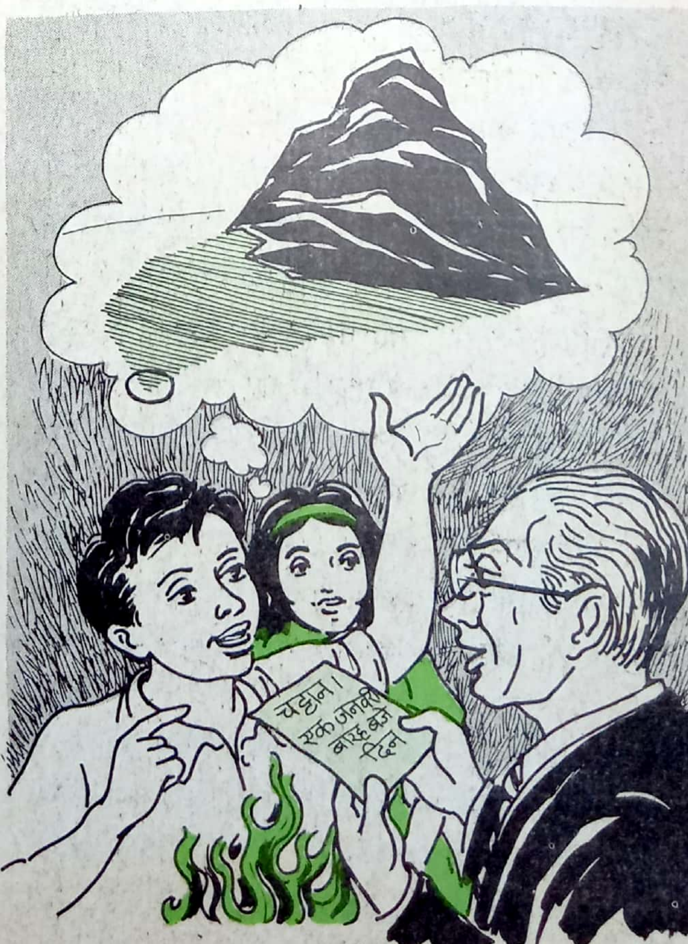
मोनियर अंकल हंसे। सामने अलाव में आग जल रही थी। उन्होंने सावधानी से कागज के टुकड़े को आंच दिखाई। सहसा रोजी बोली— "पापा, इसमें से कुछ उभर रहा है।" कांपते हाथों से अंकल ने अपना चश्मा ठीक किया। कागज पर लिखा था— 'चट्टान। एक जनवरी। बारह बजे दिन।'

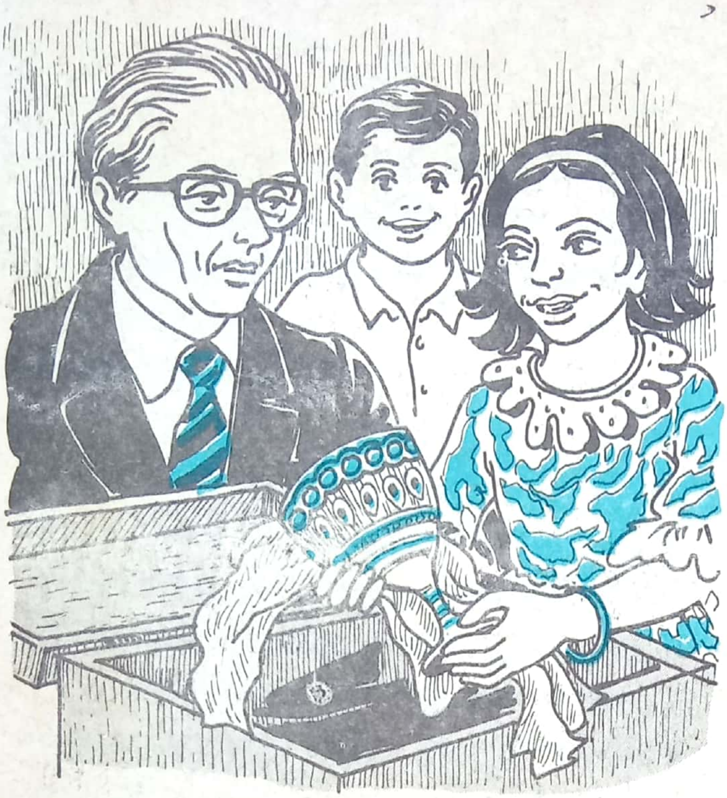
तभी मेरा भाई बोला— "चट्टान तो वही है, जो टेनिस कोर्ट के पास है। उसके आस-पास हम खेलते भी हैं।"

"अच्छा, अब यह कल देखा जाएगा।"— अंकल ने कहा।

रात किसी तरह बीती।

सुबह ही हम अपने घर से दौड़ चले।





हम हांफते हुए अंकल के घर पहुंचे। अंकल मोनियर ने कहा— "बच्चो, मुझे पिता जी ने हर रोज बाइबिल का एक पेज पढ़ने को कहा था। कुछ दिन तो मैं यह नियम निभाता रहा। पर उसके बाद मैंने पुस्तक संदूक में रख दी।"— कहते हुए वह चुप हो गए।

कुछ देर बाद वह मुझसे बोले— "भई, जरा वह पुस्तक निकालने में मेरी मदद करो।" यह सुन, मैं और मून टांड पर चढ़ गए। मुश्किल से संदूक को नीचे उतारा। अंकल ने बाइबिल निकाली।

कर्नल मोनियर एक कागज पर पैंसिल से कुछ हिसाब लगाने लगे। वह बोले —" अगर मैं पुस्तक का एक पृष्ठ रोज पढ़ता, तो यह कागज ठीक मुझे मेरी ४५वीं वर्षगांठ पर मिलता।"

तभी मेरा भाई बोला—"साढ़े ग्यारह बज चुके हैं। चट्टान के पास चलें।" हम सब भागते-भागते चट्टान के पास पहुंचे। अभी भी पंद्रह मिनट बाकी थे।

हम इधर-उधर देखने लगे, बारह बजते ही चट्टान की परछाईं जमीन पर पड़ी। लेकिन अब क्या किया जाए?हमें कुछ समझ में नहीं आ रहा था। सहसा अंकल ने लकड़ी के टुकड़े से उस परछाईं के साथ जमीन पर रेखा खींच दी। फिर एक फावड़ा ले आए। हम सबने बारी-बारी से उस स्थान की खुदाई शुरू कर दी।

कुछ देर बाद टन्न की आवाज आई। जमीन करीब तीन फुट खुद चुकी थी। वहां लोहे का जंग लगा संदूक पड़ा था।

अंकल ने कांपते हाथों से संदूक को बाहर निकाला। फावड़े की फाल की मदद से उन्होंने संदूक को किसी तरह खोला।

संदूक में कपड़े में लिपटी कोई चीज थी। रोजी ने उनसे कपड़े का बंडल ले लिया। उसे खोला। यह क्या ! सोने की और पुखराज की चमक से हमारी आंखें चौंधिया गईं। विलियम्स खानदान का सोने का कप हमारे सामने था।

कप में एक पत्र था। उस पर लिखा था—'प्रिय मोनियर, मैं आशा करता हूं कि इस प्याले को तुम अपने पैंतालीसवें जन्म दिवस पर उपहार के रूप में पा सकोगे। यह भी हो सकता है कि सम्राट चार्ल्स द्वितीय की यह अनुपम भेंट तुम्हें कभी मिले ही नहीं। फकीरसिंह यह सब जानता था। पर मैंने उससे यह किसी को भी न बताने के लिए कह दिया था।

तीन सौ साल के इतिहास में कई बार कुछ लोगों ने इस प्याले को पाने के लिए जी-तोड़ कोशिशें कीं। फिर भी यह सुरक्षित रहा।

ऐसा ही एक और खतरा मेरे सामने भी आया था। तब मुझे यह रास्ता सोचना पड़ा। मैं उस वंश का आखिरी वंशज हूं। मुझ पर भी चार्ल्स द्वितीय के राज्य के दौरान बने कुछ विशेष कायदे-कानून लगते थे। पर तुम उन सब बंधनों से मुक्त हो। अगर यह प्याला तुम्हें मिला, तो फिर इस पर किसी खतरे की संभावना नहीं होगी। इसको हरगिज बेचना मत। अलविदा। तुम्हारा पिता—विलियम्स।'

पत्र पढ़ते ही अंकल की आंखों में आंसू आ गए। क्योंकि उन्हें अपने पिता की याद सता रही थी।

अंकल ने वह प्याला बैंक में रख दिया। अब वह अंकल के जन्म दिन पर ही निकाला जाता है। ●

बोली तिजोरी

—भरत कुमार



किसी समय सुंदर नगर गांव में एक किसान रहता था। नाम था रामू। वह मेहनती था।

एक दिन रामू खेत जोत रहा था। अचानक उसे वहां चमकता हुआ एक जड़ाऊ कंगन दिखाई दिया। उसने कंगन उठा लिया। शाम को घर लौटा। नहा-धोकर उसने लक्ष्मीजी की पूजा की। कंगन को एक बैल के गले में बांधकर लटका दिया।

एक बार अकाल पड़ा। लोगों में हा-हाकार मच गया। रामू भी परेशान था। क्योंकि सारा अनाज भी चुक गया था। अब उसके पास दो बैल और कुछ खेती ही बची थी। उसने सोचा—'घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं है। क्यों न मैं अपनी कुछ जमीन ही बेच डालूं?'

अगले दिन रामू ने कुछ लोगों से इस बारे में बातें कीं। पर कोई भी खेत लेने को तैयार नहीं हुआ। अब उसने बैलों को बेचने की सोची। वह तुरंत बैलों को लेकर शहर चल पड़ा।

शहर में रामू बैलों को लेकर घूम रहा था। तभी किसी ने उसे आवाज दी—"बहुत गर्मी है। यहां थोड़ा बैठकर आराम तो कर लो।"— रामू ने मुड़कर देखा—लाला रामनाथ उसे अपने पास बुला रहे थे।

रामू बोला—"मैं यहां बैठने नहीं आया हूं। घर के लोग भूखे हैं। मैं बैलों को बेचना चाहता हूं। अगर ये बैल नहीं बिके, तो आज भी हमें भूखा रहना पड़ेगा।" कहता हुआ वह लाला जी के पास पहुंचा। अचानक लाला जी को एक बैल के गले में लटका कंगन दिखाई पड़ा। उनकी नीयत डोल गई। उन्होंने बैलों के बहाने कंगन हड़पने की सोची। उन्होंने रामू को दो सौ रुपए देकर बैल खरीद लिए। उन्होंने कंगन के बारे में रामू को कुछ भी नहीं बताया। रामू कंगन को पहले ही भूल चुका था।

दो सौ रुपए लेकर रामू खुशी-खुशी घर चला आया।

लाला जी प्रसन्न थे। क्योंकि हजारों का सोना दो सौ रुपए में खरीद लिया था। लाला जी ने कंगन को तुरंत तिजोरी में रख दिया।

एक दिन दूसरे शहर से सेठ सम्पत्ति लाल, लाला जी के पास आए। लाला जी उनसे बोले—"आज मैं आपको दो हजार रुपए का सोना दूंगा।"

सम्पत्ति लाल बोले—"मेरा तो काम ही यही है। आप जितना भी सोना देंगे, मैं खरीद लूंगा।"

लाला जी ने अंदर जाकर तिजोरी खोली। पर यह क्या? तिजोरी में सोने के कंगन की जगह मिट्टी का कंगन था। यह देख, लाला जी के होश उड़ गए। किसी तरह से लाला जी ने स्वयं को संभाला। फिर सम्पत्ति लाल से कहा—"भाई, कंगन अभी मिल नहीं रहा। फिर कभी आकर ले जाना।" सम्पत्ति लाल चले गए।

अब लाला जी सिर पकड़कर बैठ गए। उसी समय तिजोरी से आवाज आई— 'लाला जी, तुम बहुत लालची हो। मैं तो रामू किसान को धनी बनाना चाहती थी। परंतु तुमने उसे धोखा दिया। यह उसी का फल है। अगर तुमने उससे सही दाम पर कंगन खरीदा होता, तो रामू के साथ-साथ तुम भी धनवान बन जाते।' यह सुनते ही लाला जी ने तिजोरी को देखा। उन्हें वहां कोई दिखाई नहीं दिया। उन्होंने सोचा—'यह सारी लक्ष्मीजी की माया है। मुझे रामू को धोखा नहीं देना चाहिए था।' ●

हाथी भाई

—उमा शर्मा

दौलतराम सौदागर का लड़का नेकीराम अपने पिता के साथ व्यापार के लिए दूर-दूर जाता था।

एक बार नेकीराम जंगल से गुजर रहा था। अचानक उसे हाथी के बच्चे की चिंघाड़ सुनाई दी। उसने पीछे मुड़कर देखा—हाथी का छोटा बच्चा उसके पीछे-पीछे आ रहा है। वह डरकर तेज चलने लगा, तो हाथी का बच्चा भी तेज-तेज चला। पर वह गिर गया। वह चिंघाड़ा। नेकीराम को दया आ गई। वह बच्चे को घर ले लाया और उसकी मरहम पट्टी की। उसने उसका नाम यात्रा रखा। क्योंकि उसे वह सफर में मिला था।

एक बार नेकीराम को व्यापार के सिलसिले में परदेश जाना पड़ा। यात्रा उसके साथ था। लौटते समय बारिश शुरू हो गई। रात में सफर करना मुश्किल था। उसके पास धन भी था। इसलिए वह धर्मशाला में रुक गया।

नेकीराम सो गया। एक चोर उसके सिरहाने से पोटली निकाल कर चलता बना।

खाली हाथ नेकीराम जब घर पहुंचा, तो उसका पिता दौलतराम नाराज हुआ। उसने कहा—"तू झूठ बोलता है। सारा धन कहीं छिपा आया है।" फिर उसने नेकीराम को घर से निकाल दिया। नेकीराम यात्रा को लेकर वहां से चल दिया। रास्ते में उसे भूख लगी। पर वह खाता क्या? यात्रा भी भूख से बेहाल था। अपने से ज्यादा उसे यात्रा की चिंता थी।

चलते-चलते नेकीराम एक सरकस कम्पनी के सामने से गुजरा। मैनेजर ने यात्रा को देखा, तो उससे कहा—"यह हाथी हमें दे दो, तुम्हें इसका मुंहमांगा दाम मिल जाएगा।"

"भाई बेचने की वस्तु नहीं होती।"—नेकीराम ने कहा।

नेकीराम ने मैनेजर से कह-सुनकर सरकस में हाथी-घोड़ों को दाना-पानी देने की नौकरी कर ली। जो



रोज पगार मिलती, उससे नेकीराम यात्रा के भोजन की व्यवस्था करता। यात्रा जंगल से फल-फूल तोड़कर लाता और वह सब नेकीराम को दे देता। रात में सरकस के दरवाजे पर दोनों सो जाते थे।

कुछ दिन से मैनेजर ने नेकीराम के साथ एक नया आदमी भी काम पर रख लिया था। यात्रा उसे देखते ही चिंघाड़ने लगता था।

एक दिन सरकस का एक हाथी गायब हो गया। मैनेजर ने नेकीराम को दोषी कहकर नौकरी से निकाल दिया।

यात्रा और नेकीराम फिर परेशान रहने लगे।

एक रात पूर्णमासी का चांद चमक रहा था। सरकस के हाथियों को सजाया गया था। नया आदमी एक हाथी को जंजीर से बांधकर सरकस के पिछले दरवाजे से जंगल की ओर ले चला।

यात्रा उस आदमी को देखते ही चिंघाड़ने लगा। सरकस वाले भी बाहर आ गए।

अचानक यात्रा जंगल की ओर भागा। उसके पीछे-पीछे नेकीराम और सरकस वाले भी दौड़े। रास्ते में उन्होंने देखा—यात्रा के साथ एक वही हाथी खड़ा है। पास में वह नया आदमी भी खड़ा था। वे समझ गए कि इसने ही कुछ दिन पहले सरकस का हाथी चुराया था। आज भी वह इस हाथी को चुराना चाहता था। पर आज यह पकड़ा गया। सरकस वालों ने उसे मैनेजर के सामने पेश कर दिया। मैनेजर ने धमकाया, तो उसने अपना अपराध मान लिया। मैनेजर ने उसकी

तलाशी ली, तो उसकी जेब में से एक पुराना कपड़ा निकला।

नेकीराम उस कपड़े को देखते ही पहचान गया। वह बोला—"मैनेजर साहब ! यह तो मेरी पोटली का कपड़ा है। अब मैं समझा कि इसी ने धर्मशाला में से मेरी पोटली चुराई थी। उसमें मेरे रुपए थे।"

मैनेजर ने चोर को कोतवाल के हवाले कर दिया। कोतवाल ने पूछा, तो उसने कहा—"हुजूर ! मैंने इसकी पोटली नहीं चुराई है। यदि यह कोई सबूत दे दे, तो मैं सजा भुगतने को तैयार हूं।"

कोतवाल ने नेकीराम की ओर देखा। नेकीराम चुप। क्योंकि उसके पास कोई सबूत नहीं था। मामला राजा तक पहुंचा।

राजा ने दोनों की बातें सुनीं। फिर वह बोला—"तुम्हारा फैसला तीन-चार दिन बाद होगा। तब तक तुम दोनों कैद में रहोगे।" फिर उन्हें कैद में डाल दिया गया।

यात्रा को जब यह पता चला तो, वह मंदिर के बाहर जाकर चिंघाड़ने लगा। उसकी चिंघाड़ सुनकर जंगली हाथी मंदिर के पास जमा हो गए। यात्रा चला तो सारे हाथी भी उसके पीछे चल दिए। वे सब कारागार के दरवाजे पर जमा हो गए। पहरेदार घबराए। वे दौड़े-दौड़े राजा के पास गए। सारा हाल बताया। राजा भी वहां पहुंचा।

राजा ने नेकीराम से कहा—"पहले तुम यहां से हाथियों को दूर कर दो। कल सुबह तक मैं फैसला



कर दूंगा। ध्यान रखो—सच की जीत होती है।" नेकीराम ने यात्रा को इशारे से कुछ समझाया।

यात्रा चिंघाड़कर मुड़ पड़ा। अब सारे हाथी उसके पीछे चल दिए। राजा ने चोर को बुलाया। उससे कहा—"कल तक फैसला हो जाएगा। यदि नेकीराम सबूत नहीं दे सका, तो तुम्हें छोड़ दिया जाएगा।" यह सुन, चोर का चेहरा खिल उठा।

राजा महल में पहुंचा। उसने पहरेदार को वहां बुलवाया। उसके कान में धीरे से कुछ कहा। पहरेदार वहां से चला गया।

रात का समय था। पहरेदार ने कारागार के दरवाजे खोल दिए। फिर वह नेकीराम के पास गया। उसके कान में धीरे से कुछ कहा। नेकीराम ने दोनों कान पकड़ लिए। वह बोला—"नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं सच्चाई पर हूं। मैंने कोई अपराध नहीं किया है। फिर मैं यहां से क्यों भागूं ?"

अब पहरेदार चोर के पास गया। उसके कान में कुछ कहा। चोर खुश हो गया। वह बोला—"अच्छा, मैं चलता हूं। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।" कहकर वह कारागार से बाहर निकल गया।

अभी वह दस-बीस कदम चला ही था कि पहरेदारों ने उसे पकड़ लिया। चोर सकपका गया। क्योंकि राजा भी सामने खड़ा था।

राजा बोला—"तुम असली चोर हो। मैं चालाकी से काम न लेता, तो नेकीराम के साथ अन्याय होता।" पहरेदारों ने चोर को कारागार में डाल दिया।

राजा ने नेकीराम को छोड़ दिया। उससे कहा—"तुम सच्चे आदमी हो। तुम जैसे लोगों की मुझे आवश्यकता है। आज से तुम मेरे यहां हाथियों की देखभाल करोगे। यात्रा भी यहीं रहेगा।" नेकीराम यह सुन, बहुत खुश हुआ।

तभी यात्रा की चिंघाड़ सुनाई दी। वह कारागार के पास पहुंचा। नेकीराम ने इशारा किया, तो उसने सूड़ उठाकर राजा का अभिवादन किया। राजा ने प्यार से सहलाया, फिर महल की ओर चला गया। ●



□ एक आदमी—डाक्टर साहब, ऐसे मजबूत दांत लगा दीजिए कि टूटें ही नहीं।

डाक्टर—फिर तो तुम लुहार के यहां जाओ।

□ एक मित्र—मेरा क्या भरोसा ? कल मैं यहां आऊं या न आऊं ?

दूसरा मित्र—इसीलिए मैं तुमसे कह रहा हूं कि जो रुपए तुम्हें कल देने हैं, वे आज ही दे दो।

□ रोगी—डाक्टर साहब ! यहां आने पर बड़ी परेशानी होती है।

डाक्टर—तुम परेशानी क्यों उठाते हो ? मुझे ही अपने घर बुला लिया करो। घर पर जाकर मरीज देखने की मेरी फीस सिर्फ सौ रुपए है।

□ पिता—बेटा, आज तुम स्कूल न जाने का नाटक क्यों कर रहे हो ?

बेटा—आज मुझे पता चला कि मैं नाटक करने लगा हूं। अच्छा, अब मैं थियेटर कम्पनी में तो जा सकता हूं।

□ अधिकारी—यह फाइल देखकर मुझे बताओ कि इनमें कितनी गलतियां हैं।

कर्मचारी—साहब ! गलतियों को गिनने में देरी लगेगी। जो सही हो, उसे गिनकर जल्दी बता देता हूं।

□ मां—बेटा, तुमने मेरे पर्स में से पांच रुपए निकाले हैं ?

बेटा—नहीं मां, पांच रुपए पिंकी ने निकाले होंगे, क्योंकि मेरा तो दस रुपए से कम में काम चलता ही नहीं।

□ कर्मचारी—सर, आप मेरा यहां से तबादला करा दीजिए।

अधिकारी—यदि यह बात तुमने मुझे पहले बताई होती, तो मैं यहां से अपने तबादले की सोचता ही नहीं।



“देखो, मेरा अपना नन्हा हॉकिन्स!”

कितना प्यारा! बिल्कुल मम्मी के असली हॉकिन्स जैसा. मैं भी मम्मी की तरह ही अपने हॉकिन्स को खोल और बंद कर सकती हूँ! मेरे हॉकिन्स में भी छोटा-सा गास्केट है. इसके साथ खेलना मुझे बहुत अच्छा लगता है. बड़े भी इससे खेलना चाहते हैं और मैं उन्हें खेलने देती हूँ -कभी-कभी!

सुना आपने? आपके बच्चों के लिए हॉकिन्स खिलौना कुकर विश्व प्रसिद्ध हॉकिन्स प्रेशर कुकर का बेहतरीन इंजीनियरिंग से बना काम न करनेवाला, हूबहू मॉडल है. बॉडी का आकार 5.4 से.मी. अन्य खूबियों में शामिल हैं–चमचमाती बॉडी, चार अलग-अलग रिवेट, खुलनेवाला ढक्कन, निकलनेवाला गास्केट– सभी सही अनुपात में. और, असली हॉकिन्स जैसी पैकिंग.

यह नन्हा हॉकिन्स 4 साल से बड़े बच्चों के लिए सुरक्षित और शिक्षाप्रद खिलौना है. अधिकतम फुटकर दाम रु 75 (सभी करों के साथ)

हॉकिन्स खिलौना कुकर

HC/2607 A HN



दादाजी को है पसंद, दादीमाँ को भी सही,
पापा भी चोरी से खाते, मम्मी तो कम नहीं
हमसब भी जिसके मतवाले, है वही मॉर्टन यही॥
SCRABBLE
MORTON Coconut Cookies
MORTON
SWEETS
उस दिन क्या ही आनन्ददायक स्क्रेबल खेल हो रहा था और उसे जमाने का श्रेय था मॉर्टन को। मेरे परिवार की तो सदा से ही पहली पसंद रही है—मॉर्टन। उत्कृष्ट शुद्धता और स्वादिष्ट तथा साथ ही अनेकानेक जायकों में उपलब्ध—क्रीमयुक्त दूध, ग्लूकोज़ और चीनी की पौष्टिकता से भरपूर। चॉकलेट एवं कोकोनट कुकीज़, रोज एक्लेयर्स, सुप्रीम चॉकलेट तथा कोकोनट टाफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स, मैंगोकिंग एवं अन्य अनेकों मनलुभावन स्वादों में उपलब्ध। आह्हा! क्या लाज़वाब स्वाद!
MORTON COCONUT TOFFEE
MORTON TOFFEE
जीवन का अनुपम माधुर्य
मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड
मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री
पो० ओ० मढ़ौरा-८४१४१८, सारन, बिहार
CC/M-3/93 HIN
चेतावनी : MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर अपर गैंगेज सूगर एण्ड इन्डस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापारचिन्ह है। किसी भी प्रकार से व्यापारचिह्न अधिकारों का उल्लंघन अभियोजनीय है।

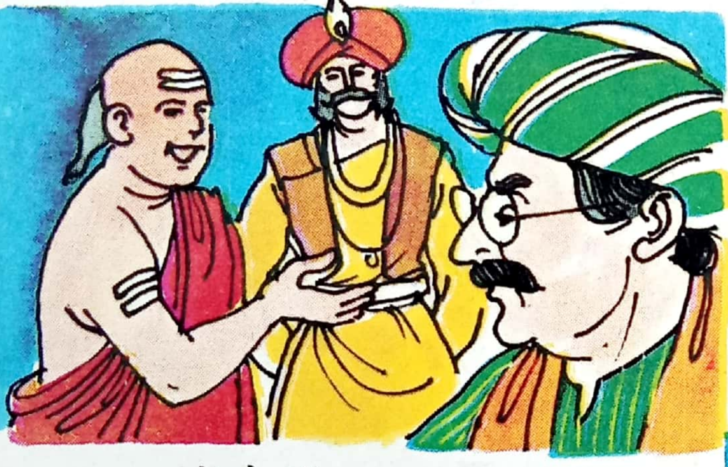
तेनालीराम (३१०)

कचरा



राजा कृष्णदेव राय राज्य के दौरे पर थे । जिस बस्ती से गुजरते, भव्य स्वागत होता । कलाकार अपनी कलाओं का प्रदर्शन करते । विद्वान अपनी सभाओं में राजा को आमंत्रित करते । राजा की ओर से कई बार घोषणा की जाती—'यदि किसी को कोई कष्ट है, तो राजा से कहे ।' किंतु ऐसा व्यक्ति कोई न आता ।

दौरा समाप्त कर राजा राजधानी लौटे । दरबार में मंत्री की खूब प्रशंसा की । उसे उपहार दिए । बोले—''राज्य में कोई दुखी नहीं, इसका सारा श्रेय तुम्हें ही है ।'' सारे दरबारियों ने राजा की बात का अनुमोदन किया, किंतु तेनालीराम अनमना-सा बैठा रहा ।



पुरोहित ने चुटकी ली—''तेनालीराम जी को जरूर कोई कष्ट है । तभी यह मंत्री जी का सम्मान देख उदास हैं ।''

राजा ने तेनालीराम की ओर देखा । पूछा—''तुम उदास क्यों हो ?''



तेनालीराम हाथ जोड़ कर बोला—''महाराज, कई दिन से घर की नाली में पानी रुक रहा है ।''

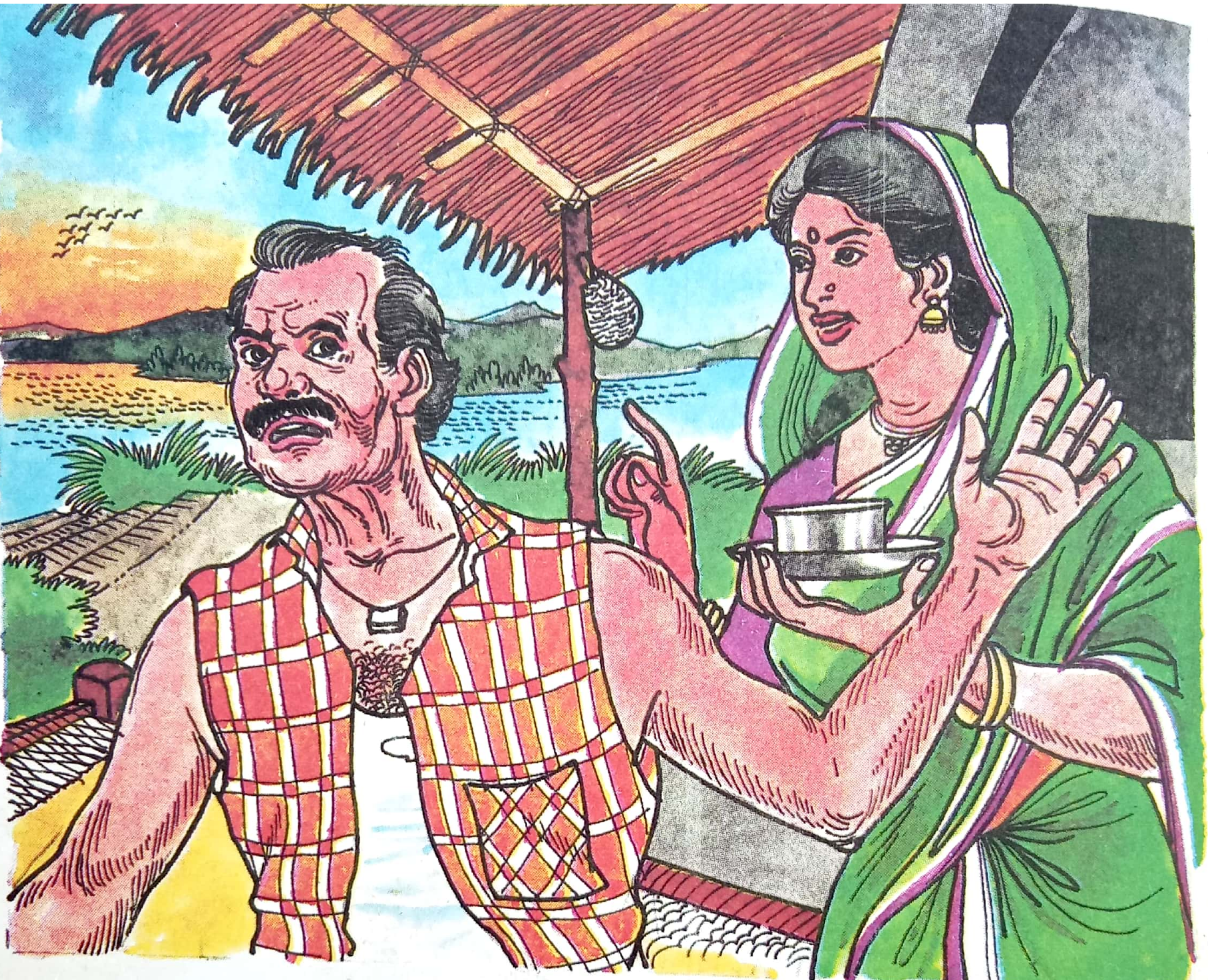
सुनते ही दरबारियों ने ठहाके लगाए । राजा हंसते हुए बोले—''नाली में कचरा फंस गया होगा । उसी के कारण पानी रुका है । उसे हटा दोगे, तो पानी नहीं रुकेगा ।''

तेनालीराम ने मंत्री जी की ओर देखा । फिर बोला—''मंत्री जी का सम्मान होते देख मैं यही सोच रहा था महाराज ! रास्ते में रुकावट हो तो . . .'' कहकर तेनालीराम चुप हो गया ।



राजा सब कुछ समझ गए । अकेले ही छानबीन की, तो पता चला, राज्य में दुखी लोगों की कमी नहीं, किंतु वे उन तक पहुंच नहीं पाते । रास्ते ही में रोक दिए जाते हैं ।

राजा ने शिकायत-विभाग मंत्री से ले तेनालीराम को सौंप दिया । बोले—''ध्यान रखना, अब कहीं कचरा न फंसने पाए ।''



खा खा खीर

— अमिताभ शर्मा

रतनपुर में रहता था नेतराम। अच्छा कारोबार था। घर में धन-दौलत की कमी न थी। शहर में अच्छा मान था। पर जैसे-जैसे धन बढ़ा, नेतराम का अहंकार भी बढ़ता गया। वह यही समझता— 'मैं जो चाहूं, कर सकता हूं।'

नेतराम की पत्नी सरल स्वभाव की थी। उसे समझाती— 'ऐसा सोचना ठीक नहीं। मनुष्य को मेहनत का फल मिलता है, लेकिन इच्छा भगवान की चलती है।' सुनकर नेतराम एक ही जवाब देता— 'नेतराम जो चाहता है, वही होता है।' दोनों में अक्सर इसी बात पर बहस होती रहती थी।

एक दिन कोई त्योहार था। नेतराम की पत्नी ने खीर बनाने के लिए पतीले में दूध डाल, चूल्हे पर रख दिया। नेतराम के मुंह से निकल गया— "मैं तो आज खीर नहीं खाऊंगा।"

पत्नी ने कहा— "आज त्योहार है। ऐसी बात क्यों कह रहे हो?"

न जाने नेतराम के मन में क्या आया। बोला— "मैं जो कहता हूं, वही करता हूं। देखूं, मुझे आज कौन खीर खिलाता है।" होते-होते बात बढ़ गई। नेतराम ने हठ ठान ली कि खीर नहीं खाएगा। पत्नी ने फिर कहा— "यह जिद मत ठानो।" पर नेतराम ने कहा— "आज इस बात की परख हो जाएगी कि मैं जो चाहता हूं, वही होता है। तुम मुझे खीर नहीं खिला

सकती।" और कपड़े बदलकर वह बाहर चला गया। सोच रहा था— 'न घर में रहूंगा, न खीर खानी पड़ेगी।' पत्नी ने रोकना चाहा। वह पति का बच्चों जैसा हठ देखकर परेशान हो रही थी।

घूमता-घामता नेतराम अपने एक मित्र के घर जा पहुंचा। देखते ही मित्र ने बांहों में भर लिया। बोला— "कहो मित्र, आज किधर रास्ता भूल गए। बहुत दिन में हमारी याद आई।"

नेतराम ने कहा— "न जाने क्यों आज तुमसे मिलने का बहुत मन कर रहा था।" उसने असली बात नहीं बताई।

मित्र ने पत्नी को पुकारा— "सुनती हो, देखो तो कौन आए हैं।"

मित्र की पत्नी ने बाहर आकर नेतराम को नमस्कार किया। फिर बोली— "अभी-अभी खीर बनाई है। मैं लेकर आती हूं।" कहकर वह रसोई में चली गई।

खीर का नाम सुनते ही नेतराम चौंक पड़ा। सोचा— 'तो खीर यहां भी मेरा पीछा कर रही है!' तुरंत उठ खड़ा हुआ। बोला— "मित्र, क्षमा करना। एक जरूरी काम याद आ गया है। मुझे तुरंत जाना होगा। एक पल की भी देर हुई, तो मामला बिगड़ जाएगा।"

मित्र रोकता रह गया— "अरे भाई, जरा-सी खीर तो चखते जाओ।" लेकिन नेतराम एक पल को भी नहीं रुका। उसे मालूम था, अगर खीर का कटोरा सामने रख दिया गया, तो फिर कोई बहाना नहीं चलेगा।

रास्ते में राजा के दीवान ने उसे देख लिया। दोनों में अच्छा परिचय था। दीवान नेतराम को अपने साथ घर ले गए। दीवान की हवेली में बहुत चहल-पहल थी। उन्होंने बताया— "आज मेरे बेटे का जन्मदिन है। इस शुभ अवसर पर आप आ गए, यह अच्छा रहा।" फिर उन्होंने नौकर को आवाज दी— "खीर लाओ।"

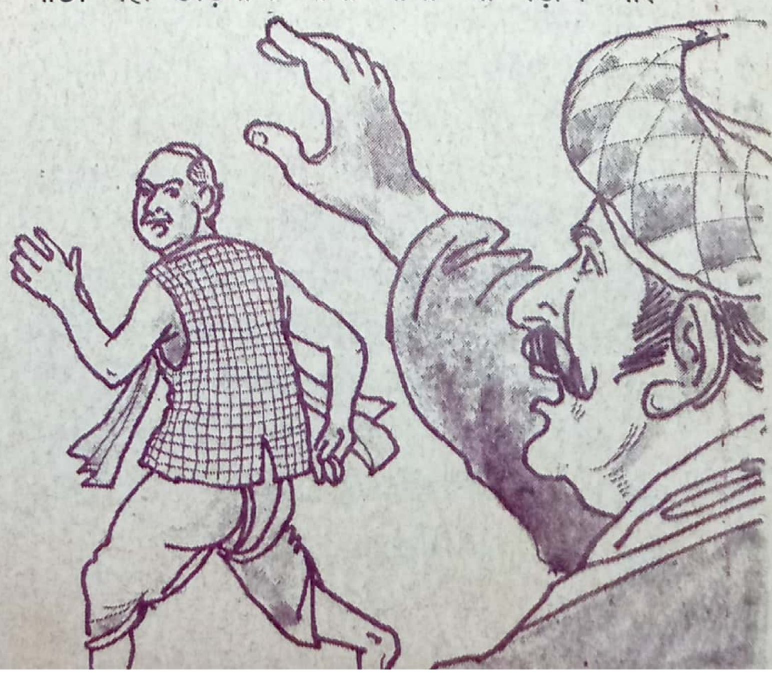
'यहां भी खीर!'— नेतराम ने सोचा। तुरंत बोला— "मुझे क्षमा करना। रुपयों की थैली कहीं रास्ते में गिर गई है। तुरंत जाकर देखूं, तो शायद मिल जाए, नहीं तो..."

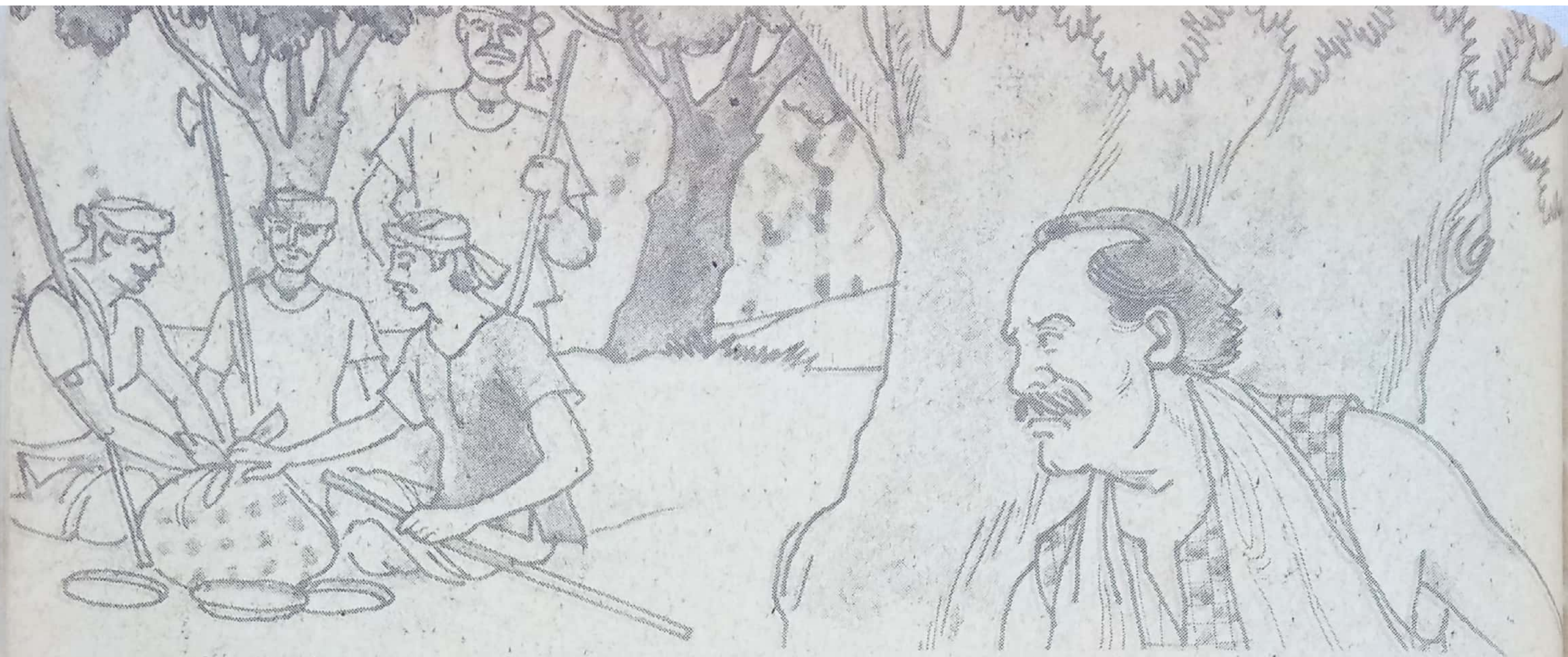
दीवान ने कहा— "अरे, यह तो बुरा हुआ। मैं तो चाहता था, आप खीर खाकर जाते। लेकिन अब तो आपको रोका नहीं जा सकता।" इस तरह खीर से छुटकारा पाकर नेतराम वहां से चल दिया। उसे लग रहा था, जैसे खीर उसका पीछा कर रही है। वह बड़बड़ाया— 'नहीं खाऊंगा, नहीं खाऊंगा।'

नेतराम सड़क पर बढ़ता चला गया। वह अपनी धुन में मस्त चला जा रहा था। एकाएक ध्यान टूटा, तो अपने को जंगल में पाया। खीर न खाने की उधेड़बुन में वह शहर से निकलकर वन में आ पहुंचा था। नेतराम एक छायादार पेड़ के नीचे बैठ गया और आंखें मूंद लीं। वह सुबह से दौड़-भाग में थक गया था। सोचने लगा— 'यह भी अच्छा रहा। यहां निर्जन वन में कुछ देर तो आराम से बैठ सकूंगा। कम से कम यहां तो कोई नहीं कहेगा खीर खाने के लिए।'

थोड़ी देर बाद वहां से व्यापारियों की एक टोली गुजरी। दोपहर हो चली थी। उन लोगों ने भी पास ही बरगद के नीचे डेरा डाल लिया। साथ में भोजन था। उन्होंने आग जलाकर भोजन गरम किया और एक व्यक्ति थालियों में लगाने लगा।

नेतराम ने देखा, भोजन में खीर भी थी। देखकर वह मुसकराए बिना न रह सका— 'तो ये भी खीर खा रहे हैं। शायद खीर ने भी सोच लिया है कि आज मेरा पीछा नहीं छोड़ेगी।' तभी बाधा आ पड़ी। चार





हट्टे-कट्टे लोग वहां आ पहुंचे । उनके हाथों में हथियार थे । वे डाकू थे । एक दहाड़ा— "प्राण बचाना चाहते हो, तो सारा माल हमारे हवाले कर दो ।"

भोजन करने बैठे व्यापारी उठकर भाग खड़े हुए । पल भर में न जाने कहां चले गए । डाकुओं का सरदार बोला— "वाह ! अच्छा माल हाथ लगा ।"

"और साथ में गरमागरम भोजन भी ।"— दूसरे डाकू ने वहां रखी भोजन की थालियों की ओर संकेत करते हुए कहा । फिर वे वहीं बैठ गए ।

जब व्यापारी भागे थे, तो नेतराम भी उठकर एक पेड़ के पीछे जा छिपा था । वह बहुत डर गया था । सोच रहा था— 'खीर से बचने के चक्कर में कैसी मुसीबत में फंस गया मैं ।'

एकाएक डाकुओं के सरदार ने कहा— "ठहरो, यह भोजन इस तरह खाना ठीक नहीं । हो सकता है, भागते समय वे लोग विष मिला गए हों इसमें । खाने से पहले इसकी जांच करना जरूरी है ।" यह कहते हुए सरदार की नजर नेतराम पर पड़ गई । वह गरजा— "पेड़ के पीछे कौन छिपा है ? तुरंत सामने आ जा, नहीं तो मार डालूंगा ।"

भय से थर-थर कांपता नेतराम डाकुओं के सामने आ खड़ा हुआ । उसने हाथ जोड़कर कहा— "मेरे प्राण न लो । मेरे पास कुछ नहीं है । मैं तो..."

सरदार ने कहा— "अच्छा, एक काम करो । सब थालियों में से थोड़ा-थोड़ा खाकर दिखाओ । हम जांच करना चाहते हैं कि भोजन में कुछ गड़बड़ तो नहीं है ।"

वहां चार थालियां थीं । और हर थाली में खीर से भरी कटोरी भी रखी थी । खीर की कटोरियां जैसे उसका मुंह चिढ़ा रही थीं । नेतराम के सामने और कोई उपाय नहीं था । उसे हर थाली में परोसा भोजन चखना पड़ा । उसने एक बार नहीं, चार बार खीर खाई । जब उसने खीर खाई, तो उसकी आंखों में आंसू आ गए ।

इसके बाद डाकुओं ने उसके हाथ-पैर बांधकर वहीं छोड़ दिया और सारा माल लेकर चम्पत हो गए ।

नेतराम वहीं पड़ा-पड़ा चिल्लाता रहा । संध्या समय कुछ घुड़सवार वहां से गुजरे, तो उसे बंधन से मुक्ति मिली । वह रोता-कलपता घर आया । घर में सब परेशान थे । उसे खोज रहे थे कि कहां चला गया । नेतराम कुछ न बोला । पत्नी ने कहा— "पूरा दिन लगा आए । शायद अभी भोजन भी न किया होगा । कहां चले गए थे ?"

क्या कहता, नेतराम । कुछ देर में पत्नी भोजन ले आई । थाली में खीर की कटोरी भी थी । नेतराम गुस्से से खीर की तरफ देखता रहा । मन हुआ, खीर की कटोरी उठाकर फेंक दे । लेकिन उसने ऐसा कुछ न किया । सबसे पहले खीर वाली कटोरी उठाई और खीर खाने लगा, कुछ इस तरह जैसे क्षमा मांग रहा हो ।

उसकी पहचान

—डा. पुनीत अग्रवाल



सैकड़ों वर्ष पूर्व राजस्थान के एक इलाके में कालिया नाम के लुटेरे का भयानक आतंक था। लोगों ने इस रास्ते से गुजरना ही छोड़ दिया था। जो इक्का-दुक्का कभी-कभी आने-जाने का प्रयत्न भी करते, वे कालिया के हत्थे चढ़ जाते। चप्पे-चप्पे पर उसके आदमी छाए हुए थे। कालिया ने लूटने के बाद आज तक किसी भी व्यक्ति को जिंदा न छोड़ा था।

लोगों ने रेगिस्तान से गुजरना बिलकुल ही छोड़ दिया। कालिया के सामने अपने गिरोह को खिलाने-पिलाने की समस्या आने लगी। इसलिए उसने मरुस्थल के आसपास बसे छोटे-छोटे गांवों में डकैती डालना शुरू कर दिया। कालिया जिस गांव में हमला बोलता, गांव के बच्चे-बच्चे को अपनी गोलियों से भून डालता। पूरा गांव एक कब्रिस्तान बन जाता।

चारों तरफ कालिया के नाम का डंका बजा हुआ था। गांव वाले दिन छिपने से पहले ही अपनी-अपनी झोंपड़ियों में छिप जाते। गांव के गांव सुनसान हो जाते।

एक बार कालिया ने अपने गिरोह के साथ एक गांव पर हमला बोला। इसी दौरान मौसम बदला और वह एक भयंकर रेगिस्तानी तूफान में फंस गया। इसी रेतीले तूफान में गिरोह के सभी आदमी तितर-बितर हो गए। तूफान था कि थमने का नाम ही नहीं ले रहा था।

ग्यारह दिन और रात तूफान में भटकने के बाद कालिया को एक झोंपड़ी दिखाई दी। उसे कुछ आशा की किरण दिखाई दी। प्यास के मारे उसका गला सूख रहा था। भूख से परेशान था। घोड़े पर चढ़े-चढ़े उसके अंग-अंग में दर्द हो आया था। उसने अपनी कटार छिपा दी और झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया।

एक बूढ़े व्यक्ति ने दरवाजा खोला। कालिया हांफता हुआ बोला—"तूफान में फंसा एक मुसाफिर हूं बाबा। ग्यारह दिन से भूखा-प्यासा इस रेगिस्तान में भटक रहा हूं। क्या आप अपनी झोंपड़ी में कुछ पलों के लिए मुझे पनाह देंगे?"

बूढ़े व्यक्ति ने भूख-प्यास से तड़पते कालिया को एक बार घूरा, फिर अंदर आने का इशारा किया। झोंपड़ी में उसकी बूढ़ी पत्नी के साथ-साथ उसका दस वर्षीय एक पोता भी था। बूढ़े व्यक्ति ने कालिया को पानी पिलाया। खाने को दिया। इसके बाद बूढ़ा आदमी उसे अपने बिस्तर पर लिटाकर, उसके घावों पर मरहम लगाने लगा। कुछ ही दिनों में घाव भरने लगे।

पूरे इक्कीस दिन बाद जाकर तूफान थमा। घर में जमा सारा अनाज-पानी समाप्त हो चला था। कालिया भी स्वस्थ हो रहा था। उसने बूढ़े व्यक्ति से विदाई लेनी चाही।

चलते-चलते वह बोला—"बाबा, आपने मेरी बहुत सेवा की है। खुद भूखे रहकर मुझे खिलाया है। जाने से पहले मैं आपको कुछ देना चाहता हूं। मांगिए, आप क्या चाहते हैं? आपको शायद पता नहीं है कि मैं कौन हूं?"

"नहीं बेटा, मुझे कुछ नहीं चाहिए। मेरी तो यही इच्छा है कि मेरे मरने से पहले मेरा पोता बड़ा हो, अपने पैरों पर खड़ा हो जाए। मुझे उम्मीद है, मैं यह सब करने के बाद ही इस धरती को छोड़ूंगा।"—बूढ़े आदमी ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

लेकिन कालिया बिना कुछ दिए नहीं जाना चाहता



था। वह बूढ़े व्यक्ति का एहसान चुकाना ही चाहता था। बोला—"नहीं बाबा, बिना कुछ दिए तो मैं जाने से रहा। मैं वादा करता हूं कि आप जो मांगेंगे, आपको दूंगा।"

"वादा करने से पहले एक बार फिर सोच लो।" —बूढ़े व्यक्ति ने उसे टोका।

"बाबा, मैं वादा तोड़ने के लिए नहीं करता, आप कुछ बोलिए तो सही।"-कालिया आतुरता से बोला।

"बेटा, कालिया..." —बूढ़े व्यक्ति ने बोलना शुरू किया। "तो आप मुझे जानते है ?" —कालिया ने चकित हो, बूढ़े से पूछा।

"हां मैं जानता हूं, तुम कालिया हो। उस दिन भी जानता था, जिस दिन तुमने मेरे यहां पनाह ली थी। मैं यह भी जानता हूं कि मेरे बेटे का कत्ल तुमने किया था। एक बार जब उसे शहर से लौटने में देर हो गई थी और वह रास्ता भूल गया था।" —बूढ़े व्यक्ति ने शांत स्वर में कहा।

"यह सब जानते हुए भी आपने मुझे अपनी झोंपड़ी में पनाह दी। मेरे घावों पर मरहम लगाया। खुद भूखे रहकर भी मुझे खाना खिलाया, और आप मुझे सुरक्षित विदा कर रहे थे !" —कालिया चकित था।

"तुमने बिलकुल गलत कहा।" —बूढ़ा व्यक्ति बोला—"मैं कालिया को नहीं, तूफान में भटके हुए एक मुसाफिर को विदा कर रहा था। मैंने झोंपड़ी में अपने बेटे के कातिल को नहीं, तूफान में फंसे एक असहाय मानव को शरण दी थी। अगर मैं चाहता तो तुम्हें तभी खत्म कर सकता था।" बूढ़े व्यक्ति ने अपने कुर्ते के नीचे छिपी कटार दिखाई —"यह कटार मैंने अपने लड़के के कातिल के लिए ही छिपाकर रखी है।"

कालिया की आंखों में आंसू भर आए। वह बाबा के पैरों पर गिर पड़ा। बूढ़े व्यक्ति ने उसे उठाकर अपने गले से लगा लिया। फिर बोला—"अगर कुछ देना ही चाहते हो, तो बेटा मुझे अपनी सारी बुराइयां दे दो। मुझे और कुछ नहीं चाहिए। तुम्हारा यह एहसान मैं जिंदगी भर नहीं भूलूंगा।"

कालिया कुछ बोल नहीं पाया। उसका सिर शर्म से झुक गया। वह फिर बूढ़े व्यक्ति के कदमों में लोट गया।

उस दिन के बाद कालिया के जीवन का उद्देश्य ही बदल गया। उसने अपनी सारी दौलत गरीबों में बांट दी। बचे हुए पैसों से एक मठ एवं प्याऊ बनवाई और स्वयं अपने हाथों से मुसाफिरों को पानी पिलाने लगा।

राजस्थान के लोग आज भी कालिया को आदर सहित याद करते हैं और उसकी कहानी अपने बच्चों को सुनाते हैं। ●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. इतने अच्छे— कि मन नाच उठा!
(फूल/ढोल)

२. भई, मुझे तो इसी— से डर लगता है।
(जादू/जाड़े)

४. — में ही एक अनोखा द्वीप था।
(पास/पानी)

८. — को ऐसा शाप न दीजिए प्रभु!
(मुनि/मुझ)

९. तो यह तुम— शांतनु!
(हो/थे)

११. सपने में बूआ जी ने दिए— के सुंदर उपहार।
(चांदी/खादी)

१२. कभी खाकर देखो यह मीठा पकवान?

ऊपर से नीचे

३. और— पर टाफियों के बड़े-बड़े गुच्छे लटक रहे थे गोकुल!
(पेड़/झाड़)

५. बरसों बाद कवि ने ऐसी— सुनाई।
(धुन/तान)

६. पापा, उन्हीं टूटे-फूटे खिलौनों में पड़ी थी यह—।
(गाड़ी/गाय)

७. गुलदाउदी के— फूल थे कम से कम।
(दस/तीस)

१०. एक प्रसिद्ध भारतीय नृत्य।

नंदन ज्ञान-पहेली : ३०२

नाम ____________________

उम्र ______ **पता** ____________________

____



न. ज्ञा.प.३०२

थैली भर रुपए

—शांता ग्रोवर

एक थे सेठ सुखदयाल। नेक दिल इनसान थे वह। उनके तीन लड़के थे। दो की शादी हो चुकी थी। छोटा बेटा रामदयाल अभी कुंआरा था। वह बहुत सीधा-सादा और भोला था। सेठ जी को उसकी चिंता लगी रहती थी।

धन-दौलत देखकर सेठ जी के पास बेटे के लिए अनेक रिश्ते आते। वह प्रत्येक लड़की से एक प्रश्न पूछते—"तुम्हें कौन-सा मौसम प्रिय है?" प्रत्येक लड़की अपनी-अपनी पसंद के अनुसार उत्तर दे देती। कोई कहती कि उसे वसंत ऋतु बहुत प्रिय हैं। किसी ने कहा कि उसे शरद ऋतु अच्छी लगती है। सेठ जी सबका उत्तर सुनते और मुसकराकर किसी बहाने से रिश्ता लौटा देते।

एक बार सेठ जी अपने गांव गए। वह अपने एक मित्र के घर ठहरे। मित्र गरीब था लेकिन उसने और उसकी बेटी लाजो ने सेठ जी की खूब आवभगत की। मित्र की बेटी की सुंदरता और सुघड़पन को देखकर, सेठ जी ने सोचा—'यह लड़की मेरे रामदयाल के लिए बिलकुल ठीक जान पड़ती है। मुझे इसकी बुद्धिमत्ता की भी परीक्षा लेनी चाहिए।'

यह सोचकर, सेठ जी ने बातों-बातों में लाजो से पूछा—"बेटी, तुम्हें कौन-सा मौसम सबसे प्रिय है?" लाजो कुछ उत्तर देने जा रही थी फिर रुक गई। सोचने लगी—'सेठ जी ने यह बेतुका प्रश्न मुझसे क्यों पूछा? इसके पीछे अवश्य कोई कारण होगा।' कुछ क्षण सोचने के बाद उसने उत्तर दिया—"मुझे सभी मौसम एक समान प्रिय हैं।"

लाजो का उत्तर सुनकर सेठ जी मुसकराने लगे।

शुभ मुहूर्त में बेटे की शादी कर, सेठ जी लाजो को बहू बनाकर घर ले आए। मुंह दिखाई में उन्होंने उसे पांच सोने के सिक्के दिए। उसने इन्हें अपने पल्लू में बांध लिया। रामदयाल बोला—"लाजो, इन सिक्कों को तुम तिजोरी में रख दो। पल्लू से कहीं गुम हो जाएंगे।"

लाजो मुसकराकर बोली—"मैं छोटी बच्ची तो हूं नहीं, जो इतने कीमती सिक्के खो दूंगी।"

हंसी-खुशी में दिन बीतने लगे। एक बार रात को सभी खा-पीकर सोए। लगभग चार बजे लाजो की नींद टूटी। उसे लगा, उसका पलंग हिल रहा है। घबराकर उसने आंखें खोलीं। देखा, दरवाजे की सिटकनी भी हिल-हिलकर खुल गई है। उसने पति को जगाया। बोली—"जल्दी से बाहर भागो, भूकम्प आ रहा है।" अभी वह उठा ही था कि पूरा मकान जोर-जोर से हिलने लगा। पति-पत्नी भागकर एक कोने में खड़े हो गए। तभी छत टूटकर गिरने लगी।

वे पूरी तरह मलबे के नीचे आ गए। उन्होंने उठने की कोशिश की, लेकिन निकल नहीं पाए। पर हिम्मत नहीं हारी। वे काफी देर यूं ही पड़े रहे। कुछ देर बाद उन्हें कुछ आवाजें सुनाई पड़ने लगीं। लाजो ने हिम्मतकर किसी तरह एक हाथ मलबे से बाहर निकाला। उसके हाथ को किसी ने देख लिया। लोग वहां से मलबा हटाने लगे। दोनों पति-पत्नी सुरक्षित बाहर निकल आए।

दोनों ने लोगों के सहयोग से अपने अन्य परिवार वालों को बाहर निकाला। सभी सकुशल थे लेकिन सेठ जी को गहरी चोटें आई थीं। वह बेहोश थे। कुछ देर में वहां सरकार द्वारा भेजे चिकित्सक पहुंच गए।

डाक्टर ने जांच करने के बाद कहा—"एक दवा फौरन चाहिए। यह बहुत कीमती है। हमारे पास भी नहीं है।"

रामदयाल लाजो का मुंह देखने लगा। उसके पास तो फूटी कौड़ी नहीं थी। लाजो अपना कंगन उतारकर पति को देते हुए बोली—"आप यह कंगन बेचकर दवा ले आओ।"

रामदयाल कंगन लेकर एक सुनार के पास गया। बोला—"मुझे यह कंगन बेचना है। आप इसकी क्या कीमत देंगे?"

दुकानदार समझ गया कि यह एक सीधा-सादा व्यक्ति है। इसे पैसों की सख्त जरूरत है। वह कंगन को हाथ में लेकर मुंह बनाते हुए बोला—"यह तो खरा सोना नहीं है। इसके दो सौ रुपए दे सकता हूं।"

रामदयाल दुकानदार से दो सौ रुपए लेकर पत्नी के पास आया।

लाजो समझ गई कि उसके भोले पति को किसी ने ठग लिया है। उसने तुरंत अपना पल्लू खोला। एक सिक्का निकालकर पति को देते हुए बोली—"इसे बेचकर आप उन पैसों से दवा और कुछ खाने-पीने का सामान ले आइए।"

रामदयाल उसी सुनार के पास पहुंचा। सिक्का देकर बोला—"इसकी क्या कीमत देंगे?"

सुनार बोला—"इसके भी दो सौ रुपए ही दूंगा।"

रामदयाल उन पैसों से दवा लेकर भागा-भागा आया। दवा डाक्टर को देने के बाद उसने पत्नी को सारी बात कह सुनाई। लाजो समझ गई कि उसके पति के साथ सुनार ने दोबारा धोखा किया है। उसने पति से उस सुनार का पता पूछा। बोली—"उस सुनार ने आपको बुरी तरह ठगा है। आप पिता जी के पास ठहरें। मैं उससे अभी हिसाब ठीक करके आती हूं।"

लाजो उस सुनार की दुकान पर गई। बोली—"मुझे कुछ पुराने गहने खरीदने हैं।" अपना दूसरा कंगन दुकानदार को दिखाकर बोली—"क्या आपके पास ऐसा कोई कंगन है? मेरे पास सिर्फ एक ही है।"

दुकानदार ने झट-से कंगन निकाला। लाजो को दिखाते हुए बोला—"बहन जी, यह लीजिए। बिलकुल वैसा ही कंगन है।"

"इसका क्या दाम है?"—लाजो ने पूछा।

"पूरे तीन हजार का है।"—दुकानदार बोला।

"ठीक है। इसे मैं खरीदूंगी।"— लाजो यह कहते हुए सामने रखे सिक्के की तरफ देखने लगी।

दुकानदार लाजो की नजरें सिक्के पर टिकी देखकर बोला—"बहन जी, सिक्का भी ले लीजिए। एकदम खरा सोना है। सिर्फ दो हजार में आपको दे दूंगा।"

"नहीं, यह सिक्का खरीदना नहीं है। आप इसे दो हजार में बेचना चाहते हैं। अभी कुछ देर पहले मेरे पति को आपने इस सिक्के के सिर्फ दो सौ रुपए दिए थे।"—लाजो गुस्से में बोली।

"आप के पास क्या सबूत है कि यह सिक्का आपका है।"—दुकानदार बोला।

"देखिए, इस सिक्के पर मेरे ससुर का नाम लिखा है। और ऐसे ही चार सिक्के मेरे पास और भी हैं।"—कहते हुए लाजो ने पल्लू से खोल कर चार सिक्के दुकानदार के सामने रख दिए।

दुकानदार घबरा गया। हाथ जोड़ते हुए बोला—"बहन जी, मुझे माफ कर दीजिए। ये लीजिए इन सिक्कों के पूरे पैसे।"

"सिक्कों के पैसों के साथ-साथ कंगन के भी बाकी पैसे निकालो। कंगन को क्यों भूल रहे हो?"—लाजो बोली।

"जी, बहन जी।"—कहते हुए दुकानदार ने कंगन के भी शेष पैसे लाजो को लौटा दिए।

सभी पैसे लेकर लाजो लौट आई। पता चला ससुर जी को होश आ गया है और रामदयाल भी वहीं है। वह भागकर उनके पास गई। सेठ जी से बोली—"पिता जी, आप ठीक तो हैं।"

सेठ जी की आंखों में आंसू थे। बोले—"बेटी, जान तो बच गई। पर यह जान किस काम की! अब हमें पैसे-पैसे को तरसना पड़ेगा।"

लाजो बोली—"पिता जी, आप बिलकुल मत घबराइए। यह लीजिए रुपयों-भरी थैली। इससे आप दुबारा व्यापार शुरू कर सकते हैं।"

सेठ जी हैरानी से लाजो को देखते हुए बोले—"बेटी, ये पैसे तुम्हारे पास कहां से आए?"

"पिता जी, यह तो आपके ही दिए सिक्कों का कमाल है।"—यह कहकर लाजो ने सेठ जी को सारी कहानी सुना दी। सेठ जी का हाथ लाजो को आशीर्वाद देने के लिए उठ गया। ●

चीटू-नीटू



बागबानी के लिए अच्छा मौसम है, क्यों न हम भी कुछ पौधे...
हां... घर के बाहर...
पौधे तो लगा रहे हो मेरी बकरी मुंह मार गई तो फजीता मत करना
वहां न सही, इस आंगन में ही कुछ पौधे लगा लेते हैं, गाय-बकरी से भी बचे रहेंगे
देखो, पौधे लगा कर पक्षियों को न्योता मत दो, जो सुखाऊंगी, सब खा जाएंगे
घर के सभी पुराने डिब्बे... यहां तो किसी को कोई ऐतराज नहीं होगा
गुल्लक तोड़ कर पौधे खरीद लाओ, तब तक मैं मिट्टी लाती हूं
मां...! यहां रखे डिब्बे कहां गए?
कबाड़ी को बेच दिए, पढ़ना-लिखना कुछ नहीं, सुबह से पुराने डिब्बों से खेल रहे हो



शीर्षक बताइए

स्वागत वसंत, स्वागत वसंत : इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई सुंदर-सा छोटा शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ फरवरी '९४ तक **शीर्षक बताइए, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : अप्रैल '९४ अंक

चित्र : विजेन्द्र रावत

पुरस्कृत चित्र

अभिलाष शर्मा, आयु १४ वर्ष; द्वारा श्री बी. सी. शर्मा, ज्यौलौजी एंड माइनिंग (नागालैंड सरकार) डिमापुर-७९७११२

इनके चित्र भी पसंद आए : लल्लन पांडे, पटना; प्रीति सलूजा, नई दिल्ली; रामशेख पंडित, समस्तीपुर; विजय जलपाईगुड़ी (प. बं.)



बाल सभा


मोनू सिंघानिया


सपना


आलोक अरुण


नियति गोदियाल


वीथिका

पत्र मिला

□ हमारे वर्ग शिक्षक ने इस पत्रिका से प्रभावित होकर इसे वर्ग में चला रखा है । उनका कहना है नंदन तुम्हारे साहित्य की नींव है । इस पर तुम हिंदी साहित्य की दीवार खड़ी कर सकोगे ।

— मुकेशकुमार, सैदपुर

□ दिसम्बर '९३ का अंक बहुत ही रोचक लगा । 'छमरी के बोल' तथा 'रात में राजा' कहानियां बहुत ही अच्छी लगीं । कुल मिलाकर यह अंक ज्ञान तथा मनोरंजन से भरपूर था ।

— संदीप बंसल, जालंधर

□ मैं इस पत्रिका को पढ़ने का बहुत शौकीन हूं । चुटकुले तथा चीटू-नीटू बहुत अच्छे लगते हैं । दिसम्बर अंक में 'कपास का फूल' तथा 'चांदी का तालाब' मजेदार कहानियां थीं ।

— सतपालकुमार, उचाना (हरि.)

□ क्या 'नंदन' पत्रिका हम देहाती बच्चों के भाग्य में नहीं । शहर जाता हूं, तो किताब फरोश बोलता है कि 'नंदन' बिक गया । उर्दू भाषी होकर भी मुझे यह रिसाला बहुत पसंद है । आनंद-मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्धक कहानियों से भरा रहता है । बाल समाचार और ज्ञान-पहेली के क्या कहने !

— मो. एजाज, जयनगर (बि.)

□ यह अंक देखकर मन झूम उठा । चित्र-कथा 'सागर का बेटा' और कहानियां जैसे 'पानी की गवाही', 'छमरी के बोल', 'परलोक की धुन' तथा 'छोटी बहन' मजेदार लगीं । एलबम में बद्रीनाथ जी का सुंदर चित्र तथा 'नंदन बाल समाचार' अच्छा लगा ।

— उपेंद्रकुमार, बलिया

□ मैं 'नंदन' पत्रिका का पचीस वर्ष पुराना पाठक हूं । साहित्य में अनेकों ज्वालामुखी फूटे हैं, परंतु इस पत्रिका से मानव को कल्याणकारी ज्ञान का अपार अमृत रूपी कलश ही मिलता है ।

— महेशचंद्र शर्मा, सैक्शन फारेस्ट आफीसर, एटा

□ दिसम्बर अंक पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई । 'नंदन' में नई-नई प्रतियोगिताएं देकर आपने वाकई पत्रिका में चार चांद लगा दिए हैं । हर अंक नई ताजगी लिए आए यही कामना है ।

— प्रदीपकुमार, मिर्जापुर

□ 'नंदन' घर में आते ही पहले मेरे दादा जी पढ़ते हैं फिर मुझे देते हैं । यह पत्रिका ज्ञान का पिटारा है । अब हमें कामिक्स खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ती । चित्र-कथाएं, चीटू-नीटू, समाचार, मनोरंजन होते हैं । दिसम्बर अंक में 'बोला विधाता', 'फैसला', 'खोई हुई बेटी' अच्छी कहानियां थीं ।

— सोनल श्रीवास्तव, मधेपुरा

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : शिवकुमार, बीकानेर; अशोककुमार मिश्र, गिरिडीह; सुधीरकुमार जैसवाल, बलिया ।

आगामी अंक

आया फागुन, साथ लिए नंदन की रुन-झुन

- गीत सेठी (बिलियर्ड) और विश्वनाथन आनंद (शतरंज) को बिड़ला खेल प्रतिष्ठान पुरस्कार मिला । एलबम में इन विश्व प्रसिद्ध खिलाड़ियों की रंगीन छवि ।
- **अठारह वर्ष की आयु में वह अकेली रह गई । सामने अंग्रेजी सेना के चतुर-चालाक जनरल... और वफादारी का दम भरने वाले विश्वासघाती... 'विश्व की महान कृतियां' में वृंदावनलाल वर्मा की हिंदी कृति 'झांसी की रानी' का संक्षेप ।**
- पुष्पक विमान पर बैठ श्रीराम लंका से अयोध्या आए । मगर पुष्पक तो ब्रह्मा का था ? वह लंका में कैसे पहुंचा ? चार पृष्ठ की रोचक बहुरंगी चित्र-कथा—पुष्पक कहां गया ?
- **तेनालीराम की सूझ-बूझ का कमाल । मांगे पांच लाख, दिया एक पैसा नहीं ।**

साथ में और भी बहुत कुछ—नया-नवेला-अनूठा

परेशान परी

दो बौने घने जंगल में रहते थे। एक का नाम था मोलू, दूसरे का नाम गोलू। सारा दिन उछल-कूद मचाते रहते। एक दिन की बात, दोनों एक दूसरे का हाथ थामे नदी की ओर बढ़े जा रहे थे।

एकाएक गोलू को लगा, जैसे कहीं से कुछ फुसफुसाने की आवाज आ रही है। उसने चौंककर मोलू की तरफ देखा। वह बोला—''हां, गोलू, मैंने भी सुनी है एक आवाज। हमें पता लगाना चाहिए।''

बौनों को कुछ डर लगा। गोलू ने पूछा—''कौन है, पेड़ के पास? ये आवाजें कैसी हैं?''

जवाब में वही फुसफुसाहट भरी आवाज सुनाई दी—''मैं हूं हवा। मुझे इस पेड़ के कांटों ने उलझा लिया है। इन कांटों से मुक्ति दिलाओ। मुझे बहुत दूर जाना है।''

दोनों ने मिलकर पेड़ में उगे कांटे तोड़ दिए। एकाएक तेज हवा चली, फिर आवाज सुनाई दी—''धन्यवाद गोलू, मोलू। तुमने मुझे कांटों की कैद से मुक्ति दिलाई, तुम दोनों बहुत भले हो। मैं तुम्हें कुछ देना चाहती हूं।'' और एक हरी-भरी डाल बौनों के सामने आ गिरी। हवा ने उनसे कहा—''जब कभी कोई संकट आए, तो इस डाल से एक कांटा तोड़कर फेंक देना। संकट दूर हो जाएगा।''

गोलू-मोलू कांटों से भरी टहनी लेकर अपनी गुफा में चले आए। गोलू ने मोलू से कहा—''भला हम क्या करेंगे इस टहनी का?'' ''यही बात मेरी समझ में नहीं आ रही है।''—मोलू ने उसकी हां में हां मिलाई।

शाम हुई, तो दोनों गुफा से बाहर निकले। वे अपनी गुफा में रोशनी करने के लिए जुगनू पकड़ने जा रहे थे। एकाएक गोलू ने एक स्त्री को पेड़ के नीचे खड़े देखा। वह उदास और परेशान लग रही थी।

''क्या बात है?''—गोलू ने स्त्री से पूछा।

''मैं एक परी हूं। आज की रात मुझे एक सभा में नृत्य करना है। धरती पर आई, तो थकान के कारण मुझे नींद आ गई। न जाने किसने मेरे जूड़े में लगे फूल चुरा लिए। मेरे केश उलझ गए हैं। भला इस हालत में मैं कैसे नृत्य करूंगी। सब मेरा उपहास करेंगे।''

गोलू ने कहा—''तुम तो परी हो, परियां तो जादू जानती हैं। वे कुछ भी कर सकती हैं। फिर भला क्यों परेशान हो?''

परी ने उदास नजरों से उसकी तरफ देखा। बोली—''तुम ठीक कहते हो, लेकिन हमारा जादू हमारे अपने काम नहीं आता। वह तो दूसरों की भलाई के लिए है। अगर परी रानी ने मुझे इस हालत में देख लिया, तो कड़ा दंड देंगी।''

तभी मोलू धीरे से बोल उठा—''ऐ गोलू, याद है हवा ने क्या कहा था। शायद उस टहनी से काम बन जाए।''

''अरे हां, खूब याद दिलाया।''—गोलू झट बोला और उसने टहनी से एक काटा तोड़ दिया। बोला—''हवा, अगर तुम मेरी आवाज सुन रही हो, तो यहां आओ। परी के उलझे केश संवार दो। उसके जूड़े के खोए फूल ढूंढ़कर लाओ।''

अगले ही पल वहां तेज हवा चलने लगी। आवाज आई—''गोलू-मोलू, तुम अच्छे बौने हो। एक परेशान परी की मदद मैं अवश्य करूंगी।'' देखते-देखते परी के बालों की उलझन दूर हो गई। फिर कई सुंदर सुगंधित फूल उड़ते हुए आए और परी के जूड़े में लग गए।

परी ने हंसकर कहा—''धन्यवाद हवा। गोलू-मोलू मैं फिर आऊंगी। ... और वह उड़कर गायब हो गई।

गोलू-मोलू चुप खड़े परी को आकाश में उड़ते देख रहे थे। सोच रहे थे—'क्या परी फिर आएगी?'

आग वाला बौना

एक था ठूंठ । उसमें दो गिलहरियां रहती थीं । दोनों बहुत फुर्तीली थीं । हर समय दौड़-भाग करती रहती थीं । एक का नाम बड़ी, दूसरी का छोटी । उन्होंने अपना घर खूब सजा-संवार कर रखा था । जंगल में रहने वाले सब पशु-पक्षी गिलहरियों की प्रशंसा करते रहते थे ।

एक बार की बात, एक जंगली बिलाव घूमता-फिरता वहां आया । उसने गिलहरी परिवार की प्रशंसा सुनी, तो चिढ़ गया । तुरंत जाकर उनके घर में घुस गया । वहां रखा सब सामान उठाकर फेंक दिया ।

गिलहरियों को खबर मिली,तो भागी हुई आईं । उन्हें देख, बिलाव ने कहा—''यह घर अब मेरा है । तुम दोनों मेरी दासियां हो । अगर मेरा हुक्म मानोगी तो यहां रहने दूंगा, नहीं तो मार डालूंगा ।''

दोनों एक पेड़ पर जा बैठीं । तभी उन्होंने एक बौने को देखा । वह उसी पेड़ के नीचे आकर खड़ा हो गया और बोला—''अब मैं क्या करूं !''

बड़ी गिलहरी झट कूदकर नीचे आई । उसने कहा—''बौने भैया, राम-राम ! क्या बात है ? बहुत परेशान नजर आ रहे हो ।''

छोटी गिलहरी ऊपर से बोली—''बहना, हम भी तो परेशान हैं ।''

बौना कहने लगा—''मैं आग का बौना हूं । जंगल में एक चट्टान है । मैं जब उससे बदन रगड़ता हूं तो आग पैदा हो जाती है । लेकिन आज मैंने देखा, वह चट्टान अपनी जगह पर नहीं है । शायद नदी में गिर गई । अब मैं आग कैसे जलाऊंगा ? अब मुझे आग वाला बौना कैसे कहेंगे लोग !''

''तुम यहीं रुको । हम दोनों चट्टान की तलाश में जाती हैं ।शायद कुछ पता चल जाए ।''—यह कहकर दोनों गिलहरियां चल दीं । छोटी ने गुस्से से कहा—''अपने घर का तो ठिकाना नहीं, चली है दूसरों की मदद करने ।''

बड़ी हंसकर रह गई । वह चट्टान को खोज रही थी । तभी उसने एक जगह एक काली चट्टान देखी । उसके आसपास की झाड़ियां जली हुई थीं । छोटी ने कहा—''दीदी, कहीं यही तो वह चट्टान नहीं है । देखो न, आसपास जलने के निशान हैं ।''

बड़ी ने कहा—''तू ने ठीक कहा, मैं यहीं रुकती हूं । तू बौने को बुला ला ।''

छोटी गिलहरी उल्टे पैरों दौड़ गई और बात की बात में बौने को साथ ले आई । बड़ी ने उससे कहा—''बौने भैया, शायद यह चट्टान भी वैसी ही है । एक बार आजमा कर देख लो ।''

बौने ने चट्टान से बदन रगड़ा,तो चिंगारियां छिटकने लगीं । वह खुशी से चिल्ला पड़ा—''मिल गई । मिल गई ।''

अब गिलहरियों ने उससे विदा मांगी,तो बौना छोटी से बोला—''तुम कुछ कह रही थीं न, क्या बात है, क्या समस्या है ?''

छोटी ने अपनी समस्या बताई कि किस तरह एक बिलाव उन्हें डरा-धमका रहा है । सुनकर बौना बोला—''उसकी यह मजाल, मैं चलता हूं तुम्हारे साथ ।''

गिलहरियों को आता देख बिलाव चिल्लाया—''तुम मुझसे बिना पूछे कहां चली गई थीं ? अब मैं तुम्हारा घर कभी खाली नहीं करूंगा ।''

''तुम हमारे भाई से बात करो ।''—बड़ी ने बौने की तरफ इशारा किया ।

बिलाव गुस्से से बौने की तरफ झपटा,तो बौने ने उसे कसकर पकड़ लिया । बौने का स्पर्श होते ही बिलाव के शरीर से चिंगारियां निकलने लगीं । और वह जलकर मर गया ।

गिलहरियों को उनका घर वापस मिल गया ।

रूपांतर : नवीन पंत

बड़ी चीज

—ज्ञानदेव रा. चौधरी

रामपुर का राजा था सुधन्वा। वह बहुत दयालु और न्यायप्रिय था। उसकी दयालुता और न्यायप्रियता से ब्रह्माजी प्रसन्न हो गए। वह राजा के सामने प्रकट होकर बोले—"राजन, तुम्हारी न्यायप्रियता और दयालुता से मैं प्रसन्न हूं। तुम्हें यह तलवार दे रहा हूं। इसे पाकर तुम जिसे चाहो युद्ध में हरा सकते हो।"

"हे भगवन, इस कृपा के लिए आपका आभारी हूं। लेकिन इस तलवार का मैं क्या करूंगा? विश्वविजेता बनने की चाह मुझे नहीं है। मुझे युद्ध से सदैव घृणा रही है।"

"ठीक है, तब यह नीलमणि ले लो। इसके प्रभाव से तुम्हें अपार धन मिलेगा। सुख से जीवन बिताना। जितना चाहो, दान करना।"

"आप दयालु हैं। मुझ पर आपकी बड़ी कृपा है, पर संसार के अपार धन का भी मैं क्या करूंगा? प्रजा के कर का जो भाग मिलता है, वही काफी है।"

राजा की बात सुनकर ब्रह्माजी को आश्चर्य हुआ। वह कुछ सोचने लगे, फिर बोले—"राजन! लगता है, संसार की चीजों में तुम्हारी रुचि नहीं है तो फिर मेरे साथ सीधे स्वर्ग चलो।"

"स्वर्ग के सुख का भी मुझे क्या करना? मुझे वह भी नहीं चाहिए। मेरी प्यारी धरती स्वर्ग से क्या कम है?"— राजा ने विनम्रता से उत्तर दिया।

ब्रह्माजी चुप थे। उन्हे आज पहली बार ऐसा त्यागी मनुष्य मिला था। वह बोले—"अच्छा, यह लो। फूलों के कुछ बीज दे रहा हूं। जहां भी इन्हें बिखेर दोगे, वहीं ऐसी खुशबू वाले फूल पैदा होंगे कि उन्हें सूंघते ही शत्रु और मित्र गले लग जाएंगे।"

इस बार राजा सुधन्वा के होठों पर मुसकराहट उभर आई। हाथ बढ़ाकर उसने फूलों के बीज ले लिए। गद्‌गद् कंठ से कहा—"प्रभो, सचमुच मुझे इन्हीं की जरूरत थी। प्रजा सुखी हो, सब लोग मिलजुलकर रहें, इससे बड़ी चीज और क्या हो सकती है!"

पुरस्कृत कथाएं

नया मित्र

प्रसाद और राधा भाई-बहन थे। दोनों अनाथ और बहुत गरीब थे। पेट भरने के लिए गाना गाकर पैसे कमाते थे। एक बार प्रसाद बीमार पड़ गया। वह गाना नहीं गा सकता था। अतः राधा उस दिन अकेली ही चली गई।

इधर चटाई पर लेटे प्रसाद ने सोचा कि उसकी बहन बेचारी अकेली भटक रही होगी। वह उसे खोजने निकल पड़ा।

वह अभी कुछ दूर ही पहुंचा था कि उसने देखा, बहुत सारे छोटे बच्चे एक बंदर को पत्थर मार-मारकर हंस रहे हैं। उसे उन बच्चों पर गुस्सा और बंदर पर दया आई।

उसने डांटकर बच्चों से कहा—"तुम लोगों को शर्म नहीं आती। एक निहत्थे, मूक प्राणी पर जुल्म ढाते। चलो भागो यहां से।"

उसकी फटकार सुनकर बच्चे वहां से भाग गए।

प्रसाद खुश होकर आगे बढ़ गया। तभी उसने महसूस किया कि उसके कंधे पर कोई बैठा है। उसने मुड़कर देखा। अरे! यह तो वही बंदर था।

प्रसाद ने उसे प्यार से अपनी गोद में उठा लिया। अचानक बंदर उसकी गोद से उछलकर नीचे आ गया। उसके कपड़े पकड़कर, खींचने लगा। पहले तो प्रसाद कुछ समझ न सका। फिर वह उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

बंदर उसे सड़क के किनारे ले गया और कूद-कूदकर नाचने लगा। उसे नाचते देखकर धीरे-धीरे लोग जमा होने लगे।

देखते ही देखते वहां पैसों का ढेर लग गया। प्रसाद बहुत खुश हुआ। उसने पैसे समेटे। रास्ते से खाने का सामान खरीदा। अपने नए मित्र बंदर के साथ घर वापस आ गया।

उसने एक थाली में खाना परोसा और राधा का इंतजार करने लगा। राधा बहुत देर तक नहीं आई तो

उससे रहा नहीं गया। उसने एक कौर तोड़ा ही था कि तभी राधा आ गई। उसे आज कुछ नहीं मिला था। प्रसाद को खाना खाते देखकर, वह चकित रह गई।

प्रसाद ने उसे पूरी बात बताई, तो वह बहुत खुश हुई। दोनों ने मिलकर खाना खाया। बंदर को भी खिलाया।

प्रसाद, राधा और बंदर तीनों खुशी-खुशी रहने लगे। बंदर नाच दिखाता। वे दोनों गाना गाते। जो कुछ आमदनी होती, उससे तीनों का गुजारा अच्छी तरह से चल जाता।

—स्वप्निल मिड्ढा, मद्रास



खिलौना

किसी गांव में दो भाई-बहन रहते थे। माता-पिता बचपन में गुजर गए थे। इसलिए दोनों का गुजारा बड़ी मुश्किल से होता था। फिर भी दोनों किसी तरह अपना जीवन गुजार रहे थे।

भाई, बिट्टू बड़ा था। समझदार भी था, किंतु थोड़ा जिद्दी भी था। किसी बात पर अड़ जाता, तो बस अड़ ही जाता, फिर बड़ी मुश्किल से ही मानता था। छोटी बहन गुड़िया छोटी होने पर भी काफी समझदार थी। वह भी भाई के छोटे-मोटे कामों में हाथ बंटाकर, घर का गुजारा चलाने में उसकी सहायता करती थी।

बिट्टू के पास एक बहुत सुंदर मिट्टी का बंदर था। उसे वह बहुत चाहता था। अपने उस खिलौने को वह किसी को छूने तक नहीं देता था। जब उसका जी चाहता, स्वयं ही खेलता। फिर सहेजकर रख देता। उनके पड़ोस में एक लड़का रहता था। उसे भी वह बंदर बहुत अच्छा लगता था। वह भी उस बंदर से खेलने के लिए मचलता। एक दिन जब बिट्टू बंदर से खेल रहा था, तो वह उसके पास गया। उससे बंदर मांगा। बिट्टू खिलौना नहीं देना चाहता था। उसने मना कर दिया। इसी बात पर दोनों की छीना-झपटी होने लगी। बंदर जमीन पर गिरा और टूट गया।

बिट्टू को अपना टूटा खिलौना देखकर, बहुत दु:ख हुआ। वह खाना-पीना छोड़कर गुमसुम रहने लगा। बहन से उसकी उदासी छिपी न रही।

एक दिन वह एक बंदर का बच्चा ले आई। वह घायल था। उसके पांवों में चोट लगी थी। वह चल फिर नहीं सकता था। गुड़िया, अपने भाई के खिलौने जैसा खिलौना तो नहीं ला सकती थी। अतः वह उस बंदर को लेकर अपने भाई के पास गई। साथ में खाना भी ले गई। लेकिन बिट्टू को तो अपना खिलौना ही चाहिए था। उसने आंख उठाकर न तो इस जीते-जागते बंदर की तरफ देखा और न ही खाने की तरफ। गुड़िया जब खुशामद करके थक गई, तो बंदर और खाना वहीं छोड़कर, चली गई।

वह अपने भाई से बहुत प्यार करती थी। उसका भूख से उतरा और उदास चेहरा उससे देखा नहीं जा रहा था। आखिर वह बिट्टू को मनाने के लिए दोबारा छत पर पहुंची। नजारा देख, चकित रह गई। बिट्टू और बंदर पास-पास बैठे थे। बिट्टू खुद भी खाना खा रहा था। बंदर को भी खिलाता जा रहा था।

अपने भाई को खुश देखकर, गुड़िया को बहुत खुशी हुई। बिट्टू ने बंदर से दोस्ती कर ली थी। अब बंदर भी घर का सदस्य बन गया था।

—हेमलता मोदी, कटक

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं: अर्पितकुमार, भीलवाड़ा; मारुति अग्रवाल, कानपुर; रेणु कुमारी, रोसड़ा (बिहार)।

शीर्षक बताइए
परिणाम



ढेर सारे शीर्षक मिले। नंदन दिसम्बर '९३ अंक में छपे रंगीन चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए—

छेड़ूं ऐसी मधुर तान, जीत सकूं पहला इनाम।

— संजयकुमार शर्मा, हरिवल्लभ शर्मा, श्रीरामपुर अयोध्या, वैनी, समस्तीपुर (बि.)।

वीणा वादिनी दे वरदान, बन सकूं मैं भी महान।

— प्रांतुश साहा, नोनीगोपाल साहा, पो. साहिरघाट, जि. मरीगांव (असम)।

बिना पलक झपकाए, बहना फोटो खिंचवाए।

— अरविंद कुमार, पी. पी. इंटरप्राइजेज, महालक्ष्मी मार्केट, डी. एस. लेन, चिकपेट, बंगलौर।

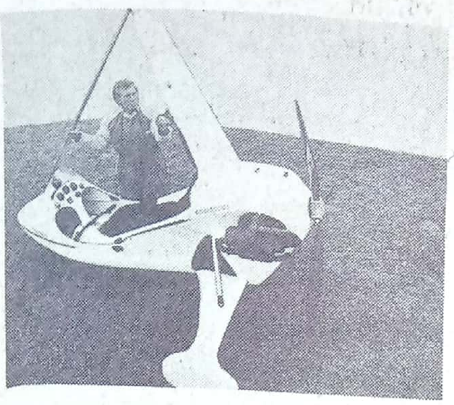
सिर पर मुकुट, गले में माला,
वीणा पर है, सुंदर राग निकाला।

— गरिमा गुप्ता, वी. के. गुप्ता, प्राइमरी हैल्थ सेंटर, लोनी, गाजियाबाद।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : अनु अग्रवाल, मयूरभंज (उड़ीसा); रणजीत सिंह, विवेकविहार, दिल्ली; रविकांत गुप्ता, भिवंडी (महा.); शैलेंद्रसिंह, फतेहपुर (उ. प्र.)।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं ओर के जंगले की चौखट अधिक मोटी है।
२. उसके नीचे टंगे बोर्ड का फ्रेम बना है।
३. स्टूल पर बैठे व्यक्ति के हाथ में लगी पुस्तक कोरी है।
४. हेंगर पर टंगे टोप में काला फीता नहीं है।
५. शीशे से सिर के पीछे के बाल देखते व्यक्ति के हाथ में लगा कंघा छोटा है।
६. उसका जूता काला है।
७. कुर्सी पर बैठे व्यक्ति के कोट की बाईं आस्तीन आगे निकली है।
८. सिंक में छेद बना है।
९. उससे निकले शावर में अधिक छेद हैं।
१०. समीप की मेज पर रखी कैंची बंद है।



छुटका-सा हवाई जहाज

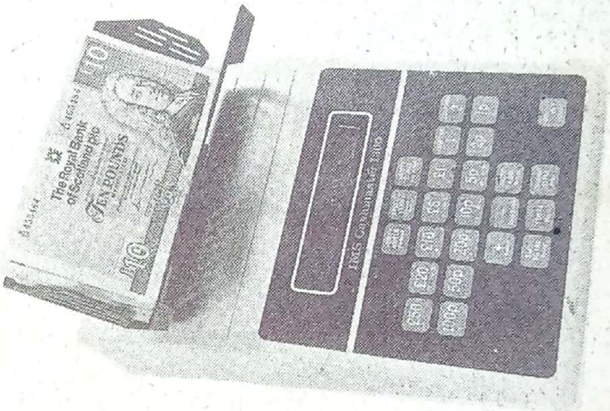
तिपहिया साइकिल और पैडल से चलने वाली छोटी-सी कार की तरह यदि छोटा-सा हवाई जहाज भी हो तो ! फुर्र से उड़े और स्कूल की छत पर उतर गए । जब मन हुआ,उसे खेल के मैदान में उतार दिया । यह हवाई जहाज दो सीटों वाला हो, तो क्या कहने ! जिस दोस्त को चाहा,बगल में बिठाया और उड़ चले ।

ब्रिटेन की एक कम्पनी ने हाल ही में ऐसा विमान बनाया है । तीन पहियों वाले इस नन्हे विमान में दो सवारियां बैठ सकती हैं । इसमें एक छोटा-सा इंजन लगा है। यह इंजन एक पंख को घुमाता है । उड़ान भरने के लिए इसे छोटा-सा मैदान चाहिए । यह नन्हा विमान एक घंटे में १२८ किलोमीटर की रफ़्तार से उड़ सकता है । 'पेगासस क्वासार माइक्रोलाइट' नाम के इस विमान को इस साल का ब्रिटिश डिजाइन पुरस्कार मिला है ।

प्लास्टिक के मकान

रेत के घरौंदों का जमाना गया । अब तो बच्चे प्लास्टिक के घर बनाते हैं । बाजार में तिखूंटे और चौकोर टुकड़े (ब्लाक) मिलते हैं । प्लास्टिक के उन रंगीन टुकड़ों को करीने से जमाकर मनचाहा घर बनाया जा सकता है ।

प्लास्टिक के घर बनाने का यह खेल अब बड़ों को भी भा रहा है । ब्रिटेन की एक कम्पनी ने हाल ही में प्लास्टिक के ऐसे मजबूत तख्ते बनाए हैं,जिन्हें जोड़कर मकान खड़ा किया जा सकता है । खिड़की, दरवाजे और सीढ़ियां भी प्लास्टिक की बनती हैं । कम्पनी ने हाल ही में एक दफ़्तर के लिए प्लास्टिक की नौमंजिला इमारत खड़ी की है । इन तख्तों से पुल भी बनाए जा सकते हैं । प्लास्टिक के मकान भूकम्प के झटकों से भी नहीं गिरते । अगर गिर भी जाएं तो कम वजन के कारण जान-माल का खतरा नहीं रहता । मजबूती देने के लिए प्लास्टिक में कांच के रेशे (फाइबर ग्लास) मिलाए गए हैं ।



नोट गिनने की तराजू

सिक्कों और नोटों की एक खासियत होती है । हर एक का आकार और वजन बराबर होता है । इसका भला क्या फायदा हो सकता है ? अगर आपके पास चवन्नियों का ढेर हो,तो गिनने में काफी समय लगेगा । यही हाल नोटों का है । बड़े दूकानदार और बैंक वाले कब तक उन्हें गिनें । अगर अच्छी तराजू हो, तो तौलकर उनकी गिनती की जा सकती है ।

अब ब्रिटेन की एक कम्पनी ने एक बढ़िया तराजू बनाई है । इस पर सिक्के और नोट तोले जा सकते हैं । कंप्यूटर से चलने वाली इस तराजू को हर नए और पुराने नोट का वजन मालूम है । सिक्कों के वजन की भी जानकारी है । इसलिए इस पर मुट्ठी भर नोट या सिक्के रखते ही उसे वजन का पता चल जाता है । वह पलक झपकते ही गुणा - भागकर नोटों की संख्या बता देती है । यह आंकड़ा एक नन्हे से परदे पर पढ़ा जा सकता है । मशीन यों तो बिजली से चलती है लेकिन इसमें बैटरी भी लगी है ।

—बृजमोहन गुप्त

पत्र-मित्र

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. कुलदीपकुमार अग्रवाल, १६ वर्ष, डी/३०३ विकास विद्यालय, रांची; २. पंकजकुमार नामदेव, १२, नामदेव मेडिकल स्टोर, पो. कुलपहाड़, हमीरपुर (उ. प्र.); ३. प्रदीपकुमार गुप्ता, १३, म. नं.४ कलावास भवन, निकट—लंता सिनेमा, झोटवाड़ा, जयपुर; ४. मुकेशकुमार सूर्यवंशी, १६, रामजी लाल, टाउन एरिया दफ़्तर, किला रोड, अवागढ़, एटा; ५. राहुल शर्मा, १३, २०९/१-बी, गली नं.५, पद्मनगर, दिल्ली; ६. नवीन एक्का, १६, जे. तिरके, विष्णु कालोनी, हास्पिटल रोड, सुंदरगढ़ (उड़ीसा); ७. मिंटूकुमार राय, १३, विनय राय, ग्रा. खनेट, पो. पवार, भोजपुर (बि.); ८. अरविंद चौरसिया, १५, जयप्रभा नगर, सहारनपुर; ९. नीरज गुप्ता, १५, कृष्णकुमार गुप्ता, ग्रा.+पो. भगवंतनगर, उन्नाव; १०. चिन्मयकुमार, १२, बसंतकुमार, बी/II/२९५, कोयलानगर, धनबाद; ११. नवीनकुमार, १२, १४-यू. एफ. तानसेन मार्ग, मंडी हाउस, नई दिल्ली; १२. पंकजकुमार भारती, १५, गैस सर्विस मेन रोड, जहानाबाद; १३. विपिनकुमार चौहान, १२, शिवनाथसिंह, सहा. अध्यापक, जनता इंटर कालेज, पतेई, खालसा, मुरादाबाद; १४. दिव्यासिंह, १६, योगेशकुमार, ६ सिविल जज, मेरठ; १५. बी. मीनाक्षी, ९, के. जी. यादवेंदु, कोकर, रांची; १६. निखिल माहेश्वरी, ११, सुशीलकुमार, संतपुरा, गली नं. ३, मोदीनगर, गाजियाबाद; १७. ज़ितेंद्रकुमार वर्मा, १५, शारदाप्रसाद वर्मा, गोला बाजार, कसयां, देवरिया; १८. विमलकुमार तिवारी, १७२ कल्पनानगर, सिविल लाइंस, इटावा; १९. गीता मिश्रा, १०, पंकज भवन, गणेशगंज, पूरनपुर पीलीभीत; २०. राजीव शर्मा, १५, मुन्नालाल-जगदीश शर्मा, ओल्ड आइसक्रीम फैक्ट्री, हाथरस; २१. विकासकुमार गुप्ता, १०, रामधनी प्रसाद, प्रकाश मेडिकल, बनमनखी (बि.); २२. अफसर हुसैन, १६, ९१/१ राजानगर कालोनी, मऊ रोड, पीलखाना, टीकमगढ़; २३. रुचिरा पांडेय, ९ वर्ष, वासुदेवप्रसाद पांडेय, ग्रा. धोबई, पो. आ. तारापुर, मुंगेर; २४. शमीम अहमद अंसारी, १६, आर ७/डी-५ राजनगर, गाजियाबाद; २६. ज्योत्सना गुप्ता, १२, रामनारायण गुप्ता, बहादुर एंड कम्पनी, पुखरायां, कानपुर; २७. प्रमोद यादव, १७, ४/१३८, राजनगर गाजियाबाद; २८. अमित सिन्हा, १३, सैक्टर-३/ई म. नं. ५५१, बोकारो स्टील सिटी; २९. मनोजकुमार, १६, डा. एन. पी. दुबे, २/५९ न्यू कालोनी, छतरपुर (म. प्र.); ३०. कु. श्वेता, ११, सिकठी भवन, सरस्वती पुस्तकालय रोड, बक्सर; ३१. सोमदत्त सोनी, १३, कन्हैया सोनी, संजय वार्ड, भाटापारा, रायपुर; ३२. मनीषकुमार शुक्ल, १२, ८१२ गोविंद बाग, बलरामपुर, गोंडा; ३३. सुधीर माहेश्वरी, १४, डा. आर. के. माहेश्वरी, अग्रवालों का मुहल्ला, बाड़मेर (राज.); ३४. मनीष पांडेय, १६, ४/२५३ नाखरे गली, गोपालगंज, सागर; ३५. सुधांशुकुमार सिन्हा, १२, रामराय, मुहल्ला करमन टोला, पो. आरा, भोजपुर (बि.)।

खेल, संगीत और चित्रकला में रुचि :

१. सुरभि सुमन, १३ वर्ष, एल/५१ श्रीकृष्णानगर, निकट देवी स्थान, पटना; २. सैयद अतहर अहमद, १०, पनाह विला अलीनगर, रायबरेली; ३. राजकुमार, १४, रामनारायण साह, आर. एम. एस. सासाराम, रोहतास; ४. रुखसाना, १२, खलील पान कार्नर, कैला भट्टा, गाजियाबाद; ५. विजय गोयल, १६, २२४/९, गन्नौर, कश्मीरी मार्केट के पीछे, सोनीपत; ६. शैली उपाध्याय, ११, रोड-२१, प्लाट-११६, एस. के. नगर, पटना

नंदन ज्ञान-पहेली : ३००

परिणाम



पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। दो सर्वशुद्ध हल आ गए। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

सर्वशुद्ध दो : प्रत्येक को दो सौ पचास रुपए

१. दिवाकर शुक्ला, लखनऊ; २. साजिद अख्तर, चांदपुर (बिजनौर)।

एक गलती : दस : प्रत्येक को पचास रुपए

१. गोविंद मोदी, कटक; २. रोहितकुमार कटारिया, जावरा; ३. योगेंद्रसिंह परमार, सिजारा (झांसी); ४. राहुल सोनी, उज्जैन; ५. रूपा राय, दिल्ली; ६. ऋतुकुमारी, मधुबनी; ७. रवींद्रकुमार, गाजियाबाद; ८. पीयूष श्रीवास्तव, इटावा; ९. अमित आनंद, मधुबनी; १०. कृष्णकुमार ताम्रकार, बरही (म. प्र.)।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन



मेरा अमूल चॉकलेट चिड़ियाघर
Amul MILK CHOCOLATE
Amul FRUIT & NUT MILK CHOCOLATE
Amul CRISP MILK CHOCOLATE
Amul ILK CHOCOLATE ORANGE FLAVOURED
Amul MILK CHOCOLATE
Amul MILK CHOCOLATE ORANGE FLAVOURED
Amul MILK CHOCOLATE
Amul CRUNCH MILK CHOCOLATE
Amul FRUIT & NUT MILK CHOCOLATE
Amul CRISP MILK CHOCOLATE
Badambar
अमूल चॉकलेट
प्यार की मीठी भेंट
वितरक–
गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फ़ेडरेशन लिमिटेड
आणंद ३८८ ००१
RADEUS/GCMMF/AMC/737/9-93-HIN

रजि. नं. डी.एल.-२७००५/९३ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४

